FALCON

कस्तूरी

शिक्षक दिग्दर्शिका

1–8

हिंदी -1

खंड –1

1. अमात्रिक शब्द

1. चढ़, बढ़, पढ़; भर, डर, कर
2. फल, बस, नल
3. (क) मत (ख) भजन (ग) चल (घ) टहल
4. अचकन ✓ शरबत ✓ कटहल ✓
5. चमक पकड़ महल भगत
   पलक मटक लहर
6. (क) अजगर (ख) हलचल (ग) शरबत
   (घ) नटखट
7. महल, कमल, मटर, नयन

2. 'आ' (ा) की मात्रा

1. छाता, ताला, माला, गाजर, कान, महल
2. काल, काला; चार, चारा; मार, मारा; हार, हारा;
   जाल, जाला
3. समाचार, पाठशाला, आलस, पाताल
4. माला ताला महल कान
   गाजर

3. 'इ' (ि) और 'ई' (ी) की मात्रा

1. चिड़िया, तकिया, खीरा, पपीता, बकरी, नारियल
2. मिल, मील; दिन, दीन; बिन, बीन; दिया, दीया; किला, कीला
3. स्वयं कीजिए।
4. दिवाली, खिड़की, हिरनी

4. 'उ' (ु) और 'ऊ' (ू) की मात्रा

1. बुलबुल, पुल, तरबूज, मयूर, कबूतर, कछुआ
2. धुन, घूरना, भूख, आलू, धूल, पुजारी, पूड़ी, गुलाल, चूरा, काजू, गुड़,
   जूता
3. स्वयं कीजिए।
4. (चुहिया) कुरता कुतर गई। (पुल) पर चढ़। (खूब) मुस्कुराओ।
   (फूल) मत तोड़ो।
5. पूजा, मूली, चूहा, पूनम, पूड़ी, जूड़ा।

5. 'ए' (े) और 'ऐ' (ै) की मात्रा

1. सेब, शेर, रेलगाड़ी, थैला, भेड़, थैले, केला, नेत्र
2. बेर, बैर; देव, दैव; मेल, मैल; सेर, सैर
3. खेल, मैदान, पेड़, थैला, पैसा, कैलाश, चेला, खपरैल
4. स्वयं कीजिए।
5. पैसा, कैदी, तैराक, मैदान, शैवाल, पैदा, हैरान, मैला।

6. 'ओ' (ो) और 'औ' (ौ) की मात्रा

1. लौकी, तौलिए, भगौना, तोता, मोर, कौआ, नौका, घोड़ा
2. नोट, कौआ, कोट, नौका, जोकर, पौधा, सोना, चौका, गोल, नौकर
3. फौजी, खौल, कौन, शौक, गौरी, और, चौक, सौरभ
4. स्वयं कीजिए।

7. अनुस्वार (ं), चंद्रबिंदु (ँ) और विसर्ग (:)

1. छः, पतंग, आँख, प्रातः, बंदर, हंस, ऊँट, ताँगा
2. साँप, अँगूठी, दाँत, चाँद, बंदर, अंगूर, पंखा, पतंग
3. ऊँट, घुँघरू, मूँछ, सूँघना, वहाँ, माँ, जहाँ, बूँद
4. अतः, प्रातः, फलतः, अक्षरशः, शनैः-शनैः, पुनः
5. स्वयं कीजिए।

8. 'ऋ' (ृ) की मात्रा

1. (कृषक) खेत पर जाता है। (वृक्ष) को पानी दो।
   (गृह) में हम रहते हैं। (मृग) तेज दौड़ता है।
2. भृगु, दृढ़, मृग, कृत, वृक्ष, मातृ, गृह, पितृ, कृपाण, घृत
3. स्वयं कीजिए।

9. 'र' का प्रयोग (रेफ और पदेन)

1. (सर्प) जंगल में रहता है। (ट्रक) खड़ा है।
   (पार्क) में खेलने चलो। (चक्र) गोल होता है।
2. प्रकाश, आक्रमण, निर्मल, ट्रक, गर्दन, मद्रास, सम्राट, पर्वत, ग्राम,
   प्रणाम।
3. स्वयं कीजिए।

10. संयुक्त व्यंजन और संयुक्ताक्षर

1. अश्व, कुत्ता, पत्र, ज्ञानी
2. मच्छर ☐ ज्ञानी ☐ सच्चा ○ सख्त ☐
   तथ्य ☐ कुत्ता ○ मग्गा ○ खिन्न ○
   गुच्छा ☐ मक्का ○ घुमक्कड़ ○ जच्चा ○
   प्यासा ☐
3. स्वयं कीजिए।

खंड–2

1. चाह

कविता बोध

लिखित

(क) बच्चों के मन में यह चाह है कि भारत की ऊँची शान हो।
(ख) बच्चे खेल-खिलौने और धन-सम्मान नहीं चाहते हैं।
(ग) बच्चे सच्चाई को नहीं छोड़ना चाहते हैं।
(घ) बच्चे भारत की ऊँची शान चाहते हैं।

2. (क) सम्मान (ख) अच्छाई (ग) ऊँची
   (घ) सदा
3. (क) - (ii), (ख) - (iii), (ग) - (iv),
   (घ) - (i)
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

भाषा बोध

1. इच्छा, भारत, सच्चाई, गुरु, हमेशा
2. स्वयं कीजिए।

2. पिंकी की गुड़िया

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) पिंकी के छोटे भैया का नाम चिंटू है।
   (ख) चिंटू ने गुड़िया के पास गेंद रख दी।
   (ग) पिंकी गुड़िया का टूटा पैर देखकर रोने लगी।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (iii)

2. (क) पिंकी अपनी गुड़िया और छोटे भैया चिंटू को प्यार करती है।
(ख) चिंटू के कहने पर भी जब गुड़िया ने गेंद नहीं उछाली तो चिंटू नाराज हो गया।
(ग) चिंटू गड़िया से बोला कि गुड़िया रानी, गेंद उछालो।
(घ) यह सुनकर कि डॉक्टर साहब गुड़िया की टूटी टाँग ठीक कर देंगे, पिंकी खुश हो गई।

3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓

4. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (iv) (घ) – (i)

भाषा बोध

1. सुंदर-बदसूरत, अच्छा-बुरा, बड़ा-छोटा, प्यार-नफरत, मीठा-कड़वा, खुश-नाराज
2. (क) है (ख) थी (ग) है (घ) थी

3. मेरा घर

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) यह घर पक्का बना हुआ है।
(ख) इस घर में तीन कमरे हैं।
(ग) माता जी खाना रसोईघर में पकाती हैं।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) –(ii)
2. (क) माता जी घर में सफाई का बड़ा ध्यान रखती हैं।
(ख) तितलियाँ फूलों पर मँडराती हैं।
(ग) पिता जी के कमरे में फर्श पर कालीन बिछा हुआ है।
(घ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने घर को साफ रखना चाहिए तथा अपना सामान ठीक स्थान पर रखना चाहिए।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓
4. (क) चित्र (ख) पौधे (ग) घास (घ) फूलों

भाषा बोध

1. घड़ी, मक्खी, कुर्सी, तितली, छड़ी
2. ठीक-गलत, पक्का-कच्चा, सोना-जागना, गंदा-साफ, अंदर-बाहर, अपना-पराया

4. अच्छे बालक

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गंदे बालक सबसे शर्माते हैं।
(ख) गंदे बालक रोगी बन जाते हैं।
(ग) हमें खूब मलकर नहाना चाहिए।

लिखित

1. (क) अच्छे बालक सवेरे उठकर दाँतों को मंजन करके, खूब मलकर नहाते हैं और स्वच्छ कपड़े पहनते हैं।
(ख) सब लोग गंदे बालक को दूर भगाते हैं।
(ग) गंदे बालक रोगी बन जाते हैं।
(घ) इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने शरीर और कपड़ों की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
2. (क) गंदे, रोगी (ख) मंजन, मोती
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓

भाषा बोध

1. (क) – (iii) (ख) – (iv) (ग) – (ii) (घ) – (i)
2. बच्चा, गंदा, अच्छा, उसे, कपड़ा

5. बचत का महत्व

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) कल देवांश का जन्मदिन था।
(ख) देवांश को उपहार में बैट चाहिए था।
(ग) देवांश को उसके पापा ने जन्मदिन पर एक सुंदर-सी गुल्लक दी।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (ii)
2. (क) देवांश उपहार के रूप में गुल्लक पाकर भी इसलिए प्रसन्न नहीं था क्योंकि उसे उसका मनचाहा उपहार, बैट नहीं मिला था।
(ख) देवांश उपहार के रूप में बैट पाने की सोच रहा था।
(ग) देवांश को मम्मी की इस बात पर हँसी आ गई कि वे कुछ बूँद पानी के लिए कितनी परेशान हो रही हैं।
(घ) भरी हुई बालटी देखकर देवांश को ज्ञान हुआ कि एक छोटी-सी बूँद का भी बहुत महत्व है।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
4. (क) गुल्लक (ख) नल (ग) कल (घ) पैसे

भाषा बोध

1. जेब – े =ए, चीज – ी =ई, उपहार – ा =आ
बैट – ै =ऐ, गुल्लक – ु =उ
2. पानी, खुशी, जन्मदिन, रौनक, एकत्रित

6. मैं कौन हूँ?

(पाठ में – मेढक, कुत्ता, घोड़ा)

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) कुत्ते के दाँत पैने हैं।
(ख) घोड़ा तेज दौड़ता है।
(ग) पानी में मेढक रहता है।

लिखित

1. (क) – (iii) (ख) – (i) (ग) – (i)
2. (क) कुत्ता भौं-भौं शोर मचाता है।
(ख) घोड़े की बोली को 'हिनहिनाना' कहते हैं।
(ग) अपने मालिक को प्रसन्न करने के लिए कुत्ता पूँछ हिलाता है।
(घ) टप्-टप्-टप्-टप् घोड़े के पैरों की आवाज है।
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
4. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (iv)
(घ) –(i)

भाषा बोध

1. (क) हैं, (ख) हूँ, (ग) है, (घ) हो
2. (क) काँव-काँव (ख) कुकड़ू-कूँ (ग) ढेचूँ-ढेचूँ
(घ) म्याऊँ-म्याऊँ (ङ) चूँ-चूँ।

7. सुबह की सैर

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सोनू अपने दादा जी के साथ टहलने गया।

(ख) सोनू ने पार्क का एक चक्कर लगाया।
(ग) सोनू के दादा जी प्रतिदिन सवेरे पार्क में जाते थे।

लिखित

1. (क) – (i) (ख) – (ii) (ग) – (iii)
2. (क) सवेरे पार्क में टहलने दादा जी जाते थे।
(ख) पार्क में कुछ बच्चे दौड़ रहे थे। कुछ बच्चे धीरे-धीरे चल रहे थे। कुछ बच्चे मैदान में बैठे थे। कुछ बच्चे व्यायाम कर रहे थे और कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे।
(ग) प्रात:काल घूमने से शरीर स्वस्थ और फुर्तीला तथा मन प्रसन्न रहता है।
(घ) दादा जी और सोनू पार्क में एक बेंच पर बैठ गए।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

भाषा बोध

1. (ख) वह मैदान में शांत बैठा है।
(ग) कोई धीरे-धीरे चल रहा है।
(घ) वह यहाँ खेल रही है।
(ङ) हम बेंच पर बैठे हैं।
2. (क) हमें हर काम सही समय पर करना चाहिए।
(ख) जल्दी से पार्क का एक चक्कर लगाओ।
(ग) सुबह जल्दी उठने से शरीर स्वस्थ रहता है।
(घ) प्रात:काल की सैर से शरीर स्वस्थ एवं नीरोग बनता है।
(ङ) सुबह की सैर का अपना अलग ही आनंद है।

8. सवेरा

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) सवेरे सूरज का रंग लाल है।
(ख) सवेरे पेड़ों पर चिड़ियाँ बोलने लगीं।
(ग) सूरज के उग आने पर हवा डोलने लगी।
(घ) सवेरे फूल मुस्काने लगे।
2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗
3. (क) तितलियाँ, तराने (ख) सवेरा, चिड़ियाँ।

भाषा बोध

1. सोना – जागना मुस्काना – रोना मंद – तीव्र
काला – सफेद उगना –डूबना
2. (क) – (iii) (ख) – (i) (ग) – (ii)

9. बाल-दिवस

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) बाल-दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है।
(ख) नेहरू जी के पिता का नाम पंडित मोतीलाल नेहरू था।
(ग) इंदिरा जी पंडित जवाहरलाल नेहरू की पुत्री और देश की बड़ी नेता थीं।

लिखित

1. (क) – (i) (ख) – (i) (ग)– (ii) (घ) – (ii)
2. (क) नेहरू जी की माता का नाम श्रीमती स्वरूप रानी था।
(ख) नेहरू जी का जन्म-दिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है।
(ग) बच्चे नेहरू जी को 'चाचा नेहरू' कहकर पुकारते हैं।
(घ) नेहरू जी की बेटी का नाम इंदिरा गांधी था।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
4. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (iv)
(घ) – (iii)

भाषा बोध

1. (क) – (iv) (ख) – (iii) (ग) – (v) (घ) – (ii)
(ङ) – (i)
2. आटा, काला; पिन, सतिया; कील, नवीन; कुल, विपुल; तराजू, करतूत; सेब, सवेरा; पैदल, सदैव।

10. न्याय

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) बुढ़िया का नाम ललिता था।
(ख) बुढ़िया को अपनी बकरी एक गाँव के चरवाहे के पास मिली।
(ग) बकरी कानी नहीं थी, उसकी दोनों आखे ठीक थीं।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (iii)
(घ) – (i)
2. (क) बुढ़िया को बकरी पालने का शौक था।
(ख) एक दिन अचानक रात को बुढ़िया की बकरी गायब हो गई।
(ग) मुखिया ने बकरी की आँखों पर पट्टी बँधवाकर, चरवाहे की चोरी पकड़कर न्याय किया।
(घ) बकरी माँगने पर चरवाहे ने बकरी देने से साफ इनकार कर दिया।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

भाषा बोध

1. मुँहमाँगा, आखिरकार, आस-पास, ईमानदार, मुस्कुराकर।
2. (ख) पत्रकार, (ग) चारमीनार।

संकलित मूल्यांकन -1 (Summative Assessment - 1)
(खंड -1 पर आधारित)

1. (क) कमल (ख) अजगर (ग) टहल
(घ) पपीता (ङ) गुलाब (च) तरबूज
(छ) थैला (ज) चाँद।
2. माला छाता ताला महल कान गाजर।
3. ऊँट, प्रात:, वहाँ, घुँघरू, अत:, पुन:, फलत:, माँ
4. समाचार, अजगर, कृषक, आसमान
5. (सर्प) जंगल में रहता है। (ट्रक) खड़ा है।
(पार्क) में खेलने चलो। (चक्र) गोल होता है।
6. मैदान, चेला, थैला, पैसा, रेल, पेड़, खपरैल, खेल
7. (क) अजगर (ख) नटखट (ग) पनघट (घ) फल

संकलित मूल्यांकन - 2 (Summative Assessment - 2)

1. अचानक = यकायक एकत्रित = इकट्ठे,
अवश्य = जरूर स्नान = नहाने की क्रिया (नहाना)
नाराज = गुस्से में, क्रोधित नजर = निगाह, दृष्टि।
2. (क)– (ii) (ख) – (iii)
(ग) – (ii) (घ) – (iii)
(ङ) – (i)
3. (क) दादा जी के साथ (ख) 14 नवंबर को

(ग) बैट (घ) रसोईघर में

4. (क) चित्र, (ख) सवेरा, चिड़िया,
(ग) घास, (घ) कल।

5. (क)– (iv) (ख)– (iii)
(ग) – (i) (घ) – (v)
(ङ) – (ii)

6. (क)– (ii) (ख)– (iii)
(ग) – (iv) (घ) – (i)

7. (क) बच्चे भारत की ऊँची शान चाहते हैं।
(ख) डॉक्टर साहब गुड़िया की टूटी टाँग ठीक कर देंगे यह सुनकर पिंकी चुप हुई।
(ग) तितलियाँ फूलों पर मँडराती है।
(घ) सब लोग गंदे बच्चों को दूर भगाते हैं।
(ङ) भरी हुई बालटी देखकर देवांश को यह ज्ञान हुआ कि एक बूँद का भी बहुत महत्व है अर्थात् छोटी-छोटी बचत का भी बहुत महत्व होता है।

हिंदी - 2

1. प्रकृति की सीख

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (ii)
(घ) – (iii)

2. (क) सागर हमें मन में गहराई लाने की सीख देता है।
(ख) पृथ्वी को धैर्यवान इसलिए माना गया है क्योंकि उस पर कितना ही भार पड़े, वह कभी विचलित नहीं होती।
(ग) आकाश से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने अंदर ऐसे गुण लाने चाहिए कि सारे संसार में हमारा नाम फैल जाए।
(घ) जल की लहरें हमसे कहती हैं कि हमें हमेशा अपने मन को उमंग से भरा रखना चाहिए।

3. (क) शीश (ख) फैलो (ग) पृथ्वी

भाषा बोध

1. पर्वत = पहाड़ पृथ्वी = धरती सागर = समुद्र
संसार = दुनिया मन = हृदय मृदुल = कोमल

2. ऊँचा = नीचा धैर्य = अधैर्य मीठा = कड़वा
पृथ्वी = आकाश तरल = ठोस गहरा = उथला

3. (क)– (v) (ख) – (iii) (ग) – (iv) (घ) – (ii)
(ङ) – (i)

2. मेहनत का फल

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) चूहे का नाम पिंकू था।
(ख) गिलहरी का नाम चैताली था।
(ग) पिंकू चूहा लापरवाह था।
(घ) चैताली गिलहरी मेहनती थी।

लिखित

1. (क)– (iii) (ख)– (ii) (ग)– (i) (घ) – (iii)

2. (क) चूहे ने नटखट खरगोश से खाना माँगा।
(ख) खाना न मिलने पर चूहा रोने लगा।
(ग) गिलहरी ने चूहे को मूँगफली के दाने खाने के लिए दिए।
(घ) खरगोश ने चूहे को जवाब दिया कि अगर तुम्हें फल दे दूँगा तो मैं क्या खाऊँगा।
(ङ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि आलसी व्यक्ति हमेशा दुखी रहता है। अत: हमें कभी आलस्य नहीं करना चाहिए।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗
(ङ) ✓

4. (क) – (iii) (ख) – (iv) (ग) – (v) (घ)– (ii)
(ङ)– (i)

भाषा बोध

1. (क) ज्ञानी (ख) मेहनती (ग) मिलनसार
(घ) कोटर (ङ) आलसी (च) बिल

2. चूहा, पिंकू, जंगल, चैताली, रात, दिन, भूख, बिल, खरगोश, फल, मूँगफली, भोजन।

3. कंजूस चंदूलाल

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) सेठ जी का नाम चंदूलाल था।
(ख) सेठ जी स्वभाव से कंजूस थे।
(ग) सेठ जी हर समय करोड़पति बनने के सपने देखा करते थे।
(घ) सेठ जी की पत्नी का नाम निर्मला देवी था।

लिखित

1. (क) – (i) (ख) – (iii) (ग) – (i) (घ) – (iii)

2. (क) सेठ जी की पत्नी एक धर्मपरायण और दयालु स्त्री थीं।
(ख) सेठ जी का गरीबों और साधु-संतों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं था।
(ग) सेठ जी हर समय करोड़पति बनने का सपना देखा करते थे।
(घ) सेठ जी को बीज देकर साधु ने कहा कि इन्हें जमीन में बो देना। इनसे उगे पौधों में फल लगेंगे, जिससे तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।
(ङ) अंत में सेठ जी ने अपने जीवन में अनुभव किया कि गरीबों, दुखियों और साधु-संतों की सेवा करने से हर सुख की प्राप्ति हो जाती है।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✔

4. (क) करोड़पति (ख) छिपकर (ग) चंदूलाल
(घ) निर्मला

भाषा बोध

1. पति-पत्नी दादा-दादी पुरुष-स्त्री आदमी-औरत सेठ-सेठानी चाचा-चाची
2. कटु गहराई कंजूस साधु तपस्वी पुड़िया।
3. (क) **पाप** से घृणा करो, पापी से नहीं।
(ख) गरीबों की सहायता करना **पुण्य** का काम है।
(ग) देश की **उन्नति** में ही हमारी उन्नति है।
(घ) अच्छा **व्यवहार** सबका मन मोह लेता है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

☆ 1. हमें अपने अंदर परोपकार की भावना रखनी चाहिए।
2. परोपकार करने से हमारा साहस और सम्मान बढ़ता है।

3. परोपकारी मनुष्य की भगवान भी सहायता करते हैं।
4. परोपकार करने से समाज में शांति बनी रहती है।

☆ चली, रेल, पचास, पूरे साठ।

4. बलवान कौन?

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) व्यक्ति के शरीर से कपड़े उतरवाने की पहली कोशिश हवा ने की।
   (ख) एक दिन हवा और सूरज में बहस छिड़ गई।
   (ग) हवा से बचाव के लिए आदमी एक गहरे गड्ढे में घुसकर बैठ गया।
   (घ) अंत में सूरज की जीत हुई।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (i) (ग) — (i)
2. (क) हवा और सूरज में यह बहस छिड़ गई कि दोनों में कौन अधिक बलवान है।
   (ख) सूरज हवा से कहता था कि मैं अधिक बलवान हूँ।
   (ग) सूरज और हवा दोनों में तय हुआ कि हममें से जो धरती पर जाते हुए आदमी के कपड़े उतरवा देगा, वहीं दोनों में अधिक बलवान होगा।
   (घ) जब हवा ने कोशिश की, तो आदमी ने कपड़े नहीं उतारे वरन् वह हवा से बचाव के लिए एक गहरें गड्ढे में घुसकर बैठ गया।
   (ङ) सूरज की गरमी से परेशान होकर आदमी ने अपने कपड़े उतार दिए।
3. (क) वेग (ख) बचाव (ग) छायादार (घ) शर्त
   (ङ) बहस

भाषा बोध

1. धरती = पृथ्वी रास्ता = मार्ग आदमी = पुरुष
   पराजय = हार आकाश = नभ सूरज = सूर्य
2. रास्ते, ताले, कपड़े, गधे, बच्चे।
3. सूर्य, कपड़े, सड़क, धीमी, व्यक्ति, घमंड।

5. टेसू राजा अड़े खड़े

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (iii) (ग) — (ii)
2. (क) 'अड़े खड़े' का अर्थ है किसी बात को मनवाने या किसी चीज को लेने के लिए जिद करना।
   (ख) बड़ों को उबालने के लिए पानी में डालते हैं, जिससे कि वे खूब फूल जाएँ।
   (ग) चाँदी वर्क बड़ों को सजाने के काम आता है।
   (घ) खूब फूलने के बाद बड़ों को दही में डाला जाता है।
3. (क) गोल (ख) उर्द (ग) अड़े (घ) नमक
   (ङ) फूँक

भाषा बोध

1. सब — जब मँगाऊ — खिलाऊँ खुदाऊँ — लगाऊँ
   रखवाऊँ — पिसवाऊँ खड़े — अड़े डाल — उबाल

2.	रखना	रखवाना	रखवाऊँ
	लगाना	लगवाना	लगवाऊँ
	बनाना	बनवाना	बनवाऊँ
	पीसना	पिसवाना	पिसवाऊँ

6. आज्ञाकारी पुत्र

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) ब्राह्मण को पूजा करवाने के लिए सेठ रामदास ने बुलवाया।
   (ख) ब्राह्मण यात्रा पर अपने साथ एक गठरी में जरूरी कपड़े, खाने-पीने का सामान, कुछ कपूर के टुकड़े और एक केकड़ा लेकर गया।
   (ग) गरमी से बचने के लिए ब्राह्मण एक पेड़ की छाया में बैठ गया।
   (घ) केकड़े ने ब्राह्मण की जान बचाई।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (i) (ग) — (iii)
   (घ) — (ii)
2. (क) ब्राह्मण धार्मिक कर्मकांड और हवन आदि करके अपनी जीविका चलाता था।
   (ख) शहर जाने से पहले ब्राह्मण को उसकी माँ ने सीख दी कि यात्रा पर अकेले न जाकर, किसी को साथ ले जाना चाहिए ताकि साथ भी मिल जाए और रास्ते में सुरक्षा भी रहे।
   (ग) ब्राह्मण को शहर में सेठ रामदास ने पूजा करवाने के लिए बुलाया।
   (घ) जब ब्राह्मण पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था तो पेड़ की जड़ के पास के एक बिल में से एक साँप निकलकर उसकी गठरी में घुस गया, जिसे गठरी में बैठे केकड़े ने मार डाला।
   (ङ) अंत में ब्राह्मण ने भगवान को धन्यवाद दिया।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗
   (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क) पुत्र (ख) आशीर्वाद (ग) धन्यवाद (घ) नींद
   (ङ) अवश्य।
2. (क)— (v) (ख) —(i) (ग) — (ii) (घ)— (iv)
   (ङ) — (iii)
3. (क)— (ii) (ख) —(i) (ग) — (iv) (घ)— (v)
   (ङ) — (iii)
4. (क) बच्चों को माता-पिता और गुरु का **आज्ञाकारी** होना चाहिए।
   (ख) बड़ों का **आशीर्वाद** जीवन में सफल बनाता है।
   (ग) अच्छे स्वास्थ्य के लिए **विश्राम** लेना भी जरूरी है।
   (घ) मेहनत करने से **अवश्य** सफलता मिलती है।
   (ङ) सड़क पर चलते समय **सुरक्षा** के नियमों का पालन करना चाहिए।

7. सोना और लोहा

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) लोहे और सोने में विवाद हो गया।
   (ख) 'काला-कलूटा' लोहे को कहा गया है।
   (ग) दुनिया के गरीब-अमीर सभी लोगों के हाथों में सोना शोभा देता है।
   (घ) सोने के बिना शादी-ब्याह की कोई शोभा नहीं होती।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (ii) (ग) — (ii) (घ) — (i)
2. (क) लोहे और सोने में इस बात पर विवाद हुआ कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है।
   (ख) शादी के मुकुट में लोहे की सुई लगी होती है।
   (ग) सोना लोहे की तिजोरी की कैद में बंद रहता है।
   (घ) अंत में लोहे की जीत हुई।
   (ङ) इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि अपने को बुद्धिमान तो समझना चाहिए, किंतु दूसरों को भी मूर्ख नहीं समझना चाहिए।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
   (ङ) ✗

भाषा बोध

1. कुरूप — सुंदर शुभ — अशुभ अंत —आदि
   घर — बाहर आगे — पीछे अधिक — कम
   धनी — निर्धन उन्नति — अवनति
2. (क) विनाश (ख) निर्दोष (ग) मुकुट
   (घ) कुरूप (ङ) टन
3. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv)
   (घ) — (v) (ङ) – (i)

8. सुभाष चंद्र बोस

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सबसे पहले 'जयहिंद' का नारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लगाया था।
   (ख) नेताजी का जन्म बंगाल प्रांत में हुआ था।
   (ग) नेताजी का रास्ता गांधी जी से भिन्न था।
   (घ) नेताजी की फौज का नाम 'आजाद हिंद फौज' था।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (ii) (ग) — (iii)
2. (क) देश के आजाद न होने तक नेताजी ने शादी न करने की प्रतिज्ञा की थी।
   (ख) नेताजी ने देशवासियों के कहा कि तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
   (ग) नेताजी का पूरा नाम सुभाष चंद्र बोस था।
   (घ) आजाद हिंद फौज का उद्देश्य अंग्रेजी सरकार को ईंट का जवाब पत्थर से देना था।
   (ङ) वायुयान से जापान जाते समय, वायुयान के खराब होकर गिर जाने के कारण नेताजी की मृत्यु हुई।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
   (ङ) ✓
4. (क) कक्षा (ख) घृणा (ग) घोषणा (घ) विचित्र

भाषा बोध

1. वीरों, स्कूलों, लोगों, अध्यापकों, दिनों, शत्रुओं, अंग्रेजों, ईंटों
2. स्वतंत्रता, सम्मान, शिक्षक, दुश्मन, दिल, युद्ध
3. (क) अपने विद्यालय के समारोह में हमने अतिथियों का **स्वागत** किया।
   (ख) **घृणा** करने से मन खिन्न रहता है।
   (ग) नेताजी की **घोषणा** सुनकर अंग्रेज घबरा गए।
   (घ) कोई **प्रतिज्ञा** करने से पहले सोच लेना चाहिए कि हम उसे निभा पाएँगे या नहीं।

9. नन्हीं चिड़िया

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) नन्हीं चिड़िया का नाम चुनमुन था।
   (ख) नन्हीं चिड़िया ने पहले अपनी माँ से कहा कि मुझको उड़ जाने दो।
   (ग) माँ ने तब उत्तर दिया कि पहले तुम अपने पंख उग आने दो, तब उड़ना।
   (घ) पंख उगने पर चुनमुन ने अपनी माँ से कहा कि मुझको दाना लाने दो।
   (ङ) माँ ने पंख बड़े होने पर चुनमुन को उत्तर दिया कि अब तुम उड़ सकती हो।
2. (क) उड़ो (ख) पंख (ग) दाना
   (घ) चुनमुन
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓
   (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क)— (iii) (ख)— (iii) (ग) — (i) (घ) — (v)
   (ङ) — (v)
2. (क) माँ, मुझको उड़ जाने दो।
   (ख) माँ बोली — अब उड़ो लाड़ली।
   (ग) पंख जरा उग आने दो।
   (घ) मुझको दाना लाने दो।

10. पुरस्कृत चोरनी

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) चंपकवन के राजा का नाम चंपक शेर था।
   (ख) चंपक शेर का मंत्री झबरू रीछ था।
   (ग) अंत में बड़बोली लोमड़ी चोर निकली।
   (घ) राजा ने राजदरबार में बड़बोली लोमड़ी को नौकरी दी।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (iii) (ग) — (ii)
   (घ) — (iii)
2. (क) चंपक वन में चोरी की बढ़ती वारदातों के कारण राजा के माथे पर चिंता की रेखाएँ उभर आई थीं।
   (ख) बड़बोली लोमड़ी ने राजा की बड़ी सेवा की, इसलिए राजा उससे प्रसन्न हुआ।
   (ग) रात को भेष बदलकर राजा और मंत्री चोर को ढूँढ़ते थे।
   (घ) राजा चंपक को बड़बोली लोमड़ी ने गड्ढे से निकाला।
   (ङ) पकड़े जाने पर राजा ने चोरनी को माफ कर दिया और उसे राजदरबार में नौकरी दे दी।
3. (क) अच्छे (ख) रात (ग) पुरस्कार
   (घ) पछतावा

भाषा बोध

1. (क) प्रसन्न (ख) लोमड़ी (ग) कठिनाई (घ) जंगल
   (ङ) आवाज
2. (क) इंसाफ (ख) काबिल (ग) वन (घ) आसमान
3. जंगली, शिकारी, न्यायी, चोरी, गुणी, सच्चाई

11. छिपा हुआ धन

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) किसान का नाम रामधन था।
   (ख) गाँव का नाम रामपुर था।
   (ग) किसान के चार पुत्र थे।
   (घ) किसान के चारों पुत्र आलसी थे और आपस में लड़ते रहते थे।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (iii) (ग) — (iii) (घ) — (i)
2. (क) मरते समय किसान ने अपने चारों पुत्रों से कहा कि मैंने जीवन-भर जो धन कमाया है, वह खेत में दबा हुआ है; उस धन को निकाल लेना।
   (ख) किसान के मरने के बाद उसके पुत्र भूखों मरने लगे।
   (ग) बूढ़े आदमी ने लड़कों से कहा कि तुम्हारे पिता जी ने ठीक ही बताया था। जिस खेत में तुमने आज खुदाई की है, उसमें बीज डाल दो। कुछ दिन बाद जो फसल होगी वह आप लोगों का सच्चा व छिपा हुआ धन होगा।
   (घ) डॉक्टरों ने किसान को बताया कि अब उसके जीवन का अंतिम समय है।
   (ङ) अंत में चारों लड़कों ने परिश्रम करके धन प्राप्त किया और खुशी से प्यार के साथ रहने लगे।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗
   (ङ) ✓

भाषा बोध

1.

परिश्रम	—	आलस्य	बंजर	—	उपजाऊ
स्वस्थ	—	रोगी	अंतिम	—	प्रथम
मीठा	—	कड़वा	बीमार	—	तंदुरुस्त
आरंभ	—	अंत	मृत्यु	—	जीवन

2. निर्मलता, कोमलता, निर्धनता, निकटता, स्वच्छता, सफलता, वीरता
3. पेड़ों, दिनों, बच्चों, चारों, लड़कों, रातों, दानों

12. पढ़ाई और खेल

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गौरव हाथ में फुटबाल लेकर निकलता है।
   (ख) गौरव के पिता जी कल गौरव के विद्यालय के प्रधानाचार्य से मिले थे।
   (ग) गौरव से उसके प्रधानाचार्य नाराज हैं।
   (घ) पढ़ाई आदमी को विद्वान और नम्र बनाती है।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (ii) (ग) — (ii)
   (घ) — (ii)
2. (क) गौरव के प्रधानाचार्य उसके कार्य और व्यवहार से संतुष्ट नहीं थे, इसलिए वे गौरव से नाराज थे।
   (ख) खेल शरीर को मजबूत और तंदुरुस्त बनाता है।
   (ग) पिताजी ने गौरव को समझाया कि 'ठीक होते हैं' और 'पूरी तरह ठीक हैं' में अंतर है; यानी इधर-उधर की बातें न करके उसे निश्चित रूप से अच्छा विद्यार्थी बनना चाहिए।
   (घ) पढ़ाई आदमी को विद्वान और नम्र बनाती है।
   (ङ) गौरव ने अंत में कहा — पिताजी, मैं अपराधी हूँ। मुझे क्षमा कर दीजिए। अब मैं मन लगाकर पढ़ूँगा और आपको कभी किसी शिकायत का मौका नहीं दूँगा।
3. (क) — (ii) (ख) — (v) (ग) — (i) (घ) — (iii)
   (ङ)— (iv)

भाषा बोध

1. प्रधानाध्यापक, विद्यार्थी, हस्तलेखन, गृहकार्य, फुटबॉल।
2. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv) (घ) — (v)
   (ङ) — (i)
3. स्वयं कीजिए।

13. ऋतुएँ

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) जलते सूरज से खेती सूखने लगती है और शरीर पर पसीना आ जाता है।
   (ख) ऋतुएँ चार होती हैं—
   गरमी, वर्षा, सरदी और बसंत।
   (ग) पंखा मम्मी ने चलवाया।
   (घ) बसंत ऋतु में खेतों में बालें पक जाती हैं।
   (ङ) दीवाली सरदी ऋतु में आती है।
2. (क) सूरज (ख) ठंडा (ग) हरियाली
   (घ) सरदी

भाषा बोध

1.

सूरज	—	सूर्य	कपड़ा	—	वस्त्र
तन	—	शरीर	ग्रीष्म	—	गरमी
बादल	—	घन	हरियाली	—	हरितिमा, हराभरापन

2.

ठंडा	—	गरम	खुश	—	नाराज, दुखी
अच्छा	—	बुरा	काले	—	गोरे
पक्का	—	कच्चा	सरदी	—	गरमी

रचनात्मक गतिविधियाँ

तितली, पंख, फूल, डाल, इठलाती।

14. कंजूस रामदास

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) रामदास एक कंजूस व्यक्ति था।
   (ख) रामदास ने कपड़ा खरीदा।
   (ग) दरजी ने दस टोपियाँ बनाईं।
   (घ) रामदास ने एक टोपी का कपड़ा खरीदा।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (ii) (ग) — (i) (घ) — (ii)
2. (क) रामदास दरजी के पास टोपियाँ सिलवाने गया।
   (ख) रामदास ने दरजी से तीन बातें कहीं -
   (i) भैया, इसमें दो टोपियाँ बना देना।
   (ii) दरजी भैया, इसमें चार टोपियाँ बनाना।

(iii) तब तो भैया, दस टोपियाँ ही बना देना।
(ग) रामदास ने टोपी सिलवाने के लिए कपड़ा खरीदा।
(घ) दरजी ने रामदास के लिए दस टोपियाँ बनाईं।
(ङ) दरजी के पास खड़े लोग इसलिए हँसने लगे क्योंकि रामदास जैसे कंजूस मनुष्य की इसी प्रकार हँसी उड़ती है।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✗

4. (क) एक (ख) कंजूस (ग) आग-बबूला
(घ) बेईमान

भाषा बोध

1. उँगली बिजली छड़ी टोपी लड़की
2. (क) ईमानदार (ख) पीछे (ग) अविश्वास
(घ) अमीर (ङ) बड़ा
3. (क)– (vi) (ख) – (i) (ग) – (iv)
(घ) – (v) (ङ) – (iii) (च)– (ii)

15. शहीद भगत सिंह

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) वीरा, सरदार भगत सिंह का बचपन का नाम था।
(ख) वीरा काफी रात बीतने पर घर लौटा।
(ग) भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 ई० को हुआ था।
(घ) भगत सिंह ने कमीशन के बहिष्कार की योजना बनाई।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (iii) (घ) – (ii)
(ङ) – (ii)
2. (क) जलियाँवाला बाग की घटना के कारण वीरा स्कूल से देर से लौटा। उसके हाथ में एक शीशी थी जिसमें मिट्टी भरी हुई थी।
(ख) भगत सिंह पर राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत अमिट छाप उनके परिवार ने डाली।
(ग) नेशनल कॉलेज में भगत सिंह की मित्रता सुखदेव और यशपाल से हुई।
(घ) स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की याद में प्रत्येक वर्ष 23 मार्च को 'शहीद दिवस' मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन सन् 1931 ई० में राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह को अंग्रेजों ने फाँसी दी थी।
(ङ) कमिश्नर सांडर्स की हत्या भगत सिंह ने की थी।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
(ङ) ✗

भाषा बोध

1.

रात	–	दिन	अंतिम	–	प्रथम
मृत्यु	–	जन्म	साधारण	–	असाधारण
घृणा	–	प्यार-दुलार	शत्रु	–	मित्र
सपूत	–	कुपूत	गुलाम	–	आजाद

2. भावनाएँ, कामनाएँ, पाठशालाएँ, प्रतिमाएँ, चिताएँ, हत्याएँ, माताएँ, मित्रों
3. (क) मकान (ख) स्वतंत्रता (ग) देशप्रेमी (घ) ग्राम
(ङ) माता

रचनात्मक गतिविधियाँ

चंद्र शेखर आजाद, लाला लाजपत राय, गोपाल कृष्ण गोखले, भगत सिंह, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल।

16. गुब्बारे

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) – (iii) (ख) – (ii) (ग) – (i)
2. (क) बच्चा गुब्बारे खरीदने के लिए माँ से पैसे माँगता है।
(ख) गुब्बारे वाला लाल, हरे, नीले, नारंगी सभी रंगों के गुब्बारे लाया है।
(ग) बच्चा गुब्बारों के साथ जी भरकर खेलना चाहता है।
(घ) बच्चा ऐसे गुब्बारे लेना चाहता है जिनके रंग न छूटें और वे कभी न फूटें।
(ङ) बच्चा ढेरों गुब्बारे लेना चाहता है।
3. (क) मुझको (ख) रंग (ग) मुझको
(घ) गुब्बारे
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓

भाषा बोध

1. (क) – (iii) (ख) – (i) (ग) – (ii) (घ) – (v)
(ङ) – (iv)
2. (ख) बैग (ग) आम (घ) पेन

रचनात्मक गतिविधियाँ

★ गुब्बारे वाला, पैसे, नारंगी, गुब्बारे, माँ, गुब्बारे, रंग।
★ चुहिया, सयानी, रानी, करती हो, खा जाती, आहट, बिल्ली, बिल।

संकलित मूल्यांकन - 1 (Summative Assessment - 1)

1. (क) – (iii) (ख)– (i) (ग) – (i) (घ) – (i)
(ङ) – (iii)
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
(ङ) ✓
3. (क) विचित्र (ख) चंदूलाल (ग) वेग (घ) बाहस
(ङ) कपूर
4. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (iv) (घ) – (v)
(ङ) – (i)
5. (क) – (v) (ख) – (i) (ग) – (ii) (घ) – (iii)
(ङ) – (iv)
6. चली, रेल, पचास, पूरे साठ
7. (क) हवा और सूरज में यह बहस छिड़ गई कि दोनों में कौन अधिक बलवान है।
(ख) ब्राह्मण धार्मिक कर्मकांड और हवन आदि करके अपनी जीविका चलाता था।
(ग) सोना लोहे की कैद में बंद रहता है।
(घ) नेताजी का पूरा नाम 'सुभाष चंद्र बोस' था।
(ङ) खरगोश ने चूहे को जवाब दिया कि अगर तुम्हें फल दे दूँगा तो मैं क्या खाऊँगा।

संकलित मूल्यांकन - 2 (Summative Assessment - 2)

1. (क) – (ii) (ख)– (ii) (ग) – (i) (घ) – (ii)
(ङ) – (ii)
2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग)✓ (घ) ✗
(ङ) ✓
3. (क) बेईमान (ख) पुरस्कार (ग) पछतावा (घ) मुझको
(ङ) अच्छे

4. (ख) स्वतंत्रता (ग) देशप्रेमी (घ) ग्राम (ङ) माता
5. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (iv) (घ) – (v) (ङ) – (i)
6. पेड़ों, दिनों, बच्चों, चारों, लड़कों, रातों, दानों।
7. (क) बच्चा ऐसे गुब्बारे लेना चाहता है जिनके रंग न छूटें और वे कभी न फूटें।
   (ख) स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की याद में प्रत्येक वर्ष 23 मार्च को 'शहीद दिवस' मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन सन् 1931 ई० में राजगुरू, सुखदेव और भगत सिंह को अंग्रेजों ने फाँसी दी थी।
   (ग) रामदास ने टोपी सिलवाने के लिए कपड़ा खरीदा।
   (घ) बसंत ऋतु में खेतों में बालें पक जाती हैं।
   (ङ) बूढ़े आदमी ने लड़कों से कहा कि तुम्हारे पिता जी ने ठीक ही बताया था। जिस खेत में तुमने आज खुदाई की है, उसमें बीज डाल दो। कुछ दिन बाद जो फसल होगी वह आप लोगों का सच्चा व छिपा हुआ धन होगा।

रचनात्मक मूल्यांकन : 1, 2 : स्वयं कीजिए।

हिंदी - 3

1. कौन ?

कविता बोध

मौखिक
1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित
1. (क)– (ii) (ख) – (i) (ग) – (iii) (घ) –(ii)
2. (क) रात को रास्ता चाँद दिखाता है।
   (ख) बादल देखकर हमारे मन में प्रश्न उठता है कि यदि आकाश में बादल न होते तो फिर इंद्र-धनुष कौन बनाता।
   (ग) नदियों का निर्मल पानी पर्वतों से आता है।
   (घ) हमें झरनों का मीठा पानी पर्वतों में मिलता है।
   (ङ) सूरज से हमें प्रकाश के अतिरिक्त ऊष्मा (ऊर्जा) मिलती है।
3. (क) निर्मल (ख) इंद्र-धनुष (ग) पर्वत (घ) चाँद

भाषा बोध
1. (क) – (ii) (ख) – (ii) (ग) – (i) (घ) – (iii) (ङ)– (ii)
2. (क) – (v) (ख) – (ii) (ग) – (iv) (घ) – (iii) (ङ) – (i)
3. चाँद – चंद्रमा   सूरज – सूर्य
   रात – निशा   पर्वत – पहाड़
   दिन – दिवस   बादल – मेघ
   नदी – सरिता   पेड़ – वृक्ष

2. चाँद खिलौना

पाठ बोध

मौखिक
1. स्वयं कीजिए।
2. (क) राजकुमारी ने राजा से चाँद मँगवाने के लिए कहा।
   (ख) राजकुमारी को जोकर ने चाँद लाकर दिया।
   (ग) राजकुमारी को अपने अँगूठे के नाखून के बराबर बड़ा चाँद चाहिए था।
   (घ) राजकुमारी ने चाँद को जंजीर में डालकर अपने गले में लटका लिया।

लिखित
1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (i) (घ) – (iii)
2. (क) राजा उदास इसलिए था क्योंकि वह राजकुमारी की बीमारी दूर करने के लिए कुछ कर नहीं पा रहा था।
   (ख) राजा ने राजकुमारी से चाँद लाने का वादा किया क्योंकि राजकुमारी चाँद से खेलना चाहती थी।
   (ग) राजा ने जोकर से पूछा कि क्या तुम चाँद ला सकते हो।
   (घ) जोकर ने चाँद के बारे में राजकुमारी से पूछा कि वह किस चीज का बना है और वह कितनी ऊँचाई पर है।
   (ङ) जोकर ने सुनार से एक सोने का चाँद बनवाया और उसे सजाकर राजकुमारी को दे दिया।
3. (क) प्रबंध (ख) चाँद (ग) असमर्थता (घ) योग्य
4. (क) – (2) (ख) – (4) (ग) – (5) (घ)– (1) (ङ)– (3)

भाषा बोध
1. राजकुमार, बीमारी, साँड़, शेरनी, बड़ी, घोड़ी।
2. सोना – स्वर्ण   बेटा – पुत्र
   चाँद – चंद्रमा   आकाश – आसमान
   राजा – सम्राट   आँख – नयन
3. रूपवान, बलवान, धनवान, गाड़ीवान।

3. अनपढ़ की शिक्षा

पाठ बोध

मौखिक
1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गाँव में प्रवेश करते ही बादशाह को एक झोंपड़ी दिखाई पड़ी।
   (ख) झोंपड़ी राघव नामक एक किसान की थी।
   (ग) चलते समय बादशाह अकबर ने राघव को अपनी अँगूठी दी।
   (घ) सुबह के समय छत पर बादशाह अकबर इबादत कर रहे थे।

लिखित
1. (क) – (i) (ख) – (ii) (ग) – (iii)
2. (क) अकबर वेश बदलकर प्रजा का दुख-सुख जानने के लिए घूमने निकले थे।
   (ख) राघव एक गरीब किसान था। अपने बादशाह की अँगूठी भिखमंगे जैसे लगने वाले राघव के हाथ में देखकर, सिपाहियों ने उसे चोर समझकर पकड़ लिया।
   (ग) सुबह आँख खुलने पर राघव ने अकबर को छत पर इबादत करते हुए देखा।
   (घ) अकबर खुदा की इबादत करके उससे शक्ति, धन और उम्र माँग रहे थे।
   (ङ) राघव ने अकबर से धन इसलिए नहीं लिया क्योंकि वह भीख के रूप में मिले धन से नहीं, वरन् अपने परिश्रम से प्राप्त धन से गुजारा करना अच्छा समझता था।
3. (क) पैदल (ख) जोरों (ग) अनपढ़ (घ) बैल
4. (क) – (iii) (ख) – (iv) (ग) – (ii) (घ) – (v) (ङ)– (i)

भाषा बोध
1. (क) अतिथि-गृह (ख) अनपढ़ (ग) स्वादिष्ट (घ) अनजान (ङ) झोंपड़ी (च) शाकाहारी
2. लालची, आलसी, मानी, बली
3.

विशेषण	***विशेष्य***	***विशेषण***	***विशेष्य***
स्वादिष्ट	खाना	सुंदर	गाँव
अमीर	आदमी	नीला	आसमान
घना	जंगल	समझदार	राजा

4. मूलमंत्र

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) थोड़े ही दिनों में लड़का जूतों की मरम्मत के काम को सीख गया।
   (ख) लड़के ने सड़क के किनारे एक बरगद के पेड़ के नीचे अपने बैठने के लिए जगह खोज ली।
   (ग) लड़के ने मदद के लिए दुकान में एक-दो आदमी रख लिए।
   (घ) उस लड़के का नाम 'बाटा' था।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (i) (घ) – (ii)
2. (क) लड़के की लगन, ईमानदारी और मेहनत के कारण उसके जूतों की प्रसिद्धि बढती गई।
   (ख) बाबू जी ने लड़के को सलाह दी कि जो काम करो ढंग से करो, अच्छा करो, पूरी लगन से करो।
   (ग) लड़का अपने काम में अधिक व्यस्त रहने के कारण कहीं आता-जाता नहीं था।
   (घ) काम की अधिकता और स्थान की कमी के कारण लड़का बहुत-से लोगों को लौटा देता था।
   (ङ) बाबू जी की सीख "जितना काम करो, ढंग से करो"– लड़के के जीवन का मूलमंत्र थी।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗

भाषा बोध

1. (क) बेसब्री (ख) जल्दबाजी (ग) प्रशंसा (घ) मरम्मत (ङ) ग्राहक
2. (ख) – (ii) (ग) – (i) (घ) – (i) (ङ) –(i)
3. (क) – (iii) (ख) – (iv) (ग) – (i) (घ) – (ii) (ङ) – (vi) (च) – (v)

5. चिड़ियाघर की सैर

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (ii) (घ) – (i)
2. (क) चिड़ियाघर में तोते, अजगर के बच्चे, हिरन, गैंडे, जेबरा, भालू, बंदर, शेर, चीते, शुतुरमुर्ग, नीलगाय, बारहसिंघे, जिराफ, ऊँट और कंगारू आदि जंतु थे।
   (ख) हिरन चौकड़ी भर रहे थे।
   (ग) तोते रंग-बिरंगे थे।
   (घ) अपने बच्चों को कंगारू ने थैली में डाल रखा था।
   (ङ) चिड़ियाघर में शेर और चीते कच्चा मांस चबा रहे थे।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क) – (ii) (ख) – (i) (ग) – (iv) (घ) – (iii)
2. (क) – (iv) (ख) – (i) (ग) – (v) (घ) – (ii) (ङ) – (iii)

6. जगदीश चंद्र बसु

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) जगदीश चंद्र बसु के पिता का नाम भगवान चंद्र बसु था।
   (ख) जगदीश चंद्र का स्कूल घर से लगभग एक किलोमीटर दूर था।
   (ग) जगदीश चंद्र बसु ने अपना अध्ययन सन् 1883 ई० में विदेश में पूरा किया।
   (घ) बेतार के तार का पहला प्रयोग जगदीश चंद्र बसु ने किया था।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग)– (iii) (घ) – (ii)
2. (क) जगदीश चंद्र ने तीन वर्ष तक अपना वेतन इसलिए नहीं लिया क्योंकि अंग्रेज अध्यापकों को भारतीय अध्यापकों से अधिक वेतन दिया जाता था और जगदीश चंद्र इस भेद-भाव का विरोध कर रहे थे।
   (ख) रेडियो के सिद्धांत की पहली खोज जगदीश चंद्र ने की थी।
   (ग) जगदीश चंद्र बसु ने एक पौधे पर वैज्ञानिक प्रयोग करके यह सिद्ध किया कि पेड़-पौधों में भी जान होती है।
   (घ) जगदीश चंद्र बसु ने संसार के सामने यह नई बात रखी कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है।
   (ङ) जगदीश चंद्र के कहने पर भगवान चंद्र बसु ने डाकू को नौकर रख लिया।
3. (क) क्षणों (ख) कुशाग्र (ग) नन्हा (घ) मार्कोनी

भाषा बोध

1. (क)– (ii) (ख) – (i) (ग) – (v) (घ) – (vi) (ङ)– (iv) (च) – (iii)
2.

विशेषण	***विशेष्य***	***विशेषण***	***विशेष्य***
नन्हा	बालक	बुरी	आदत
बीमार	पौधा	महान	वैज्ञानिक
बहुत	अंतर	छोटा	गाँव
कुशाग्र	बुद्धि	साफ	क्यारी

3. (क) सम्राट, शासक (ख) वृक्ष, बिटप (ग) ईश्वर, प्रभु (घ) प्रसिद्ध, मशहूर

7. होशियार झबरू

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) झबरू लोमड़ी ने हाथ-पाँव सेंकने के लिए कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं।
   (ख) थोड़ी देर बाद आग के पास एक बिल्ली भी आ गई।
   (ग) बिल्ली ने चिंकी चुहिया को दबोच लिया।
   (घ) लोमड़ी ने हाथ में मिर्च लेकर बिल्ली की तरफ हाथ बढ़ाया।

लिखित

1. (क)– (iii) (ख)– (i) (ग) – (ii) (घ) – (iii)
2. (क) झबरू लोमड़ी ने ठंड से बचने और हाथ-पाँव सेंकने के लिए सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके आग जलाई।
   (ख) गरमाई आने पर चिंकी को नींद आने लगी, इसलिए उसे बिल्ली के आने का पता नहीं चला।
   (ग) चिंकी को देखकर बिल्ली बोली– "अहा, चुहिया! इतनी मोटी चुहिया! इसे मैं आग में भूनकर खाऊँगी।"

(घ) चुहिया की चीख सुनकर झबरू लोमड़ी ने बिल्ली से कहा कि चिंकी मेरी दोस्त है, इसलिए तुम इसे छोड़ दो। इसके बदले में मैं तुम्हें सूखी लकड़ियाँ दूँगी, जिनसे तुम घर जाकर आग तापना और खुश रहना।
(ङ) चुहिया की जान झबरू लोमड़ी ने बचाई। उसने बिल्ली की आँखों में मिर्च डाल दीं जिससे बिल्ली घबरा गई और चिंकी उसके हाथ से छूट गई।

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क)— (ii) (ख) — (i) (ग) — (ii) (घ) — (ii)
2. बेटी, बिल्ली, पुत्री, बंदरिया, चुहिया, सेठानी
3. (क)— (ii) (ख) — (i) (ग) — (iv) (घ) — (iii) (ङ)— (vi) (च) — (v)

8. सच्चा मित्र

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) आम का बगीचा प्रथम का था।
(ख) श्याम के माता-पिता बहुत गरीब हैं।
(ग) हाथ में पत्थर प्रथम उठाता है।
(घ) श्याम प्रथम के घर पर नाश्ता करता है।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (i) (ग) — (iii)
2. (क) प्रथम ने अपने घर पर श्याम के नाश्ते का इंतजाम करके श्याम की सहायता की।
(ख) प्रथम के पिता जी ने प्रथम से कहा कि जब बाग में आम समाप्त हो जाएँगे तब श्याम का क्या होगा।
(ग) सच्चा मित्र वही होता है जो हर परिस्थिति में अपने मित्र का साथ देता है।
(घ) अपने मित्र श्याम की गरीबी के बारे में जानकर प्रथम उदास हुआ।
(ङ) प्रथम की माता जी ने प्रथम से कहा कि चिंता मत करो, श्याम आज से प्रात: का नाश्ता प्रतिदिन हमारे यहाँ ही कर लिया करेगा।
3. (क) गरीब (ख) भूखा (ग) भले (घ) उदास
4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क)—(vi) (ख)—(iv) (ग)—(v) (घ)—(iii) (ङ)—(ii) (च)— (i)
2. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv) (घ)— (v) (ङ)—(i)
3. (क) क्या श्याम को आम बहुत पसंद हैं **?**
(ख) चिंता न करो बेटा **!**
(ग) इसके लिए आप मुझे क्षमा कर दीजिए**।**
(घ) श्याम को सुबह का नाश्ता भी नहीं मिल पाता है**।**

9. आपसी मेल-जोल

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)— (ii) (ख)— (iii) (ग)— (ii) (घ)— (iii)
2. (क) यह कविता आपसी मेल-जोल के महत्व पर आधारित है।
(ख) रिमझिम करती हुई वर्षा ऋतु आई।
(ग) लँगड़े व्यक्ति ने अंधे व्यक्ति के कंधों पर बैठकर उसे राह बताई, जिससे अंधा लँगड़े को बाढ़ से दूर ले गया।
(घ) गाँव में कभी पानी का कोई कष्ट नहीं हुआ।
(ङ) वर्षा ऋतु आने पर तालाब और नदियाँ जल से भरपूर हो गए और गाँव में बाढ़ आ गई।
3. (क) नाता (ख) आँखों (ग) बाढ़ (घ) कंधों

भाषा बोध

1. (क) ग्राम (ख) कष्ट (ग) लँगड़ा (घ) सुविधा (ङ) इठलाई
2. अंधा — धंधा मेल — जोल भारी — नारी
ताल — बाल आओं — जाओ नाता — जाता

10. कूटनीतिज्ञ चाणक्य

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) नदी के किनारे पाटलिपुत्र नगर था।
(ख) कुशाग्र से नवयुवक ब्राह्मण का पैर छिल गया।
(ग) सुनंदा के नौ पुत्र थे।
(घ) सबसे बड़े नंद का नाम धनानंद था।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (i) (ग) — (iii) (घ) — (ii)
2. (क) सुनंदा के नौ पुत्र थे। वे नंद कहलाए।
(ख) महाराज स्वार्थसिद्धि चंद्रगुप्त के दादा थे। उनकी दो रानियाँ थीं सुनंदा और मुरा देवी।
(ग) चाणक्य ने चंद्रगुप्त से कहा कि मैं तुम्हें तुम्हारा सिंहासन पुन: दिलवाऊँगा।
(घ) पाटलिपुत्र को पहले कुसुमपुर कहते थे।
(ङ) चाणक्य को 'कौटिल्य' नाम से भी जाना जाता है।
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

भाषा बोध

1. (क) हमारे देश का किसान **चिलचिलाती** धूप में भी पसीना बहाता है।
(ख) भगत सिंह का नाम पूरे संसार में **सुप्रसिद्ध** था।
(ग) ताजमहल की सुंदरता पूरे विश्व में **विख्यात** है।
(घ) राज्याभिषेक होने पर ही **राजकुमार** राजा बनता है।
2. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv) (घ) — (v) (ङ) — (i)
3. (क) — (i) (ख) — (ii) (ग) — (iii) (घ) — (ii) (ङ) — (i)

11. प्रदूषण

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) माँ को देखकर दीपांशु ने रोना शुरू कर दिया।
   (ख) दीपांशु शाम को स्कूल से लौटा।
   (ग) दीपांशु के दादा जी गाँव में रहते हैं।
   (घ) सड़क पर मोटर-गाड़ियों का काला धुआँ कपड़ों और चेहरे को गंदा करता है और आखों में चुभन भी पैदा करता है।

लिखित

1. (क)— (ii) (ख)— (iii) (ग)— (ii) (घ) — (ii)
2. (क) दीपांशु को देखकर माँ इसलिए चिंतित हुई क्योकि उसका फूल-सा चेहरा मुरझा गया था।
   (ख) दीपांशु शहर की गंदगी से परेशान होने के कारण गाँव जाना चाहता था।
   (ग) इधर-उधर फैली गंदगी, कूड़ा-कचरा, वाहनों का धुआँ और वृक्षों की कमी—प्रदूषण फैलने के मुख्य कारण हैं।
   (घ) दीपांशु अब शहर नहीं छोड़ना चाहता था क्योंकि उसने निश्चय कर लिया था कि अब वह यहीं रहकर शहर को साफ-सुथरा बनाने का प्रयास करेगा।
   (ङ) दीपांशु के पिता जी ने कमरे में प्रवेश करते हुए दीपांशु से पूछा— ''क्यों बेटा! यह शहर तुम्हें अच्छा क्यों नहीं लगा?''
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓
   (ङ) ✓

भाषा बोध

1. कुरूप, बाप, बाहर, गाँव, साफ, दुखी, बुरे, दुश्मन।
2. पेड़ों, समस्याएँ, लोगों, आँखें, चेहरे, बातें, कपड़े, पौधे
3. (क) करेंगे (ख) हैं (ग) किया (घ) था

12. लकड़ी का घोड़ा

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) यूनान के राजा का नाम पेरिस था।
   (ख) पेरिस ने यूनान राज्य पर चढ़ाई कर दी।
   (ग) यूनानी समुद्र के रास्ते से ट्रॉय पहुँचे।
   (घ) ''यूनानी भाग गए, यूनानी हार गए।'' यह ट्रॉय नगर के वासियों ने कहा।

लिखित

1. (क) — (i) (ख)— (ii) (ग) — (i) (घ) — (i)
2. (क) पेरिस ने यूनान की राजधानी को खूब लूटा और यूनान की रानी हेलेन को उठाकर ट्रॉय ले गया और वहाँ उससे विवाह कर लिया। इस प्रकार उसने यूनानियों को बेइज्जत किया।
   (ख) यूनानियों ने युद्ध की तैयारी इसलिए आरंभ की, क्योंकि उन्होंने यह संकल्प लिया कि ट्रॉय पर चढ़ाई करके अपनी रानी को छुड़ाकर लाएँगे।
   (ग) यूनानियों को आते हुए देखकर ट्रॉय वालों ने अपने नगर के चारों ओर बनी दीवार के फाटक बंद कर दिए।
   (घ) ट्रॉय वालों ने नगर से बाहर निकलकर देखा कि समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा लकड़ी का घोड़ा खड़ा है। उन्होंने समझा कि यूनानी भागते समय इसे यहाँ छोड़ गए हैं। वे उस घोड़े को खींचकर अपने नगर में ले आए। फिर उन्होंने खूब जश्न मनाया और खा-पीकर रात को चैन की नींद सो गए। उस लकड़ी के घोड़े में यूनानी सैनिक छिपे थे। उन्होंने रात में घोड़े में से निकलकर ट्रॉय नगर के फाटक खोल दिए, जिससे बाहर खड़ी यूनानी सेना नगर में घुस आई। इस प्रकार यूनानियों ने ट्रॉय पर अधिकार प्राप्त कर लिया।
   (ङ) यूनानी सैनिक घोड़े के पेट से तब बाहर निकले जब उन्हें निश्चय हो गया कि ट्रॉय नगर के सब लोग सो गए हैं।
3. (क) — (iv) (ख) — (v) (ग) — (i) (घ) — (ii)
   (ङ) — (iii)

भाषा बोध

1. ट्रॉय, पेरिस, देश, राजधानी, घोड़ा, खिलौना।
2. पाकिस्तानी, राजस्थानी, पंजाबी, नेपाली, पहाड़ी।
3.

विशेषण	***विशेष्य***	***विशेषण***	***विशेष्य***
विशाल	सेना	बुद्धि	बल
पर्याप्त	सामग्री	यूनानी	सैनिक
शस्त्र	बल	मीठी	नींद
वीर	शासक	सुंदर	रानी

13. मुझे न समझो छोटा

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) भारतमाता के लिए बालक अपनी देह अर्पित करने को तैयार है।
   (ख) बालक अपने देश के लिए देह अर्पित करने, जलती लपटों से खेलने और कठिन से कठिन कष्ट झेलने को तैयार है।
   (ग) बालक सत्य, अहिंसा, प्रेम और एकता के उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ने का संकल्प करता है।
   (घ) दुनिया वाले बच्चे से शांति का पाठ सीखेंगे।
   (ङ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती हैं कि हमें अपने देश के लिए सब-कुछ करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. (क) सेज, लपटों (ख) बादल, युद्ध (ग) अर्पित, देह
   (घ) आगे, विजय
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✗ (ङ) ✗

भाषा बोध

1. बच्चे, छोटे, नारे, काले, हमारे, सच्चे।
2. (ख) काले बादल (ग) कठिन कार्य
   (घ) सुखी जीवन (ङ) शांति-दूत

14. स्वामी विवेकानंद

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) स्वामी विवेकानंद के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था।
   (ख) बालक नरेंद्र पर अपनी माता का गहरा प्रभाव पड़ा।
   (ग) बालक नरेंद्र की माता उन्हें 'शिवाजी का भूत' कहकर पुकारती थीं।
   (घ) नरेंद्र ने 'स्वामी विवेकानंद' नाम सन् 1893 ई० में ग्रहण किया।

लिखित

1. (क)— (iii) (ख) — (iii) (ग) — (ii)
2. (क) बचपन में नरेंद्रनाथ बहुत शरारती थे, इसलिए उनकी माता उन्हें 'शिवाजी का भूत' कहा करती थीं। वे मिलनसार और सबके प्रिय बालक थे। माता की धार्मिक प्रवृत्ति के प्रभाव के कारण उनकी धर्म में भी बहुत आस्था थी। बालक नरेंद्र की बुद्धि भी बहुत तीव्र थी। जो बात वे एक बार सुन लेते, उन्हें वह बात याद

हो जाती थी। उन्होंने कई वर्षों की पढ़ाई एक वर्ष में ही पूरी कर डाली थी।

(ख) नरेंद्रनाथ के गुरु का नाम स्वामी रामकृष्ण परमहंस था।

(ग) स्वामी विवेकानंद ने जीवनभर विवाह न करने और त्याग का जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा की थी।

(घ) धर्म सभा में स्वामी विवेकानंद ने कहा कि सब धर्म समान हैं। सभी धर्म एक भगवान तक पहुँचने के अलग-अलग रास्ते बताते हैं। हमें सब धर्मों की अच्छाइयाँ ग्रहण कर लेनी चाहिए।

(ङ) स्वामी विवेकानंद गरीब, दुर्बल और दुखी लोगों की सेवा करने को सबसे बड़ा धर्म मानते थे। इसलिए उन्हें 'गरीबों का मसीहा' कहा जाता है।

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. (क) शिवाजी का भूत (ख) तीव्र (ग) कई (घ) 1884 ई०

भाषा बोध

1. जन्म — मृत्यु, दरिद्र — संपन्न, तीव्र — मंद,
   युवा — वृद्ध, प्रश्न — उत्तर, प्रारंभ — अंत,
   दुर्बल — सबल, कम — अधिक
2. (क) — (iv) (ख) — (i) (ग) — (ii)
   (घ) — (v) (ङ) — (vi) (च) — (iii)
3. भोजन — खाना, पिता — जनक, शिव — शंकर,
   गुरू — शिक्षक, माता — जननी, उत्तर — जवाब

15. दुनिया नई-पुरानी

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (i) (ग) — (ii)
2. (क) दुनिया अब पहले जैसी इसलिए नहीं रही क्योंकि अब न तो पहले समय की तरह दूध-दही खाने को मिलता है, न पहले जैसे खेल-कूद हैं और न ही पहले जैसे आने-जाने के साधन हैं।

(ख) खाने-पीने का मजा पहले था। पहले खाने के लिए शुद्ध दूध-दही आदि मिलता था जबकि अब सब चीजें कृत्रिम और मिलावटी हैं।

(ग) पहले की दुनिया और आज की दुनिया में बहुत अंतर है। पहले खाने को दूध-दही मिलता था; अब आइसक्रीम और चाय-टोस्ट आदि खाए जाते हैं। पहले लोग बैलगाड़ी-ताँगे में यात्रा करते थे; अब विमानों में बैठकर विश्व की सैर की जाती है। पहले गिल्ली-डंडा, ताश, कुश्ती, कबड्डी आदि खेल खेले जाते थे; अब टेनिस और क्रिकेट जैसे खेल खेले जाते हैं।

(घ) आजकल मोटर-गाड़ी, ट्रेन, हवाई जहाज आदि तेज यात्रा के साधन हैं।

(ङ) आजकल की दुनिया पहले से अच्छी नहीं है क्योंकि आजकल की दुनिया में पहले की तरह खान-पान की वस्तुओं में शद्धता, वातावरण में शुद्धता, स्वास्थ्यवर्धक खेल और आपसी प्रेम एवं सद्भाव नहीं है।

3. (क) दुनिया, पहले, मिलता, दूध-दही।
   (ख) आइसक्रीम, चूइंगम, टोस्ट, चाय।

भाषा बोध

1. उतरना - चढ़ना, खाते - पीते, उड़ना - उतरना,
   गरम - ठंडा पुराने - नए, हम - आप
2. स्वच्छता, निर्मलता, निर्भीकता, राष्ट्रीयता, उज्ज्वलता।

16. आज्ञाकारी शिष्य

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) उद्दालक मुनि वन में आश्रम बनाकर रहते थे।

(ख) आश्रम में खेती-बाड़ी का काम आश्रम में पढ़ने वाले छात्र करते थे।

(ग) गुरुजी ने आरुणि को खेत पर यह देखने के लिए भेजा कि कहीं खेत की मेड़ तो नहीं टूट गई है।

(घ) खेत में आरुणि मिट्टी से लथपथ पड़ा था।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (i) (घ) — (iii)
2. (क) आश्रम में बालक शिक्षा प्राप्त करते थे और खेती-बाड़ी का काम भी करते थे।

(ख) आश्रम के सबसे छोटे छात्र का नाम आरुणि था।

(ग) आरुणि ने टूटी हुई मेड़ की दरार पर लेटकर पानी बहने से रोका।

(घ) रात्रि में गुरुदेव ने छात्रों से पूछा कि आरुणि कहाँ है।

(ङ) गुरु एवं माता-पिता का आदर करने वाले व उनकी आज्ञा का पालन करने वाले बालक सदा जीवन में सफल होते हैं।

3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗
   (ङ) ✓
4. आरुणि को गुरुदेव ने छाती से लगा लिया।
   आरुणि दरार में लेट गया।
   आरुणि मिट्टी से लथपथ था।
   अचानक मूसलाधार वर्षा होने लगी।

भाषा बोध

1. जल्दी - देरी शिष्य - गुरु रात्रि - दिवस
   आगे - पीछे छात्र - छात्रा बड़ा - छोटा
2. (क) — (iii) (ख) — (v) (ग) — (i)
   (घ) — (ii) (ङ) — (vi) (च) — (iv)

17. सरदार पटेल — लौह पुरुष

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सरदार पटेल का जन्म गुजरात प्रांत के नाडियाड (करमसद) नामक ग्राम में हुआ था।

(ख) सरदार पटेल के पिता का नाम झबेर भाई पटेल था।

(ग) सरदार पटेल ने बैरिस्टरी की परीक्षा इंग्लैंड से पास की।

(घ) सरदार पटेल को सन् 1930 ई० में काँग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (ii) (ग) — (i) (घ) — (ii)
2. (क) फोड़े पर जलती हुई छड़ को चुभाने वाले बालक, सरदार पटेल थे।

(ख) सरदार पटेल ने देश की एकता के लिए बहुत कार्य किए। उन्होंने छह सौ से अधिक छोटी-बड़ी रियासतों को भारत में मिलाया।

(ग) आजादी के बाद सरदार पटेल को सरकार में उपप्रधानमंत्री का पद मिला।

(घ) सरदार पटेल ने किसानों के बीच घूमकर उन्हें जाग्रत किया, उनकी दशा सुधारने के लिए अनेक आंदोलन किए और अंग्रेजों

को किसानों की दशा सुधारने के लिए मजबूर करके किसानों की कठिनाइयाँ दूर की।

(ङ) सरदार पटेल बड़े पक्के इरादे के व्यक्ति थे। वे जो सोचते, उसे पूरा कर डालते थे। मार्ग में कितनी ही बाधाएँ आएँ, वे रुकते नहीं थे। वे एक लोकप्रिय नेता और अच्छे प्रशासक भी थे। इस प्रकार वे एक वीर, साहसी, देशप्रेमी और परिश्रमी व्यक्ति थे।

3. (क) 15 अगस्त 1947 ई० (ख) इंग्लैंड
(ग) साहसी, परिश्रमी (घ) पत्नी

भाषा बोध

1. कष्ट — सुख, वीर — कायर, परिश्रम — आलस्य,
पूरा — अधूरा स्वतंत्र — परतंत्र हानि — लाभ

2. (क) जानते हो यह कैसे इलाज करता है?
(ख) जानते हो यह साहसी बालक कौन था?
(ग) सरदार पटेल देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।
(घ) सरदार पटेल वीर, साहसी, देशप्रेमी और परिश्रमी व्यक्ति थे।
(ङ) सरदार पटेल बड़े पक्के इरादे के व्यक्ति थे।

संकलित मूल्यांकन – 1 (Summative Assessment - 1)

1. (क) — (ii), (ख) — (ii), (ग) — (iii), (घ) — (iii), (ङ)— (iii)
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
3. (क) योग्य (ख) राघव (ग) गली (घ) भूनकर (ङ) क्षणों
4. (क)—(ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv) (घ) — (v) (ङ) — (i)
5.

विशेषण	*विशेष्य*	*विशेषण*	*विशेष्य*
स्वादिष्ट	खाना	सुंदर	गाँव
अमीर	आदमी	नीला	आसमान
घना	जंगल	समझदार	राजा

6. जल्दी - देरी शिष्य -गुरु रात्रि - दिवस
आगे - पीछे छात्र - छात्रा बड़ा - छोटा
सफल–असफल उत्तर -प्रश्न

7. (क) चिड़ियाघर में हिरन चौकड़ी भर रहे थे।
(ख) जगदीश चंद्र बसु ने तीन वर्ष तक अपना वेतन इसलिए नहीं लिया क्योंकि अंग्रेज अध्यापकों को भारतीय अध्यापकों से अधिक वेतन दिया जाता था और जगदीश चंद्र बसु इस बात का विरोध कर रहे थे।
(ग) चिंकी को देखकर बिल्ली बोली— "अहा, चुहिया! इतनी मोटी चुहिया! इसे मैं आग में भूनकर खाऊँगी।"
(घ) राजा ने जोकर से पूछा कि क्या तुम चाँद ला सकते हो।
(ङ) राघव एक गरीब किसान था। अपने बादशाह की अँगूठी भिखमंगे जैसे लगने वाले राघव के हाथ में देखकर, सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया।

संकलित मूल्यांकन – 2 (Summative Assessment - 2)

1. (क) — (i) (ख) — (iii) (ग) — (ii) (घ) — (ii) (ङ) — (ii)
2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
3. (क) राजनीतिज्ञ (ख) खुशी (ग) निश्चित
(घ) शिवाजी का भूत (ङ) 15 अगस्त 1947 ई०
4. (क) — (iv) (ख) — (v) (ग)— (i)
(घ) — (ii) (ङ) — (iii)
5. (क) छोटा बच्चा (ख) काले बादल (ग) कठिन कार्य
(घ) सुखी जीवन (ङ) शांति–दूत
6. (क) — (iv) (ख) — (i) (ग) — (ii)
(घ) — (vi) (ङ) — (iii) (च) — (v)
7. (क) स्वामी विवेकानंद ने जीवनभर विवाह न करने और त्याग का जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा की थी।
(ख) सरदार पटेल ने देश की एकता के लिए बहुत कार्य किए। उन्होंने छह सौ से अधिक छोटी–बड़ी रियासतों को भारत में मिलाया।
(ग) यूनानियों को आते हुए देखकर ट्रॉय वालों ने अपने नगर के चारों ओर बनी दीवार के फाटक बंद कर दिए।
(घ) सुनंदा के नौ पुत्र थे।
(ङ) रात्रि में गुरुदेव ने छात्रों से पूछा कि आरुणि कहाँ है।

रचनात्मक मूल्यांकन : 1, 2 स्वयं कीजिए।

हिंदी - 4

1. प्रार्थना

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (ii) (ग) — (iii) (घ) — (i)
2. (क) कवि ने सरस्वती माँ की भारतमाता के रूप में प्रार्थना की है।
(ख) दिशाएँ ओंकार (प्रणव) की ध्वनि को फैला रही हैं जो सभी के लिए हितकारी है; अत: कवि ने उन्हें उदार माना है।
(ग) भारतमाता के चरणों को सागर धो रहा है और उसके गले में पवित्र गंगाजलरूपी माला है, इसलिए कवि ने भारतमाता को पवित्रता का प्रतीक माना है।
(घ) भारतमाता के चरणों में कमल है।
(ङ) सरस्वती स्वरूप भारतमाता का मुकुट श्वेत बर्फ जैसा उज्ज्वल है।
3. (क) पदतल, जल, शुचि, स्तव।
(ख) हिम–तुषार, प्राण, दिशाएँ, शतमुख।

भाषा बोध

1. (क) — (ii) (ख) — (iv) (ग) — (i) (घ) — (v) (ङ) — (iii)
2. करे - धरे वसन - सुमन युगल - धवल
उदार - तुषार शतदल - पद तल
3. स्वयं कीजिए।

2. क्यों-क्यों लड़की!

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) 'क्यों-क्यों लड़की' मोइना का नाम था।
(ख) मोइना की माँ खीरी थी।
(ग) गाँव में मोइना के काम थे— बाबू की बकरियाँ घर लाना, लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना।
(घ) मोइना शबर जाति से संबंध रखती थी।

लिखित

1. (क) – (i) (ख) – (iii) (ग) – (iii) (घ) – (i)
   (ङ) – (ii)
2. (क) मोइना बाबुओं की बकरी चराती थी। लकड़ी लाना, पानी लाना और चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना भी उसका काम था।
   (ख) गाँव के पोस्टमास्टर ने मोइना का नाम 'क्यों-क्यों लड़की' इसलिए रखा, क्योंकि वह हर समय कोई-न-कोई प्रश्न करती रहती थी।
   (ग) मोइना के पिता काम की तलाश में जमशेदपुर गए हुए थे, उसकी माँ एक पैर से लँगड़ाने के कारण ज्यादा चल-फिर नहीं सकती थी और उसका भाई लकड़ी लाने जंगल जाता था। इसलिए मोइना को काम पर जाना पड़ता था।
   (घ) समिति की शिक्षिका मालती बोनाल ने जब मोइना को बताया कि उसके सवालों के जवाब किताबों में मिलते हैं तो उसने सोचा कि वह पढ़ना सीखेगी और अपने सवालों के जवाब स्वयं ढूँढ़ निकालेगी। इस प्रकार मोइना को पढ़ने की प्रेरणा मिली।
   (ङ) स्कूल में शिक्षिका मालती ने जब मोइना को बताया कि वह सुबह नौ बजे से ग्यारह बजे तक कक्षा लगाती है तो मोइना ने पाँव पटककर उससे कहा कि वह समय बदल ले क्योंकि वह ग्यारह बजे के बाद ही पढ़ने आ सकती है।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
4. (क) सिर (ख) एक (ग) उम्र (घ) माँ

भाषा बोध

1. बढ़िया - घटिया, खत्म - शुरू, बकरी - बकरा, माँ - बाप
   सुबह - शाम, बुढ़िया - जवान झोंपड़ी - महल
   निश्चित - अनिश्चित
2.

	विशेषण	***विशेष्य***
(क)	अच्छी	लड़की
(ख)	आदिवासी	लड़का
(ग)	बड़ी	झोंपड़ी
(घ)	अच्छी	शिक्षिका
(ङ)	मोटा	नेवला

3. बढ़िया - अच्छा, बेहतर। हाथ - हस्त, कर।
   जंगल - वन, अरण्य। रास्ता - मार्ग, पथ।
   माँ - जननी, माता। सुबह - सवेरा, भोर।
4. वर्ग 1 – गोशाला, तलाश (ला) वर्ग 2 – बुनाया, बनाया (ना)
   वर्ग 3 – मोइना, प्राइमरी (इ)

3. मूल्यवान उपहार

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) चीन के राजा का नाम त्साई-लून था।
   (ख) राजा ने अपनी बेटी का विवाह तीसरे राजकुमार से किया।
   (ग) दूसरा राजकुमार राजकुमारी के लिए बंदूक लाया।
   (घ) पहला राजकुमार राजकुमारी के लिए मूल्यवान रत्न लाया।

लिखित

1. (क) – (i) (ख) – (i) (ग) – (iii) (घ) – (ii)
2. (क) राजा ने तोतो-चान से कहा — "बेटी, अब तुम्हें विवाह कर लेना चाहिए। अगर तुम्हारी माँ जीवित होती, तो अब तक तुम्हारा विवाह हो गया होता। मैं तुम्हारे लिए एक अच्छा वर खोजूँगा।"
   (ख) राजा ने तीनों राजकुमारों को महल में बुलाकर उनसे कहा कि तुम तीनों जाओ और एक महीने बाद राजकुमारी के लिए उपहार लेकर आओ। जिसका उपहार सबसे मूल्यवान होगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह होगा।
   (ग) तीसरा राजकुमार इसलिए उपहार नहीं ला सका क्योंकि वह एक बीमार व्यक्ति और उसके दुखी एवं निर्धन परिवार की सहायता करने में लगा रहा था।
   (घ) राजा ने राजकुमारों को उपहार लाने के लिए एक महीने का समय दिया।
   (ङ) राजा ने तीसरे राजकुमार के साथ अपनी बेटी का विवाह इसलिए किया क्योंकि तीसरे राजकुमार के हाथों के छाले उसकी बेटी के लिए सबसे मूल्यवान उपहार थे, जो कि निर्धन एवं दुखी परिवार की सहायता के लिए मेहनत-मजदूरी करते समय उसके हाथों में पड़े थे।
3. (क) उपाय (ख) आग्रह (ग) मुस्कान (घ) युवा
   (ङ) देशों

भाषा बोध

1. (क) – (ii) (ख) – (iii) (ग) – (iv) (घ) (v)
   (ङ) – (i)
2. (क) राजकुमारी (ख) इच्छुक (ग) मूल्यवान (घ) राजकुमार
   (ङ) बुद्धिमान
3. मेहनती, लालची, ईमानदारी, वफादारी, न्यायी, आलसी।
4. (क) ईश्वर का बनाया यह **संसार** बहुत सुंदर है।
   (ख) राजा को राजकुमारी के लिए **वर** की तलाश थी।
   (ग) मैं अपने मित्र को उसका मनपसंद **उपहार** दूँगा।
   (घ) समय बहुत **मूल्यवान** होता है।
   (ङ) **राजा** अपनी प्रजा की देखभाल करता है।

4. चतुर लंबकर्ण

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) खरगोश एक तालाब के पास रहते थे।
   (ख) डरता-काँपता हाथी खरगोश के पीछे चल पड़ा।
   (ग) तालाब के पानी में चतुरदत्त ने चंद्रमा की परछाईं देखी।
   (घ) चतुरदत्त ने तालाब पर न आने का वादा किया।

लिखित

1. (क) – (ii) (ख) – (ii) (ग) – (iii) (घ) – (iii)
2. (क) खरगोश सुंदरवन के एक तालाब के पास अपने बिलों में रहते थे।
   (ख) हाथियों की बातचीत से पता चल रहा था कि वे किसी दूसरे वन से आए हैं, जहाँ वर्षा न होने के कारण सारे तालाब सूख गए हैं।
   (ग) हाथियों के तालाब के आस-पास घूमने से बहुत-से खरगोश मारे गए और बहुत-से जख्मी हो गए थे। जब हाथियों के राजा ने अपने साथियों से कहा कि हम रोजाना तालाब पर आया करेंगे तो आने वाले संकट के बारे में सोचकर सभी खरगोश परेशान हो गए।
   (घ) लंबकर्ण ने टीले पर चढ़कर चतुरदत्त से कहा कि क्या तुम्हें चंद्रताल पर आने से डर नहीं लगा। यदि भला चाहते हो तो यह वन छोड़कर अभी यहाँ से चले जाओ।
   (ङ) काँपते हुए चतुरदत्त ने लंबकर्ण से पूछा कि महाराज चंद्र कहाँ हैं, वो क्या करेंगे और मुझे उनसे क्षमा मागने के लिए कहाँ चलना होगा।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓
4. (क) चंद्रमा (ख) प्रसन्न (ग) चंद्रमा
   (घ) हाथी।

भाषा बोध

1. झुंड = समूह — मूर्ख = बुद्धू
   स्वर = आवाज — क्रोध = गुस्सा
   क्षमा = माफी — विपत्ति = संकट
   निर्दोष = निरपराध — योजना = तरकीब
2. निकट — निकटतर — निकटतम।
   कठिन — कठिनतर — कठिनतम।
   अधिक — अधिकतर — अधिकतम।
   श्रेष्ठ — श्रेष्ठतर — श्रेष्ठतम।
3. (क) — (iv) (ख) — (i) (ग) — (v) (घ) — (ii)
   (ङ) — (vi) (च) — (iii)

5. एक बूँद

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (ii) (ग) — (ii) (घ) — (ii)
2. (क) बादलों से निकलकर बूँद यह सोचने लगी कि वह अपना घर छोड़कर क्यों निकली।
   (ख) बूँद हवा के वेग से समुद्र तक पहुँची और उसमें, एक सीप के खुले मुँह में गिरकर मोती बन गई।
   (ग) बूँद की तरह घर छोड़ना लोगों के भाग्य को बदल देता है और इससे उनका जीवन सँवर जाता है।
   (घ) 'एक बूँद' कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए यदि घर को छोड़ना पड़ता है तो उसमें झिझकना नहीं चाहिए।
3. बदा, बचूँगी, अँगारे, पड़ूँगी।

भाषा बोध

1. (क) — (v) (ख) — (iv) (ग) — (iii) (घ) — (i)
   (ङ) — (ii)
2. सोचना - छोड़ना — बढ़ी - कढ़ी — घर - कर
   अनमनी - बनी — धूल - फूल — सोचते - झिझकते
3. समुंदर, मिलूँगी, किंतु, बूँद, मुँह, सुंदर, जलूँगी, पड़ूँगी।

6. वन महोत्सव

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) दीपक के स्कूल में आज 'वन महोत्सव' मनाया गया।
   (ख) विद्यालय के प्रवेश द्वार पर आम का एक वृक्ष लगाया गया।
   (ग) वृक्ष बाढ़ को रोकने में सहायक होते हैं।
   (घ) पेड़ की जड़ें पानी को सोखती हैं।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (i) (ग) — (ii) (घ) — (ii)
2. (क) विद्यालय में वन महोत्सव पर क्षेत्र के शिक्षाधिकारी ने विद्यालय के प्रवेश द्वार पर आम का एक वृक्ष लगाया। इसके बाद कार्यालय के बाहर प्रधानाचार्य महोदय ने एक अमरूद का वृक्ष लगाया। फिर सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं ने वृक्ष लगाए।
   (ख) वृक्षों से हमें फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ियाँ, ईधन, शुद्ध वायु, फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ आदि असंख्य उपयोगी वस्तुएँ मिलती हैं।
   (ग) वृक्ष भूमि पर बिछी मिट्टी को बनाए रखते हैं। यह मिट्टी वर्षा के पानी को शीघ्रता से सोखती है और बाढ़ पर नियंत्रण रखती है।
   (घ) पेड़-पौधे बादलों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस तरह वे वर्षा लाने में सहायक हैं।
   (ङ) वायु-प्रदूषण पर नियंत्रण रखने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।
3. (क) ईधन (ख) वर्षा (ग) प्रदूषण (घ) धुआँ
   (ङ) फेफड़ों
4. (क)— (iii) (ख) — (iv) (ग) — (v) (घ) — (ii)
   (ङ) — (i)

भाषा बोध

1.

विशेषण	***विशेष्य***	***विशेषण***	***विशेष्य***
इमारती	लकड़ियाँ	शुद्ध	वायु
विविध	औषधियाँ	ठंडी	छाँव
समझदार	दीपक	गीली	मिट्टी
हरी	मिर्च	आम	वृक्ष

2. (ख) — (ii) (ग) — (i) (घ) — (ii) (ङ) — (i)

7. स्वास्थ्य और व्यायाम

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) मनुष्य के लिए सबसे उपयोगी और अनिवार्य साधन उसका शरीर है।
   (ख) शरीररूपी मशीन से ठीक-ठाक काम लेने के लिए इसे प्रारंभ से ही स्वस्थ रखना आवश्यक है।
   (ग) योगासन प्रत्येक अवस्था के व्यक्तियों के लिए उपयोगी है।
   (घ) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास ने कहा है — "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।"

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (i) (ग) — (ii) (घ) — (iii)
   (ङ) — (i)
2. (क) किशोरावस्था में शरीर को फुर्तीला बनाने के लिए खेल-कूद, जिमनास्टिक, आसन, दौड़ना और तैरना अच्छे व्यायाम हैं।
   (ख) योग प्रक्रिया में किसी-न-किसी आसन को अपनाया जाता है। इसलिए व्यायाम के इस रूप को योगासन कहते हैं।
   (ग) योगासन हमारे लिए इसलिए आवश्यक है क्योंकि योगासन से शरीर के प्रत्येक अंग का व्यायाम होता है तथा तन और मन पर नियंत्रण प्राप्त हो जाता है।
   (घ) व्यायाम की मात्रा धीरे-धीरे इसलिए बढ़ानी चाहिए क्योंकि एक साथ अधिक व्यायाम कर लेने से लाभ की बजाय हानि अधिक होने की संभावना रहती है।
   (ङ) व्यायाम करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए —
      1. व्यायाम सदा खुली हवा में करना चाहिए।
      2. व्यायाम की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए।
      3. थकावट प्रतीत होने पर व्यायाम छोड़ देना चाहिए।
      4. व्यायाम सदा नियमपूर्वक करना चाहिए।
      5. भोजन के एकदम पहले या एकदम बाद व्यायाम नहीं करना चाहिए।
      6. पेट भारी होने की अवस्था में व्यायाम नहीं करना चाहिए।
3. (क) मशीन (ख) मासपेशियों (ग) नियमित
   (घ) दौड़

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
(ङ) ✗

भाषा बोध

1. (क) चिकित्सक (ख) कर्ता (ग) आलोचक
(घ) रीडर (ङ) याचक (च) पाठक
(छ) अपारदर्शी (ज) अतुलनीय
2. (क) आलस्य के कारण वह न तो घूमने जाता है, न ही व्यायाम करने।
(ख) व्यायाम के तुरंत बाद न तो पानी पीना चाहिए, न ही नहाना।
(ग) व्यायाम के बिना आदमी न तो स्वस्थ हो सकता है, न ही अच्छा।

8. पंच परमेश्वर

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी।
(ख) खाला ने अपना सरपंच अलगू चौधरी को चुना।
(ग) समझू साहु ने अपना सरपंच जुम्मन शेख को चुना।
(घ) अलगू चौधरी ने अपना बैल समझू साहु को बेच दिया।

लिखित

1. (क)— (ii) (ख) — (i) (ग) — (iii) (घ) — (i)
(ङ) — (iii)
2. (क) जुम्मन शेख ने लंबे-चौड़े वादे करके अपनी खाला से उसकी जायदाद अपने नाम करवा ली।
(ख) जायदाद जुम्मन के नाम होने के बाद उसने खाला से बुरा व्यवहार करना शुरू कर दिया।
(ग) अंत में एक दिन खाला ने जुम्मन से कहा— ''बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे कुछ रुपये दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लिया करूँगी।''
(घ) खाला ने परेशान होकर पंचायत का सहारा लिया।
(ङ) सरपंच अलगू चौधरी ने पंचायत में यह फैसला सुनाया कि जुम्मन शेख खालाजान को माहवार खर्च दे। अगर उसे खर्च देना मंजूर न हो, तो उसके नाम की गई खालाजान की जायदाद की रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।
3. (क) पंचायत (ख) तन (ग) सन्नाटे
(घ) मित्रता
4. (3) एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी।
(1) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी।
(6) जुम्मन ने फैसला अलगू के पक्ष में सुनाया।
(4) अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की।
(5) फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गया।
(2) जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी।
(7) इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया।

भाषा बोध

1. दोस्त - दुश्मन उचित - अनुचित नया - पुराना
जवाब - सवाल कड़वी - मीठी कठिन - सरल
उत्तर - प्रश्न, दक्षिण अन्याय - न्याय
2. बेटिकट - जिसके पास टिकट न हो।
बेरहम - जिसके दिल में रहम न हो।
बेशर्म - जिसको शर्म न आती हो।
बेईमान - जिसका कोई ईमान न हो।
बेसहारा - जिसका कोई सहारा न हो।
बेघर - जिसका कोई घर न हो।
3. संबंधियों, दिलों, फैसले, लताए, पेड़ों, राहें, पंचों, निगाहें।

9. किसान

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (i) (घ) — (iii)
2. (क) किसान बैलों को लेकर खेत पर जाता है।
(ख) किसान घर पर आराम इसलिए नहीं करता क्योंकि उसे हर ऋतु और हर मौसम में खेतों पर काम करना होता है।
(ग) किसान अपने खेतों की रखवाली ठिठुराने वाली ठंड में करता है।
(घ) गरमी की ऋतु में लू चलती है।
(ङ) किसान कड़ी सरदी में आग जलाकर, उसके सहारे अपने खेतों की रखवाली करता है।
3. (क) चिड़ियों, किसान (ख) गड़-गड़, बिजली
(ग) हाथ-पाँव, कौन (घ) सन-सन, धरती

भाषा बोध

1. सवेरा - शाम जागना - सोना
अच्छा - बुरा पहले - बाद में
पूरब - पश्चिम समान - असमान
गरम - ठंडा चैन - बेचैन
2. धरती — पृथ्वी, धरा। पानी — जल, नीर।
बादल — घन, जलधर। घर — गृह, निकेतन।
खेत — क्षेत्र, कृषिभूमि।

10. तेनालीरामन की चतुराई

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गाँव में एक शेर ने आतंक मचा रखा था।
(ख) तेनालीरामन, राजा कृष्णदेवराय के दरबार का विदूषक था।
(ग) शेर गाँव में पास की झाड़ियों की ओर से आता था।
(घ) गड्ढे के दूसरी ओर एक बकरी को बाँध दिया गया।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (i)
(घ) — (ii)
2. (क) गाँव के सभी लोग शेर के आतंक के कारण परेशान थे।
(ख) जब तेनालीरामन घर पहुँचा तो एक बूढ़े आदमी ने उससे कहा कि— तेनालीरामन, तुम्हारी चतुराई की तो राजा भी प्रशंसा करते हैं, फिर इस शेर के आतंक से गाँव वालों को तुम क्यों नहीं बचाते।
(ग) तेनालीरामन ने पता किया कि शेर अकसर गाँव की बाहरी सीमा पर पूर्व से उत्तर की ओर जाता है।
(घ) तेनालीरामन ने शेर को पकड़ने के लिए जहाँ शेर ने ज्यादातर लोगों का शिकार किया था, उस जगह एक गड्ढा खुदवाकर उसे घास-फूस और झाड़ियों से ढकवा दिया और गड्ढे के दूसरी तरफ एक बकरी को बँधवा दिया। फिर सबको लेकर मचान पर बैठ गया।
(ङ) तेनालीरामन ने गाँव वालों को शेर के आतंक मुक्ति दिलाई थी इसलिए राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीरामन की प्रशंसा की।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✗

भाषा बोध

1. प्रशंसा — बड़ाई, गुणगान। जंगल — वन, अरण्य।
   राजा — नृप, नरेश। रास्ता — मार्ग, पथ।
   शेर — सिंह, केसरी।
2. गाँव, पहुँचा, जंगल, प्रशंसा, पकड़ेंगे, वहाँ, आतंक, चंगुल।
3. सरलता, सहजता, विभिन्नता, विविधता।
   सामाजिक, दैनिक, मासिक, सैनिक।

11. मदर टेरेसा

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) जापानी बमवर्षक कलकत्ता (कोलकाता) पर बमवर्षा कर रहे थे।
   (ख) लोरेटो स्कूल की प्रधानाध्यापिका एग्नस थीं।
   (ग) एग्नस का जन्म यूगोस्लाविया में हुआ था।
   (घ) टेरेसा ईसाई धर्म में विश्वास रखती थीं।

लिखित

1. (क)— (iii) (ख) — (iii) (ग) — (ii) (घ) — (i)
2. (क) एग्नस का जन्म 1910 ई० में यूगोस्लाविया में हुआ था। उसके पिता निकोलस दुकान करते थे। बालिका एग्नस को बचपन से ही धर्म से गहरा लगाव था।
   (ख) एग्नस ने देखा कि सड़क के किनारे भूख से तड़पता हुआ एक व्यक्ति दम तोड़ने वाला है। उसकी दशा देखकर एग्नस का हृदय पसीज उठा और उनकी आँखों से आँसू बह निकले। इस घटना ने उन्हें गरीबों की सेवा की ओर मोड़ दिया।
   (ग) लोरेटो स्कूल छोड़ने के बाद एग्नस ने अपना नया नाम टेरेसा रखा।
   (घ) मदर टेरेसा सादा जीवन उच्च विचार रखती थीं। वे बीस-बीस घंटे काम करती थीं। वे पहनने के लिए दो धोतियाँ रखती थीं। उनका खान-पान भी गरीबों जैसा था।
   मदर टेरेसा द्वारा स्थापित संगठन की पचास से भी अधिक देशों में शाखाएँ हैं। उन्होंने गरीबों के लिए अनेक अस्पताल खोले। अनाथ बच्चों के पालन के लिए आश्रम-स्थल बनाए तथा निर्धन महिलाओं के काम सीखने के लिए केंद्र खोले।
   (ङ) मदर टेरेसा को गरीबों की सेवा करने पर सन् 1979 ई० में शांति के लिए सर्वोच्च नोबल पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया।
3. (क) भगवान (ख) 1910 (ग) भारत रत्न (घ) निर्भीक
   (ङ) प्रयत्न

भाषा बोध

1. (क) द्वितीय (ख) मूल्य (ग) वृद्धावस्था
   (घ) प्रधानाध्यापिका (ङ) आवश्यकता (च) निर्भीक
2. आत्मसम्मान, आत्मनिर्भर, आत्मग्लानि, आत्महत्या,
   स्वराज्य, स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वाभिमान।
3. (क) दुनिया, जग। (ख) माता, जननी।
   (ग) रात्रि, निशा। (घ) सूरज, भास्कर।
   (ङ) गृह, निकेतन।

12. तमिलनाडु

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) तमिलनाडु राज्य की राजधानी चेन्नई है।
   (ख) तमिलनाडु का प्राचीनतम नृत्य भरतनाट्यम है।
   (ग) 'तमिलनाडु' शब्द दो शब्दों 'तमिल' तथा 'नाडु' के योग से बना है।
   (घ) सांबर, रसम, उपमा, इडली जैसी चावल से बनी चीजें तमिलनाडु का मुख्य खाद्य हैं।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (i) (ग) — (iii) (घ) — (i)
   (ङ) — (i)
2. (क) तमिलनाडु में चोल, पल्लवों और चेर राजाओं का शासन रहा है।
   (ख) 'ऊटी प्रदेश' को 'पहाड़ों की रानी' के नाम से भी जाना जाता है।
   (ग) तमिलनाडु के प्रमुख उद्योग हैं— सूती कपड़ा, भारी वाहन, चमड़ा, मोबाइल फोन, सॉफ्टवेयर आदि।
   (घ) रामेश्वरम के समुद्र तट को तीर्थ माना जाता है, क्योंकि ऐसा विश्वास किया जाता है कि श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए इसी तट पर शिवजी की पूजा की थी तथा पुल का निर्माण किया था।
   (ङ) सांबर, रसम, उपमा, इडली जैसी चावल से बनी चीजें तमिलनाडु के मुख्य खाद्य पदार्थ हैं।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗
   (ङ) ✔

भाषा बोध

1. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iv)
   (घ)— (v) (ङ)— (vi) (च) — (i)
2.

विशेषण	***विशेष्य***	***विशेषण***	***विशेष्य***
मुख्य	व्यवसाय	प्राचीनतम	नृत्य
लंबी	तटरेखा	बहुरंगी	बालू

3. अनुस्वार वाले शब्द — परंपरा, मंदिर, पोंगल, संगीत, लंका।
   अनुनासिक वाले शब्द — यहाँ, साड़ियाँ, बाँस, ऊँचे, मकड़ियाँ।

13. हे जग के सिरजनहार प्रभो!

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)— (ii) (ख) — (i) (ग) — (iii) (घ) — (i)
   (ङ) — (ii)
2. (क) सुबह के समय चिड़ियाँ खुशी के गीत गाती हैं, कलियाँ खिल जाती हैं और घरों में होने वाली खुशबू चारों ओर फैलने लगती है।
   (ख) बहुत सुबह उठकर चिड़ियाँ खुशी के गीत गाती हैं।
   (ग) कलियाँ सुबह अपने दरवाजे खोलकर दुनिया पर मुस्काती हैं अर्थात् वे खिलकर लोगों को खुशी और खुशबू प्रदान करती हैं।
   (घ) जब वर्षा की बूँदे गिरती हैं तब ठंडी-ठंडी हवा चलती है।
   (ङ) जब छम-छम बूँदें गिरती हैं तो बिजली चम-चम करती है।
3. (क) — (ii) (ख) — (iv) (ग) — (i) (घ) — (v)
   (ङ) — (iii)

भाषा बोध

1. छम-छम, चम-चम, ठंडी-ठंडी।
2. (क)—(ii) (ख)—(iii) (ग)—(i)
   (घ)—(vi) (ङ)—(iv) (च)—(v)

3. चिड़िया – खग, पक्षी। प्रभु – ईश्वर, भगवान।
खुशबू – सुगंध, सुवास। जग – संसार, दुनिया।
हवा – वायु, पवन। सुबह – प्रातः, सवेरा।
4. चिड़ियाँ, दरवाजे, कलियाँ, लहरें, पत्ते, हवाएँ, बूँदें, मस्तियाँ।

14. इंटरनेट

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) विश्व में सबसे तीव्र गति से बढ़ने वाला जनसंचार माध्यम इंटरनेट है।
   (ख) डब्ल्यू० डब्ल्यू० डब्ल्यू० का पूरा नाम वर्ल्ड वाइड वेब है।
   (ग) एक साधारण व्यक्ति इंटरनेट और ई-मेल के जरिए किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ से संपर्क कर सकता है।
   (घ) इंटरनेट को सरल शब्दों में 'नेट' कहा जाता है।

लिखित

1. (क)–(i) (ख)–(ii) (ग)–(i) (घ)–(ii)
2. (क) इंटरनेट में दुनिया-भर के सारे कंप्यूटर समूह रूप में जुड़े हैं, जिनमें परस्पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है।
   (ख) इंटरनेट पर किसी भी विषय पर सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इसके जरिए किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ से सम्पर्क किया जा सकता है, श्रेष्ठ चिकित्सकीय सहायता प्राप्त की जा सकती है तथा दुनिया के कोने-कोने में संदेश भेजे और वहाँ से प्राप्त किए जा सकते हैं।
   (ग) डब्ल्यू० डब्ल्यू० डब्ल्यू० अर्थात् वर्ल्ड वाइड वेब संसार-भर में फैला एक काल्पनिक जाल है। इसके माध्यम से कंप्यूटर पर उपलब्ध सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।
   (घ) 'सुपर हाइवे' का अर्थ है— सूचना महामार्ग। इसके जरिए आम नागरिकों को जोड़ने का काम होता है। इसकी सहायता से प्रत्येक मनुष्य विश्व सूचना तक पहुँच सकता है। इसकी सहायता से विश्व के किसी भी विषय के विशेषज्ञ से संपर्क स्थापित किया जा सकता है और विश्व के किसी भी कोने से सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है।
   (ङ) इंटरनेट के द्वारा चिकित्सकीय सहायता शीघ्र प्राप्त करने के लिए इसके माध्यम से किसी विशेषज्ञ डॉक्टर के पास रोगी के वीडियो चित्र, ई० सी० जी० तथा अन्य रिपोर्ट तत्काल भेजे जा सकते हैं तथा तुरंत उस विशेषज्ञ का परामर्श प्राप्त किया जा सकता है।
3. (क) सूचना ढाबों (ख) इंटरनेट (ग) भंडार
   (घ) ई-मेल (ङ) सूचना समाज

भाषा बोध

1. उपलब्ध – अनुपलब्ध सुरक्षित – असुरक्षित
   महानतम – निम्नतम प्राचीनतम – नवीनतम
   विशेषज्ञ – साधारण व्यवस्थित – अव्यवस्थित
2. इंटरनेट, कंप्यूटर, हँसना, संबंधित, ढूँढ़ना, पंख, माँगना, कहानियाँ।
3. महानतम आविष्कार, लंबी इमारत, काल्पनिक जाल, लंबी नदियाँ, बहुत तीव्र, सुंदर चित्र, विशाल भंडार, गहरी मित्रता।

15. अभ्यास का महत्व

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) कौरवों और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य थे।
   (ख) एकलव्य के पिता का नाम हिरण्यधनु था।
   (ग) एकलव्य को वन में देखकर कुत्ता भौंकने लगा।
   (घ) "तुमने धनुर्विद्या किससे सीखी है?" यह द्रोणाचार्य ने कहा।

लिखित

1. (क)– (ii) (ख)– (iii) (ग)– (i) (घ)– (iii)
2. (क) एकलव्य निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र था।
   (ख) एकलव्य धनुर्विद्या सीखने के लिए द्रोणाचार्य के पास गया।
   (ग) द्रोणाचार्य ने अर्जुन को आशीर्वाद दिया कि उसके समान कोई दूसरा धनुर्धारी नहीं होगा।
   (घ) कुत्ते के भौंकने पर एकलव्य ने एक साथ सात बाण छोड़े, जो कुत्ते के मुँह में घुस गए जिससे कुत्ते का भौंकना बंद हो गया।
   (ङ) एकलव्य की धनुर्विद्या देखकर अर्जुन ने द्रोणाचार्य से कहा कि आपने मुझसे कहा था कि मेरे समान धनुर्धारी आपका कोई दूसरा शिष्य न होगा, परंतु निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य धनुर्विद्या में मुझसे अधिक निपुण है, जो आपका ही शिष्य है।
3. (क) पांडवों (ख) अर्जुन (ग) कौरवों
   (घ) हिरण्यधनु

भाषा बोध

1. स्वच्छता, निर्मलता, सभ्यता, सत्यता, लघुता, शत्रुता।
2. गुरु – शिष्य आशीर्वाद – शाप
   युद्ध – शांति बहुत – कम
   श्रेष्ठ – नीच निपुण – अनिपुण
   प्रसन्न – दुखी दिन – रात

16. हमारे पर्व

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) हम अपने महापुरुषों के जन्मदिन को पर्व के रूप में मनाते हैं।
   (ख) श्रीराम का जन्मदिवस 'रामनवमी' के रूप में मनाया जाता है।
   (ग) 'ओणम' पर्व केरल राज्य में मनाया जाता है।
   (घ) मुसलमान भाई 'ईद' का त्योहार धूमधाम से मनाते हैं।

लिखित

1. (क)– (ii) (ख) – (ii) (ग) – (iii) (घ) – (ii)
2. (क) गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) तथा गांधी जयंती (2 अक्टूबर) हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं।
   (ख) 'बिहु' पर्व असम राज्य में मनाया जाता है।
   (ग) हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिन को 'मिलाद-उन-नबी' कहा जाता है।
   (घ) क्योंकि भारत में कहीं-न-कहीं रोजाना कोई-न-कोई पर्व मनाया जाता है इसलिए भारत को पर्वों का देश कहा गया है।
   (ङ) हमारे देश का संविधान 26 जनवरी सन् 1950 ई० को लागू हुआ।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗
4. (क)–(vi) (ख)–(v) (ग)–(ii)
   (घ)–(i) (ङ)–(iii)

भाषा बोध

1. पर्वों, वर्षों, धर्मों, फूलों, महापुरुषों, त्योहारों।
2. कार्यक्रम, चैत्र, जन्मदिन, राष्ट्रीय, उत्साह, प्रथम।
3.

विशेषण	*विशेष्य*	*विशेषण*	*विशेष्य*
पवित्र	दिन	अनोखी	समानता
प्रमुख	त्योहार	प्रिय	सखी
राष्ट्रीय	पर्व	नव	वर्ष

17. चतुर चितेरा

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)—(iii) (ख)—(ii) (ग)—(iii) (घ)—(ii)
2. (क) शेर को देखकर चित्रकार के होश उड़ गए और उसका चित्र बनाने का जोश गायब हो गया।
   (ख) चित्रकार ने हिम्मत करके शेर से कहा कि— आप बैठ जाइए, मैं आपका सुंदर चित्र बना दूँगा।
   (ग) चित्रकार ने शेर का आगे का चित्र बनाकर, फिर पीछे का चित्र पूरा करने के लिए, शेर से मुँह दूसरी ओर करने को कहा। जैसे ही शेर मुँह फिराकर बैठा, चित्रकार तुरंत वहाँ से भाग निकला।
   (घ) शेर ने खिसियाकर चित्रकार से कहा कि— अरे डरपोक! अपनी नाव रोककर अपने कलम-कागज तो ले जा।
   (ङ) अंत में चित्रकार ने शेर से कहा कि— आप कलम और कागज अपने पास ही रखिए और इनसे जंगल में चित्रकला का अभ्यास कीजिए।
3. (क) उकरू-मुकरू, चित्रकार, आगे, सरदार।
   (ख) बाँस, चित्रकार, नाव, शेर।

भाषा बोध

1. (ख) उसे चुपचाप देखकर उसको कुछ हिम्मत आई।
   (ग) उसे देखकर चित्रकार के तुरंत होश उड़ गए।
   (घ) वह सारे अंग बटोरकर उकरू-मुकरू बैठ गया।
   (ङ) आप जंगल में चित्रकला का अभ्यास कीजिए।
2. तुरंत - देरी से मित्र - शत्रु
   सुनसान - चहल-पहल होश - बेहोश
   पहाड़ - घाटी सुंदर - कुरूप
   ध्यान - व्यवधान जंगल - शहर

18. चंद्रमा की यात्रा

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) चंद्रमा पर सबसे पहले पहुँचने वाले यात्रियों के नाम थे — नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन।
   (ख) चंद्रमा पर दो सप्ताह का दिन होता है।
   (ग) चंद्रमा पर तीन यात्री गए थे।
   (घ) चंद्रयात्री अपोलो-11 यान से चंद्रमा पर गए थे।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (ii) (ग) — (i)
   (घ) — (ii)
2. (क) चंद्रयान को रॉकेट की सहायता से ऊपर भेजा जाता है।
   (ख) अपोलो-11 में तीन भाग थे— कमांड मोड्यूल, सर्विस मोड्यूल तथा ईगल।
   (ग) चंद्रमा पर उतरकर यात्रियों ने चंद्रमा की चट्टानों के टुकड़े और वहाँ की मिट्टी के नमूने एकत्र किए। उन्होंने अमेरिका का राष्ट्रीय ध्वज चंद्रमा पर गाड़ दिया और जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक यंत्र वहाँ पर रखे।
   (घ) चंद्रमा पर अनेक विचित्र बातें हैं; जैसे— वहाँ दो सप्ताह का दिन होता है और इतनी ही लंबी रात होती है। हवा न होने के कारण वहाँ बहुत ठंड होती है या बहुत गरमी। वहाँ पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य भी नहीं हैं।
   (ङ) अपना काम पूरा करके दोनों चंद्रयात्री चंद्रमा से उड़ान भरकर अपने मुख्य यान 'कमांड मोड्यूल' में जा पहुँचे जिसमें उनका तीसरा साथी कालिन्स बैठा था। उन्होंने 'ईगल' को अंतरिक्ष में छोड़ दिया और अपनी यात्रा पूरी करके अपने मुख्य यान द्वारा सकुशल प्रशांत महासागर में उतर आए।
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗
4. (क) एल्ड्रिन (ख) काला (ग) सप्ताह (घ) वायुयान

भाषा बोध

1. चंद्रयात्रियों, पौधे, चट्टानें, ग्रहों, छलाँगें, पेड़ों, वायुयानों, सामानों।
2. (क) हवाई जहाज द्वारा हम लोग एक देश से दूसरे देश में पहुँच जाते हैं।
   (ख) अपना काम पूरा करके मुसाफिरों ने चंद्रमा से उड़ान भरी।
   (ग) चंद्रमा पर यात्री पानी अपने साथ ले गए थे।
   (घ) चंद्रमा पर वृक्ष नहीं हैं।
   (ङ) 1969 ई० में मानव ने चंद्रमा पर अपनी जीत का झंडा फहरा दिया।
3. चाँद, आँसू, चंद्रमा, हूँ, आँख, चंद्रयात्री, प्रबंध, जाँच, सँभलकर, छलाँग।

संकलित मूल्यांकन 1 (Summative Assessment - 1)

1. (क)—(iii) (ख)—(ii) (ग)—(i) (घ) (iii)
2. (क) सन्नाटे (ख) चंद्रमा (ग) ईधन
   (घ) प्रसन्न (ङ) एक
3. (क)—(ii) (ख)—(iv) (ग)—(i)
   (घ)—(v) (ङ)—(iii)
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓
   (ङ) ✗
5. समुंदर, मिलूँगी, किंतु, बूँद, मुँह, सुंदर, जलूँगी, पड़ूँगी।
6. (क) वृक्ष, विटप। (ख) पुष्प, कुसुम।
   (ग) पर्वत, नग। (घ) जंगल, अरण्य।
   (ङ) मेघ, जलधर।
7. चंद्रयात्रियों, पौधे, चट्टानें, ग्रहों, छलाँगें, पेड़ों, वायुयानों, सामानों।
8. (क) हाथियों के तालाब के आसपास घूमने से बहुत-से खरगोश मारे गए और बहुत- से जख्मी हो गए थे। जब हाथियों के राजा ने अपने साथियों से कहा कि हम रोजाना तालाब पर आया करेंगे, तो आने वाले संकट के बारे में सोचकर सभी खरगोश परेशान हो गए।
   (ख) बादलों से निकलकर बूँद यह सोचने लगी कि वह अपना घर छोड़कर क्यों निकली।
   (ग) अंत में एक दिन खाला ने जुम्मन से कहा— "बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे कुछ रुपये दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लिया करूँगी।"
   (घ) मोइना के पिता काम की तलाश में जमशेदपुर गए हुए थे, उसकी माँ एक पैर से लँगड़ाने के कारण ज्यादा चल-फिर नहीं सकती थी और उसका भाई लकड़ी लाने जंगल जाता था। इसलिए मोइना को काम पर जाना पड़ता था।
   (ङ) सरस्वती स्वरूप भारतमाता का मुकुट श्वेत बर्फ जैसा उज्ज्वल है।

संकलित मूल्यांकन - 2 (Summative Assessment - 2)

1. (क)—(iii) (ख)—(i) (ग)—(ii)
   (घ)—(i) (ङ)—(i)
2. (क) अर्जुन (ख) मशीन (ग) सूचना प्रौद्योगिकी
   (घ) 1910 (ङ) काला

3. (क)—(vi) (ख)—(v) (ग)—(iii) (घ)— (i) (ङ)—(ii) (च)—(iv)
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
5. अनुपलब्ध, असुरक्षित, निम्नतम, नवीनतम, साधारण, अव्यवस्थित, कमजोर, अस्वस्थ।
6. विनम्रता, सरलता, सहजता, विभिन्नता, विविधता।
नागरिक, सामाजिक, दैनिक, मासिक, सैनिक।
7. कार्यक्रम, चैत्र, जन्मदिन, राष्ट्रीय, उत्साह, प्रथम।
8. (क) गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) तथा गांधी जयंती (2 अक्टूबर) हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं।
(ख) कलियाँ सुबह अपने दरवाजे खोलकर दुनिया पर मुस्काती हैं अर्थात् वे खिलकर लोगों को खुशी और खुशबू प्रदान करती हैं।
(ग) योग की प्रक्रिया में किसी-न-किसी आसन को अपनाया जाता है, इसलिए व्यायाम के इस रूप को योगासन कहते हैं।
(घ) तमिलनाडु के प्रमुख उद्योग हैं— सूती कपड़ा, भारी वाहन, चमड़ा, मोबाइल फोन, सॉफ्टवेयर आदि।
(ङ) चित्रकार से हिम्मत करके शेर से कहा कि— आप बैठ जाइए, मैं आपका सुंदर चित्र बना दूँगा।

रचनात्मक मूल्यांकन - 1, 2 : स्वयं कीजिए।

हिंदी - 5

1. सरस्वती वंदना

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (ii) (ख) — (iii) (ग) — (ii) (घ) — (iii)
2. (क) वीणा-वादिनी से यह वरदान माँगा गया है कि वे भारत के जन-जन के हृदय में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अमर शक्ति का संचार कर दें।
(ख) 'अमृत-मंत्र नव' का अर्थ है — स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उद्घोषरूपी नया मंत्र जो अमृत शक्ति से पूर्ण है।
(ग) कवि विद्या की देवी से अज्ञान के अंधकार को हटाने और ज्ञान की धारा बहाने का वरदान माँग रहा है।
(घ) कवि ने भारत के प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रतारूपी नवीन आकाश के नए पक्षा के समान माना है।
3. (क) काट, ज्योतिर्मय, कलुष, जगमग।
(ख) वीणा-वादिनी, स्वतंत्र-रव, मंत्र, भारत।
4. (क)—(ii) (ख)—(iv) (ग)—(v)
(घ)—(iii) (ङ)—(vi) (च)—(i)

भाषा बोध

1. वर - भर जलद - वाद
मंत्र - स्वतंत्र नवल - धवल
अंध - बंध स्तर - कर
जग - पग विहग - सजग
2. अप्रिय, अंधकार, विष, धरा, परतंत्र, जनक।
3. (क) मेघ, बादल। (ख) आकाश, आसमान।
(ग) संसार, विश्व। (घ) माता, जननी।
(ङ) पक्षी, खग।

2. काबुलीवाला

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) काबुलीवाला किशमिश-बादाम आदि बेचने वाला काबुली पठान था। उसका नाम रहमत था।
(ख) रहमत को कई साल की सजा हुई थी।
(ग) मिनी पाँच वर्ष की थी।
(घ) रहमत को दो सिपाही बाँधे लिए जा रहे थे।

लिखित

1. (क)—(i) (ख)—(ii) (ग)—(iii) (घ)—(iii) (ङ)—(i)
2. (क) काबुलीवाले को देखकर मिनी इसलिए डर जाती थी क्योंकि उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाला उस जैसे छोटे बच्चों को पकड़कर अपनी झोली में बंद कर लेता है।
(ख) काबुली वाले को देखकर मिनी इसलिए घर के भीतर भाग गई क्योंकि उसे डर था कि काबुलीवाला कहीं उसे पकड़ न ले।
(ग) मिनी का डर दूर करने के लिए मिनी के पिता ने उसे काबुलीवाले से मिलवाया। इस प्रकार मिनी और काबुलीवाले में मित्रता हो गई।
(घ) रहमत ने एक व्यक्ति को छुरा मार दिया था, इसलिए सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया था।
(ङ) मिनी के पिता ने रहमत को अपने घर जाने के लिए इसलिए कहा ताकि वह अपनी बेटी से मिल सके।
3. (क) रहमत (ख) मिनी (ग) चादर
(घ) काली स्याही
4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. पास - दूर स्पष्ट - अस्पष्ट
सुख - दुख साँस - नि:श्वास
अंदर - बाहर प्रसन्न - दुखी
बड़ी - छोटी जमीन -आसमान
2. दिन — दिवस काम — कार्य
हाथ — हस्त सड़क — पथ
झूठ — असत्य घर — गृह
काक — कौआ आकाश — नभ
3. (क) आपकी जैसी मेरी भी एक लड़की है।
(ख) लल्ली, सास के घर जा रही है क्या?
(ग) मैं यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।
(घ) कुछ देर तक काबुलीवाला मिनी से बातें करता रहा।
(ङ) एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी।
4. (क) रोहन **कभी-कभी** सिनेमा देखने जाता है।
(ख) इस कमरे में **क्या-क्या** सामान रखा है?
(ग) एक दिन **घूमते-घूमते** मैं पार्क जा पहुचा।
(घ) बूढ़ा आदमी बहुत **धीरे-धीरे** चल रहा था।
(ङ) किसी से **रोज-रोज** उधार माँगना ठीक नहीं होता।

3. चतुर गड़रिया

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गड़रिए का नाम भोला था।
(ख) पहाड़ी पर घूमते हुए गड़रिए को एक कीमती पत्थर (हीरा) मिला।
(ग) भोला हीरे को लेकर जौहरी के पास गया।
(घ) अंत में हीरा भोला को मिला जिसे राजा ने खरीद लिया।

लिखित

1. (क)—(ii) (ख)—(i) (ग)— (iii) (घ) — (ii)
   (ङ)— (i)
2. (क) हीरे पर अधिकार का विवाद निपटवाने के लिए भोला और जौहरी राजा के पास गए।
   (ख) भोला ने राजा के सामने यह प्रस्ताव रखा कि क्यों न वे सब चलकर उसी पवित्र पहाड़ी से पूछें जिसने उसे यह हीरा उठाते हुए देखा है। पर्वत देवता जो बोलेंगे, वह मान्य होगा।
   (ग) भोला ने पर्वत से दो बातें पूछीं —
   (i) यह हीरा जौहरी का है या भोला का?
   (ii) यह हीरा जौहरी को मिलना चाहिए या भोला को?
   (घ) राजा ने भोला और जौहरी से कहा कि तुम दोनों में से कोई एक व्यक्ति झूठ बोल रहा है। तुम लोग प्रमाण सहित सिद्ध करो कि यह हीरा तुम्हारा है।
   (ङ) अंत में राजा ने सोने के सिक्के देकर भोला से हीरा ले लिया।
3. (क) देवगढ़ (ख) जौहरी (ग) हीरा
   (घ) गड़रिए (ङ) राजा
4. (क) जौहरी (ख) गड़रिए (ग) भोला (घ) पर्वत

भाषा बोध

1. पवित्र पहाड़ी, सारा नगर, चमचमाता हीरा, घना जंगल, लालची व्यक्ति, कीमती पत्थर।
2. (क) वृक्ष, बिटप, पादप। (ख) पहाड़, नग, भूधर।
   (ग) नृप, शासक, नरेंद्र। (घ) वन, अरण्य, कांतार।
3. पर्वतों की शृंखला, सेना की टुकड़ी, नोटों की गड्डी, पक्षियों का झुंड, अंगूरों का गुच्छा, टिड्डियों का दल।
4. जंगल – शहर मूर्ख – विद्वान
   पहला – आखिरी सुबह – शाम
   प्रश्न – उत्तर अनमोल – मूल्यवान
   झगड़ा –सुलह ध्वनि – प्रतिध्वनि

4. अवरोध पर जीत

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सुरेंद्र दृष्टिहीन छात्र था।
   (ख) दृष्टिहीन बच्चे ब्रेल लिपि द्वारा पढ़ सकते हैं।
   (ग) ब्रेल लिपि में विशेष उपकरण से अक्षरों को मोटे कागज पर उभारा जाता है।
   (घ) मध्यावकाश के समय कुछ विद्यार्थी पेड़ों के नीचे और कुछ विद्यार्थी कक्षा में अपना भोजन खा रहे थे।

लिखित

1. (क)—(i) (ख)—(iii) (ग)—(ii) (घ)—(ii)
   (ङ)— (ii)
2. (क) सुरेंद्र क्योंकि दृष्टिहीन था, अत: उसके कक्षा में प्रवेश लेने पर बच्चों को इसलिए हैरानी हो रही थी कि वह बिना आँखों के पढ़ेगा कैसे?
   (ख) दृष्टिहीन बच्चे एक विशेष लिपि द्वारा पढ़ते हैं जिसे ब्रेल लिपि कहा जाता है। इसमें एक विशेष उपकरण से मोटे कागज पर अक्षरों को उभारा जाता है, जिन्हें अंगुली से छूकर पढ़ा जाता है। ब्रेल लिपि में छह बिंदु होते हैं, जिन्हें अनेक प्रकार से मिलाकर अक्षर उभारे जाते हैं।
   (ग) ब्रेल लिपि से दृष्टिहीनों का बहुत उपकार हुआ क्योंकि आज इसकी सहायता से दृष्टिहीन व्यक्ति ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
   (घ) भोजन में विटामिन 'ए' की कमी के कारण और समय पर चिकित्सा न मिलने के कारण आँखें खराब हो जाती हैं।
   (ङ) आँखों की सुरक्षा के लिए भोजन में विटामिन 'ए' युक्त पदार्थों जैसे फल और हरी सब्जियों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही गुल्ली-डंडा, पटाखों आदि से आँखों की सुरक्षा करनी चाहिए।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

भाषा बोध

1. कल - आज ऊँची - नीची
   साफ - गंदा हार - जीत
   उत्सुकता - उदासीनता आलसी - फुर्तीला
   विशेष - साधारण उपयोगी - अनुपयोगी
2. अमरता, मानवता, शत्रुता, सहजता, सरलता, आवश्यकता, सुगमता, अज्ञानता, सफलता, मित्रता।
3. फ्रांस, हाँ, यहाँ, अंगुली, आँख, नहीं, घंटी, जाँच, ठंड, माँ।

5. चंद्र खिलौना

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) — (iii) (ख) — (i) (ग) — (ii)
2. (क) पूर्ण चंद्रमा को देखकर उसे लेने के लिए शिशु मचल गया।
   (ख) शिशु ने माता का कहना इसलिए नहीं माना क्योंकि उसे पूर्ण चंद्रमारूपी खिलौना बहुत ही अच्छा लगा और वह उसे हर हाल में लेना चाहता था।
   (ग) माता ने दर्पण में चंद्रमा का प्रतिबिंब दिखाकर शिशु को बहलाया।
   (घ) दर्पण में चंद्रमा की परछाईं देखकर शिशु ने दर्पण की ओर हाथ बढ़ाया।
   (ङ) प्रस्तुत कविता के रचयिता गोपाल शरण सिंह हैं।
3. (क) परछाईं, शिशु, चंद्रवदनी, मन।
   (ख) चंद्रमा, खिलौना, माता, ऊधम।

भाषा बोध

1. भाया – मचाया मचल – सचल
   मानकर – विलोककर दर्पण – अर्पण
   बढ़ाया – बनाया बहलाया – समाया
   मन – धन हीन – दीन
2. अनेक, शिशुओं, विधियाँ, माताएँ, हाथों, दर्पणों।
3. (क) चाँद, इंदु, राकापति। (ख) कर, हस्त, बाँह।
   (ग) गृह, निकेत, आवास। (घ) माँ, जननी, जन्मदात्री।
   (ङ) भू, भूमि, धरा।

6. छोटा झूठ

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) आबीन एक काला दास था।
   (ख) आबीन का गुण यह था कि वह सिद्धांतवादी था।
   (ग) व्यापारी ने आबीन को एक वर्ष के लिए खरीद लिया।
   (घ) आबीन ने मालिक से यह झूठ बोला कि मालिक की पत्नी और बच्चे शयनकक्ष की दीवार के नीचे दबकर मर गए हैं।

लिखित

1. (क)— (iii) (ख)— (i) (ग)— (i) (घ)— (iii)
   (ङ)— (ii)
2. (क) आबीन के बताने पर व्यापारी को उसके सिद्धांत का पता लगा।
   (ख) व्यापारी ने घर से कुछ सामान मँगवाने के लिए आबीन को घर भेजा।
   (ग) आबीन ने मालकिन से यह झूठ बोला कि मालिक जब भोजन कर रहे थे तो छत गिर पड़ी जिसके नीचे मालिक एवं कई अन्य लोग दबकर मर गए।

(घ) आबीन ने जब व्यापारी से झूठ बोला तो व्यापारी दुख में पागल हो गया। उसने लोहे की छड़ उठाई और महल में स्थित हर चीज को तोड़ने लगा।
(ङ) कहानी के अंत में सुल्तान ने दास प्रथा को समाप्त करा दिया। बाजार से दासों का व्यापार बंद करा दिया। सुल्तान ने यह भी घोषणा की कि यदि कोई व्यक्ति नौकर रखना चाहता है तो उसे नौकर को महीने की तनख्वाह और अन्य सुविधाएँ देनी पड़ेंगी।

3. (क) काला (ख) ईमानदारी (ग) दास
(घ) अमीर

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓
(ङ) ✗

भाषा बोध

1. विश्वास = यकीन व्यतीत = बीता हुआ
झूठ = असत्य व्यस्त = कार्यरत
अमीर = धनी आदेश = आज्ञा
आदत = स्वभाव दुख = परेशानी
माह = महीना गरीब = धनहीन

2. अच्छाई, व्यापारी, बुराई, उपहार, सरलता, उपदेश, गंभीरता, मेहनती।

3. (क) की, कि, की (ख) की (ग) कि (घ) की
(ङ) की, कि

7. कल्पना चावला

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) कल्पना चावला ने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज तथा टेक्सास विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।
(ख) कल्पना चावला 'कोलंबिया' नामक यान से अंतरिक्ष-यात्रा पर गई थीं।
(ग) चाँद पर जाने वाले पहले भारतीय का नाम राकेश शर्मा था।
(घ) कल्पना चावला का जन्म हरियाणा राज्य के करनाल शहर में हुआ था।

लिखित

1. (क) — (i) (ख) — (ii) (ग) — (iii) (घ) — (i)

2. (क) कल्पना चावला एक भारतीय अंतरिक्ष-यात्री थीं।
(ख) कल्पना चावला 'आकाशगंगा की निवासी' बनने का सपना देखा करती थीं।
(ग) कल्पना चावला ने प्रथम अंतरिक्ष-यात्रा सन् 1997 ई० में 16 दिनों तक की।
(घ) दूसरी अंतरिक्ष-यात्रा में लौटते समय यान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण कल्पना चावला की अपने साथियों समेत मृत्यु हो गई, जिससे उनकी यह यात्रा सफल न हो सकी।
(ङ) कल्पना चावला की मातृभूमि करनाल थी। अत: अंतरिक्ष-यात्रा में उनकी मृत्यु होने पर करनाल विशेष रूप से दुख में डूब गया।

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क) अध्यापिका, गुरुआनी, ज्ञानदात्री।
(ख) जोश, उमंग, साहस।
(ग) प्रसन्नता, संतुष्टि, उल्लास।
(घ) इंतजाम, प्रबंध, तैयारी।
(ङ) निशाना, उद्देश्य, मंजिल।

2. मिठाइयाँ, आतिबाजियाँ, खुशियाँ, छात्रों, यात्राएँ, रास्ते, वैज्ञानिकों, आयोजनों।

8. ओलंपिक खेल

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) ओलंपिक खेलों का जन्मदाता हरक्युलिस था।
(ख) ओलंपिक नाम की जगह यूनान में है।
(ग) आधुनिक युग का पहला ओलंपिक सन् 1896 ई० में आयोजित हुआ।
(घ) ओलंपिक ध्वज की पृष्ठभूमि सफेद है।

लिखित

1. (क)— (ii) (ख) — (iii) (ग) — (iii) (घ) — (ii)
(ङ) — (ii)

2. (क) ओलंपिक खेलों का उद्देश्य है— खिलाड़ियों के भीतर की क्षमता, गुण और शक्ति को प्रकट करना।
(ख) ओलंपिक खेलों को फिर से बैरन पियरे द कूबर्ते ने आरंभ किया।
(ग) 'एकविल संस्था' की स्थापना फ्रांस के विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से की गई।
(घ) ओलंपिक खिलाड़ियों के लिए आवश्यक है कि वे राजनीतिक, धार्मिक और व्यावसायिक प्रभाव से अलग रहें।
(ङ) ओलंपिक खेलों के माध्यम से विश्व के विभिन्न देश एक-दूसरे के निकट आए हैं, जिससे उनमें आपसी सद्भाव बढ़ा है।

3. (क) ओलंपिक (ख) हरक्युलिस (ग) 1896
(घ) 1888

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. सद्भाव - दुर्भाव विजय - पराजय
मानसिक - शारीरिक पृष्ठभूमि - मुख्यभूमि
उद्देश्य - निरुद्देश्य मित्रता - शत्रुता
आधुनिक - प्राचीन पसंद - नापसंद
अनुशासित - उद्दंड निकट - दूर

2. खेलों, देशों, खिलाड़ियों, महिलाएँ, विद्यालयों, बातें, प्रतियोगिताएँ, वर्षों।

3. आयोजित, एकत्रित, विकसित, शिक्षित।
शारीरिक, मानसिक, प्रारंभिक, शैक्षिक।

4.

	व्यक्तिवाचक संज्ञा	*जातिवाचक संज्ञा*
(क)	भारत	खेलों
(ख)	फ्रांस	विद्यालयों
(ग)	हरक्यूलिस	देशों
(घ)	चीन	ध्वज
(ङ)	कूबर्ते	खिलाड़ी

9. गांधी जी की हिंसा

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)— (i) (ख) — (iii) (ग) — (i)
(घ) — (ii)

2. (क) रात के अँधेरे में गांधी जी से मिलने नेहरू जी गए।
(ख) पंडित जी अँधेरे में गांधी जी की लाठी से टकराए क्योंकि वह उन्हें अंधेरे के कारण नहीं दिखाई दी।
(ग) नेहरू जी ने गांधी जी से पूछा कि आप तो प्रेम और अहिंसा के पक्ष में रहते हैं, फिर यह लाठी क्यों रखते हैं।
(घ) गांधी जी ने नेहरू जी से कहा कि अपने आस-पास के ऊधमी लड़कों को ठीक रखने के लिए मैं यह लाठी रखता हूँ तो इस बात पर वे दोनों हँस पड़े।

3. (क) रात, कोने, लाठी, गांधी।
(ख) झल्लाकर, हामी, मोटा, बगल।

भाषा बोध

1. छड़ी - घड़ी   टकरा - घबरा
   डला - भला   साथ - हाथ
   लड़खड़ाकर - झल्लाकर   भोले - बोले
2. (क)—(iv) (ख)—(i) (ग)—(vi) (घ)—(iii)
   (ङ)—(ii) (च)—(v)
3. चढ़ना, बढ़ना, झुकना, जुड़ना, हारना।
4. बल - लब, दया - याद, कोर - रोक, बस - सब

10. गुणवान तेनालीरामन

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) तेनालीरामन तेनाली गाँव का रहने वाला था।
   (ख) कृष्णदेव राय के राजगुरु भट्टाचार्य थे।
   (ग) तेनालीरामन अपने मुँह को एक नकली चेहरे से ढककर दरबार में आया।
   (घ) महावत तेनालीरामन था।

लिखित

1. (क)—(i) (ख)—(i) (ग)—(ii) (घ)—(iii)
   (ङ)—(ii)
2. (क) तेनालीरामन एक विदूषक था। उसका असली नाम रामन था। तेनाली गाँव का रहने वाला होने के कारण उसे तेनालीरामन कहते थे।
   (ख) तेनालीरामन ने विद्वान के तर्क का यह उत्तर दिया कि— मान लीजिए, हम कोई चीज खाना चाहते हैं, तो क्या केवल यह मान लेना ही उचित है कि हम वह चीज खा रहे हैं।
   (ग) एक दिन अप्रसन्न होकर महाराज कृष्णदेव राय ने तेनालीरामन से कहा कि— जाओ मुझे अपना मुँह मत दिखाना। इसलिए तेनालीरामन अपने मुँह को एक नकली चेहरे से ढककर दरबार में आया ताकि महाराज उसका मुँह न देख सकें।
   (घ) जिस हाथी पर राजा कृष्णदेव राय बैठे थे, तेनालीरामन चुपके से उसका महावत बन गया और हाथी को निर्धनों के गाँव में ले गया। इस प्रकार राजा निर्धनों के गाँव में पहुँचे।
   (ङ) तेनालीरामन के विषय में 'जहाँ चाह वहाँ राह' उक्ति इस प्रकार चरितार्थ होती है कि— तेनालीरामन की चाह थी कि वह महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में जाए, और इसमें उसने बिना किसी सहायता के सफलता प्राप्त की।
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗
   (ङ)✓
4. (क)—(ii) (ख)—(iv) (ग)—(i) (घ)—(iii)

भाषा बोध

1. प्रसन्न - दुखी   इच्छा - उदासीनता
   जाना - आना   धीर - उद्विग्न
   सुना - अनसुना   सुविधा - असुविधा
2. स्त्रीलिंग — कवयित्री, अध्यापिका, वीरांगना, सम्राज्ञी।
   बहुवचन — स्त्रियाँ, कहानियाँ, शुभकामनाएँ, वीरांगनाएँ।
3. क्रुद्ध = क्रोधित   इच्छा = अभिलाषा
   साहस = हिम्मत   मदद = सहायता
   प्रतीक्षा = इंतजार   अपराध = गुनाह
   निश्चय = संकल्प   प्रशंसा = बड़ाई
4. (क) आप हमारे घर आए, यह हमारा **सौभाग्य** है।
   (ख) कर्महीनता, **निर्धन** होने की निशानी है।
   (ग) विपत्ति के समय भी **साहस** नहीं छोड़ना चाहिए।
   (घ) अच्छे बच्चों की सभी **प्रशंसा** करते हैं।
   (ङ) हमेशा अपनी बात पर **अटल** रहना चाहिए।

11. एक अद्भुत इंजन : हमारा शरीर

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सामान्य नियमों का पालन करने से व्यक्ति नीरोग और दीर्घायु रहता है।
   (ख) इंजन को चलाने के लिए डीजल की आवश्यकता होती है।
   (ग) संतुलित आहार मिलने पर शरीररूपी इंजन बदस्तूर काम करता रहता है।
   (घ) दूध एक संपूर्ण आहार है।

लिखित

1. (क)—(ii) (ख)—(iii) (ग)—(i) (घ)—(ii)
   (ङ) – (i)
2. (क) हमारा शरीर एक विचित्र इंजन है, क्योंकि कोई इंजन खराब होने पर उसे ठीक कराना पड़ता है; परंतु हमारा शरीररूपी इंजन खुद-ब-खुद ठीक होने की क्षमता रखता है।
   (ख) जिस प्रकार इंजन और डीजल में समानता है उसी प्रकार हमारे शरीर और भोजन में समानता है। इंजन को चलाने के लिए डीजल चाहिए और शरीर को चलाने के लिए भोजन चाहिए। यहाँ समानता का तात्पर्य संबंध से है।
   (ग) हमारे शरीर का मुख्य आधार हमारा भोजन है।
   (घ) भोजन के कार्य :
      (i) शरीर के लिए आवश्यक तत्व जुटाना और उनकी कमी पूरी करना।
      (ii) दैनिक कार्यों के लिए शरीर को शक्ति देना।
      (iii) शरीर की प्रक्रियाओं को नियमित रखकर शरीर को स्वस्थ रखना।
   (ङ) आहार में प्रोटीन, खनिज, कार्बोहाइड्रेट्स, विटामिन तथा लवण आदि तत्व पाए जाते हैं।
3. (क) ऊर्जा (ख) शक्कर (ग) कार्बोहाइड्रेट्स (घ) संतुलित
   (ङ) आयोडीन

भाषा बोध

1. (क) जल्दी (ख) कहाँ (ग) धीरे-धीरे (घ) दिन-रात
2. मशीन = कल   आहार = भोजन
   नीरोग = रोगरहित   विहार = घूमना-फिरना
   बीमारी = तकलीफ   ऊर्जा = शक्ति
   चर्बी = वसा   वृद्धि = बढ़त
3. हवा - स्त्रीलिंग   महीना — पुल्लिंग
   पानी - पुल्लिंग   सास - स्त्रीलिंग
   सब्जी - स्त्रीलिंग   सामान - पुल्लिंग
   भोजन - पुल्लिंग   वस्तु - स्त्रीलिंग

12 – पश्चात्ताप

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) मदनलाल के पिता का नाम ठाकुर जगत सिंह था।
   (ख) मदनलाल के पिता डाकखाने में मुंशी थे।
   (ग) मदनलाल लिफाफा फाड़ने के बाद शाम को मुंबई चल दिया।
   (घ) नैनी जेल के द्वार पर आज भीड़ लगी हुई है।

लिखित

1. (क)—(i) (ख)—(iii) (ग)—(ii) (घ)—(iii)
   (ङ)—(i)
2. (क) अपने गाँव के डाकखाने में आने पर ठाकुर जगत सिंह को यह हानि हुई कि दूसरे गाँवों में जो साग-भाजी, उपले, ईंधन मुफ्त मिल जाते थे, यहाँ बंद हो गए।
   (ख) मदनलाल ने पिता की अचकन की जेब से लिफाफा पैसों के

लोभ में उड़ाया। वह लिफाफे पर लगे टिकट बेचकर पैसे प्राप्त करना चाहता था।

(ग) घर पर पत्र भेजने में मदनलाल लज्जा और ग्लानि इसलिए अनुभव करता था क्योंकि वह अपने पिता की अचकन की जेब से नोटो-भरा लिफाफा चुराकर घर से भाग आया था।

(घ) जगत सिंह रिहाई का परवाना लेकर जमीन पर इसलिए बैठ गया क्योंकि उसके मन में यह भाव था कि उसे लेने कोई नहीं आएगा और न ही उसका कोई ठिकाना है।

(ङ) मदनलाल रोता हुआ पिता के पैरों में इसलिए गिर पड़ा क्योंकि उसके मन में अपने उस दुष्कर्म के प्रति पश्चात्ताप था जो उसने लिफाफा चुराकर किया था, जिसके कारण उसके पिता को जेल की सजा मिली थी।

3. (क) डाकखाने (ख) माँ (ग) तीन (घ) पिता
4. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
(ङ) ✓

भाषा बोध

1. हानि – लाभ | अप्रिय – प्रिय
उलटी – सीधी | दंड – पुरस्कार
दिन – रात | जवान – बूढ़ा
दु:ख – सुख | प्यार – नफरत
नवीनता – प्राचीनता | उत्तर – प्रश्न

2. (क) मदनलाल को अदन में रहते तीन **माह** गुजर गए।
(ख) इस **बुरी हालत** में उन्हें मदनलाल की हथ-लपकियाँ बहुत अखरतीं।
(ग) राजपूत रेजीमेंट के सुंदर सजीले **युवक** कवायद कर रहे थे।
(घ) हमले में वह **हमेशा** सबसे आगे रहता है।
(ङ) मदनलाल ने उसी **समय** कप्तान के पास जाकर कुछ कहा।

3. युवकों, संध्याएँ, नायकों, रेजीमेंटो, तलवारों, लड़के, दिनों, जेलों, खेलों, शालिग्रामों।

13. अमृतवाणी

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)–(i) (ख)–(ii) (ग)–(iii) (घ)–(i)
2. (क) गुरु एवं ईश्वर दोनों के साथ खड़े होने पर पहले गुरु के चरण छूने चाहिए, क्योंकि गुरु ने ही हमें ईश्वर का ज्ञान कराया है।
(ख) जिसके हृदय में सत्य होता है, ईश्वर उसके हृदय में वास करता है।
(ग) हमें मन के अहंकार को नष्ट करने वाली तथा दूसरों और स्वयं को शांति प्रदान करने वाली वाणी का प्रयोग करना चाहिए।
(घ) हमें कल का काम आज ही कर लेना चाहिए क्योंकि पता नहीं कब कठिनाईं आ जाए और हम वह कार्य कर ही न पाएँ।
(ङ) हमें दूसरों की धन-संपदा को देखकर नहीं ललचाना चाहिए।

3. (क) साँच बराबर तप नहीं, **झूठ बराबर पाप**।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।
(ख) **संत न छाँड़े संतई,** कोटिक मिलैं असंत।
मलय भुजंगहि बेधिया, **सीतलता न तजंत**।।
(ग) बृच्छ कबहूँ नहीं फल भखै, **नदी न संचै नीर**।
परमारथ के कारने, **साधुन धरा सरीर**।।

4. (क)–(iii) (ख)–(i) (ग)–(v) (घ)–(ii)
(ङ)–(iv)

भाषा बोध

1. गुरु – लघु, शिष्य | दोस्ती – दुश्मनी
पाप – पुण्य | सत्य – असत्य
बड़ा – छोटा | आज – कल
मधुर – कटु | ठंडा – गरम

2. ताके = उसके | औरन = औरों को
बचन = वचन | जाके = जिसके
दोऊ = दोनों | काल्ह = कल
दियो = दिया | सरीर = शरीर
कटुक = कटु, कड़वे | कारने = के लिए, के कारण

3. (क) हमेशा **दुर्बल** की सहायता करनी चाहिए।
(ख) **संत** का संग सदा सुखदायी होता है।
(ग) मीराबाई अपने **गोविंद** की दीवानी थीं।
(घ) **झूठ** बोलने वाला हमेशा दुखी रहता है।

14. झाँसी की रानी

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) छोटी बालिका का नाम मनु था।
(ख) 12 दिनों तक रानी लक्ष्मीबाई साहस के साथ अंग्रेजों का सामना करती रहीं।
(ग) मनु का जन्म वाराणसी में हुआ था।
(घ) बालिका मनु बिठुर में नाना साहब और राव साहब के साथ खेलने लगी।

लिखित

1. (क)–(ii) (ख)–(iii) (ग)–(ii) (घ)–(iii)
(ङ)–(iii)
2. (क) बालक ने जब अपने घोड़े को एड़ लगाई तो उसका घोड़ा सरपट भागा। इतने में उसके घोड़े को ठोकर लगी, और बालक धम्म से नीचे गिर गया।
(ख) ज्योतिषियों ने मनु के विषय में भविष्यवाणी की थी कि आगे चलकर वह राजरानी बनेगी।
(ग) रानी लक्ष्मीबाई का अपना घोड़ा युद्ध में घायल हो चुका था। उनका नया घोड़ा ज्यादा प्रशिक्षित नहीं था। अत: वह एक नाले के पास जाकर अड़ गया। इतने में अंग्रेज सैनिक वहाँ आ पहुँचे। रानी बड़ी वीरता से उनसे लड़ी, किंतु बुरी तरह घायल हो गई। उनके सेवक उन्हें एक साधु की कुटी में ले गए, जहाँ रानी ने प्राण त्याग दिए।
(घ) रानी लक्ष्मीबाई के तीन माह के पुत्र की मृत्यु होने पर सारी झाँसी शोक में डूब गई।
(ङ) बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।

3. (क) अँधेरा (ख) घोड़ा (ग) वीरता (घ) झाँसी
(ङ) आक्रमण
4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓
(ङ) ✗

भाषा बोध

1. आगे – पीछे | प्रसन्न – दुखी
बराबर – असमान | जन्म – मृत्यु
आओ – जाओ | मित्र – शत्रु
बाएँ – दाएँ | रानी – दासी

2. (क) खिलाफ, विपरीत। (ख) जंग, लड़ाई।
(ग) मौत, मरण। (घ) वीरता, पराक्रम।
(ङ) दुश्मन, बैरी।

3. (क) पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर रहमत पर तो मानो पहाड़ टूट पड़ा।
(ख) कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सेना से डटकर लोहा लिया।
(ग) मैंने उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए बहुत समझाया, पर वह टस से मस न हुआ।

(घ) विपत्ति से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसका सामना करने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए।

15. पुरस्कार

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) बूढ़े मंत्री मधुलिका के ऊपर चीखे थे।
   (ख) मधुलिका के पिता ने वाराणसी की लड़ाई में कोशल को मगध से बचाया था।
   (ग) मधुलिका के पिता का नाम सिंहमित्र था।
   (घ) अपने घोड़े पर सवार होकर अरुण मधुलिका के पास पहुँचा।

लिखित

1. (क)—(iii) (ख)—(i) (ग)—(iii) (घ)—(ii) (ङ)—(iii)
2. (क) कोशल देश में कृषि उत्सव के दिन महाराज किसान बनकर जमीन के चुने हुए टुकड़े में हल चलाते और बीज बोते थे। जमीन के मालिक को चार गुणा रकम दे दी जाती थी और खेत राजा के हो जाते थे।
   (ख) राजा द्वारा दिए गए सोने के सिक्कों को मधुलिका ने राजा पर ही वार दिया।
   (ग) अपनी जमीन खोने के बाद मधुलिका दूसरे के खेतों में कड़ी मेहनत करने लगी।
   (घ) राजकुमार अरुण मधुलिका के पास इसलिए आया था ताकि मधुलिका की सहायता से वह किले पर आक्रमण करने के लिए किले के पास वाली जमीन प्राप्त कर सके और इस प्रकार कोशल पर अधिकार कर सके।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. लड़की – स्त्रीलिंग श्रीमान – पुल्लिंग बूढ़ा – पुल्लिंग
   साधु – पुल्लिंग बेटा – पुल्लिंग माता – स्त्रीलिंग
   रानी – स्त्रीलिंग गाय – स्त्रीलिंग
2. झनझन + आहट, फुसफुस + आहट, गुनगुन + आहट,
   मुस्कुराना + आहट

16. मेरी डायरी

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) नितिन दिल्ली से जबलपुर पाँच दिनों के लिए आया है।
   (ख) नितिन के चचेरे भाई-बहिन का नाम राजा और दीपा है।
   (ग) कान्हा आकर नितिन का परिवार डाक-बँगले में ठहरा।
   (घ) प्रस्तुत पाठ डायरी विधा पर आधारित है।

लिखित

1. (क)—(ii) (ख)—(iii) (ग)—(i) (घ)—(ii)
2. (क) कान्हा अभयारण्य जबलपुर से 160 किलोमीटर दूर स्थित है।
   (ख) कान्हा के अभयारण्य और सर्कस के पशुओं में यह अंतर है कि अभयारण्य के पशु स्वतंत्र, स्वच्छंद, प्राकृतिक परिवेश में घूमते हुए और स्वनिर्भर होते हैं, जबकि सर्कस के पशु पिंजरों में बंद रहते हैं और मनुष्य के ऊपर निर्भर रहते हैं।
   (ग) नितिन ने कान्हा अभयारण्य में सागौन, साल, खैर, पलाश एवं हर्रा के पेड़ देखें।
   (घ) कान्हा अभयारण्य में मोर आदि अनेक रंग-रूप वाले और विचित्र पक्षियों के झुंड थे।
   (ङ) 28 दिसंबर को नितिन ने कान्हा उद्यान में वनराज शेर को देखा जो सर्कस के पिंजरे में कैद शेर की तुलना में बहुत स्वस्थ दिखाई देता था।
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. (क) तेंदुआ (ख) ऋषि-मुनिगण (ग) नितिन (घ) हमने (ङ) हमें
2. (ख) कान्हा आकर वह डाक-बँगले में ठहर गया।
   (ग) पहाड़ी इलाकों की ओर बढ़ने पर उसे साँभर दिखे।
   (घ) शेर आराम से लेटा हुआ दिखाई दिया।
   (ङ) वह हाथी पर बैठकर घूमा भी।

17. नर हो, न निराश करो मन को

कविता बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क)—(iii) (ख)— (ii) (ग)—(ii) (घ)—(iii)
2. (क) यदि हम अपने जीवन के उद्देश्य को नहीं समझ पाते और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास नहीं करते, तो हमारा जीवन व्यर्थ हो जाता है।
   (ख) मनुष्य की असफलता के लिए उसकी निष्क्रियता दोषी होती है।
   (ग) जब मनुष्य परिश्रम और अच्छे कर्म करता है तो जग में उसका नाम होता है।
   (घ) जिस धन की प्राप्ति के लिए मनुष्य परिश्रम नहीं करता, उस धन को अलभ्य समझना चाहिए।
   (ङ) ''बनता बस उद्यम ही विधि है'' का अर्थ है कि कर्म से ही भाग्य बनता है अर्थात् हमारा परिश्रम ही आगे चलकर हमारा भाग्य बन जाता है।
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. उपयुक्त – अनुपयुक्त निर्दोष – दोषी
   निराश – आशावान निज – पर
   नर – नारी सक्रिय – निष्क्रिय
   योग्य – अयोग्य अर्थ – अनर्थ
   दुर्लभ – सुलभ दुख – सुख
2. काम – नाम योग्य – भोग्य अर्थ – व्यर्थ
   खेद – भेद तन –मन विधि – निधि
   दान – विधान सक्रिय – निष्क्रिय
3. अभिलाषा, परिश्रमी, दुर्लभ, आलसी, भाग्यवादी, आशावान।

18. लोटा भर पानी

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) सिकंदर अपने आप को विश्व विजेता मानता था।
   (ख) नेपोलियन को अपनी जिंदगी में एक बार हारना पड़ा था।
   (ग) सिकंदर ने फकीर के बारे में सुना था कि वह फकीर कुछ सनकी है।
   (घ) सिकंदर के लिए सैनिक आदरणीय थे।

लिखित

1. (क)—(i) (ख)—(i) (ग)—(ii) (घ)—(ii)
2. (क) सिकंदर कभी हारता नहीं था, इसलिए उसे महान कहा जाता है।
   (ख) फकीर से मिलने पर सिकंदर को हैरानी इसलिए हुई क्योंकि फकीर ने उसे केवल सरसरी निगाह से ही देखा, कोई खास महत्व नहीं दिया, जबकि वह एक महान योद्धा था।
   (ग) फकीर की कुटिया में एक लाठी, एक लोटा और एक कुश का आसन था।
   (घ) फकीर के तर्क के आगे सिकंदर इसलिए निरुत्तर हो गया

क्योंकि फकीर ने सिद्ध कर दिया था कि सिकंदर के साम्राज्य की कीमत एक लोटे भर पानी के बराबर भी नहीं है, अत: उसका अभिमान करना बेकार है।

(ङ) फकीर यह सिद्ध करना चाहता था कि छोटी वस्तु भी बड़ी वस्तु से अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान हो सकती है। अत: कभी अपनी धन-संपदा या शक्ति-सामर्थ्य पर अभिमान नहीं करना चाहिए।

3. (क) सिकंदर (ख) भारत (ग) अशोक, सिकंदर (घ) अकड़ (ङ) चरणों

भाषा बोध

1. राजा - दास | मूर्ख - विद्वान
आदर - अपमान | सस्ता - महँगा
बेचना - खरीदना | नई - पुरानी
उम्मीद -नाउम्मीद | जीत - हार

2. (क) दुर्बल (ख) प्रशंसनीय (ग) स्वदेशी (घ) साप्ताहिक (ङ) मासिक (च) अमर (छ) अजेय

3. (क) नेपोलियन को भी अपने **जीवन** में एक बार हारना पड़ा था।
(ख) **वन** से गुजरते हुए उसने एक फकीर को देखा।
(ग) मैं **जल** की खोज करूँगा।
(घ) आखिर **जान** बचाने का प्रश्न है।
(ङ) महान सिकंदर के **कदमों** में सारी दुनिया झुकती थी।

19. माता को पत्र

पाठ बोध

मौखिक

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) नेता जी अपनी माँ को पत्र लिख रहे हैं।
(ख) इस पत्र में, नेता जी ने अपने मन की व्यथा व्यक्त की है।
(ग) नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने देश को 'जय हिंद' का नारा दिया था।

लिखित

1. (क) पहले के आर्यवीर भारतमाता की सेवा के लिए अपना अमूल्य जीवन प्रसन्नता से न्योछावर कर देते थे।
(ख) पराधीन भारतीयों की दीन दशा पर देश रुदन कर रहा था।
(ग) जब मनुष्य खाने और सोने से संतुष्ट रहे और इंद्रियों का दास बना रहे तो वह पशु के समान हो जाता है।
(घ) सुभाष चंद्र बोस ने प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु, मुझे इतनी सामर्थ्य दे कि मैं अपना संपूर्ण जीवन दूसरों की सहायता में बिता सकूँ।
(ङ) यह पत्र नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने अपनी माँ को लिखा है।
2. (क) कोलकाता (ख) देशों (ग) समर्पित (घ) माँ (ङ) सहायता
3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

भाषा बोध

1. संतानों, यात्राएँ, बातें, दशाएँ, जड़ें, सेवाएँ, परीक्षाएँ, आशाएँ, माताएँ, माएँ।
2. सुशिक्षित -अशिक्षित | स्वार्थरहित - स्वार्थी
स्वस्थ - रोगी | प्रसन्नता -अप्रसन्नता
अगला - पिछला | आवश्यक - अनावश्यक
सपूत - कपूत | योग्य - अयोग्य
अतीत - वर्तमान | हित - अहित
3. अतिरिक्त, बहुमूल्य, अधिकार, सपूत, उपदेश, दुर्दशा, सहयोग, दुर्भाग्य, कुपात्र, सानंद।

संकलित मूल्यांकन - 1 (Summative Assessment - 1)

1. (क)—(ii) (ख)—(iii) (ग)—(ii) (घ)—(iii) (ङ)—(i)
2. (क) ओलंपिक (ख) 1896 (ग) दास (घ) राजा (ङ) कई
3. (क)—(ii) (ख)—(iv) (ग)—(v) (घ)—(iii) (ङ)—(vi) (च)—(i)
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
5. प्रिय - अप्रिय | मित्र - शत्रु
अमृत - विष | रानी - दासी
अंदर - बाहर | पृष्ठभूमि - मुख्यभूमि
प्रसन्न - दुखी | पसंद - नापसंद
मानसिक - शारीरिक | इच्छा - उदासीनता
6.

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*एकवचन*	*बहुवचन*
विद्वान	विदुषी	महिला	महिलाएँ
कवि	कवयित्री	स्त्री	स्त्रियाँ
अध्यापक	अध्यापिका	कहानी	कहानियाँ
वीर	वीरांगना	शुभकामना	शुभकामनाएँ
सम्राट	सम्राज्ञी	वीरांगना	वीरांगनाएँ

7. (क) तेनालीरामन ने विद्वान के तर्क का यह उत्तर दिया कि मान लीजिए, हम कोई चीज खाना चाहते हैं, तो क्या केवल यह मान लेना ही उचित है कि हम वह चीज खा रहे हैं।
(ख) आबीन ने मालिक से यह झूठ बोला कि मालिक की पत्नी और बच्चे शयनकक्ष की दीवार के नीचे दबकर मर गए हैं।
(ग) ब्रेल लिपि से दृष्टिहीनों का बहुत उपकार हुआ है क्योंकि आज इसकी सहायता से दृष्टिहीन व्यक्ति ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
(घ) भोला ने पर्वत से पहला प्रश्न पूछा— "यह हीरा जौहरी का है या भोला का?"
(ङ) काबुलीवाले को देखकर मिनी इसलिए डर जाती थी क्योंकि उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाला उस जैसे छोटे बच्चों को पकड़कर अपनी झोली में बंद कर लेता है।

संकलित मूल्यांकन - 2 (Summative Assessment - 2)

1. (क)—(i) (ख)—(iii) (ग)—(iii) (घ)—(ii) (ङ)—(ii)
2. (क) वीरता (ख) माँ (ग) चरणों (घ) डाकखाने (ङ) शक्कर
3. (क)—(iii) (ख)—(i) (ग)—(v) (घ)—(ii) (ङ)—(iv)
4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
5. (क) सुसज्जित (ख) सदाबहार (ग) दुर्लभ (घ) आलसी (ङ) अजेय (च) अमर
6. संतानों, यात्राएँ, बातें, दिशाएँ, जड़ें, सेवाएँ, परीक्षाएँ, माएँ, माताएँ, आशाएँ।
7. (क) सुभाष चंद्र बोस ने प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु, मुझे इतनी सामर्थ्य दे कि मैं अपना संपूर्ण जीवन दूसरों की सहायता में बिता सकूँ।
(ख) रानी लक्ष्मीबाई के तीन माह के पुत्र की मृत्यु होने पर सारी झाँसी शोक में डूब गई।
(ग) सिकंदर कभी हारता नहीं था, इसलिए उसे महान कहा जाता है।
(घ) राजा द्वारा दिए गए सोने के सिक्कों को मधुलिका ने राजा पर ही वार दिया।
(ङ) राजकुमार अरुण मधुलिका के पास इसलिए आया था ताकि मधुलिका की सहायता से वह किले पर आक्रमण करने के लिए किले के पास वाली जमीन प्राप्त कर सके और इस प्रकार कोशल पर अधिकार कर सके।

(च) जिस प्रकार इंजन और डीजल में समानता है उसी प्रकार हमारे शरीर और भोजन में समानता है। इंजन को चलाने के लिए डीजल चाहिए और शरीर को चलाने के लिए भोजन चाहिए।

रचनात्मक मूल्यांकन : 1, 2 : स्वयं कीजिए।

हिंदी - 6

1 – वरदान

कविता बोध

मौखिक

(क) कवि ईश्वर से कह रहा है कि उसे विपत्तियों से रक्षा करने की प्रार्थना नहीं करनी है, बल्कि विपत्तियों से भयभीत न होने का वरदान चाहिए।

(ख) इससे कवि का तात्पर्य यह है कि वह जीवन में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए आगे बढ़ता रहे।

(ग) कवि, दीनता स्वीकार करके अवश नहीं बनना चाहता है।

(घ) प्रस्तुत गीत 'गीतांजलि' नामक काव्यकृति से लिया गया है।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (द)

2. (क) कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसे अपने दु:ख से व्याकुल चित्त के लिए सांत्वना की भिक्षा नहीं, वरन् दुखों पर विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद चाहिए।

(ख) कवि दीनता स्वीकार करके अवश इसलिए नहीं बनना चाहता क्योंकि वह ईश्वरीय सहायता न मिलने पर भी आत्मविश्वास के सहारे जीवन बिताना चाहता है।

(ग) कवि ईश्वर से विपत्तियों से भयभीत न होने का वरदान चाहता हैं।

(घ) कवि ईश्वर से दु:खों पर विजय पाने की प्रार्थना इसलिए करता है क्योंकि दु:खों पर विजय पाने से ही दु:ख दूर हो सकते हैं।

(ङ) कवि ईश्वर से संकटों के सागर को भी तैरकर पार करने की शक्ति माँग रहा है।

3. (क) कवि ईश्वर से कह रहा है कि वह अपना कर्तव्य-भार हलका करने की याचना के पूर्ण होने की सांत्वना नहीं चाहता, वरन् उसकी प्रार्थना तो केवल यह है कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए जीवन में आगे बढ़ता रहे।

(ख) कवि ईश्वर से कहता है कि यदि संसार के अनिष्ट, अनर्थ और छल-कपट ही मेरे भाग्य में लिखे हैं तो भी मेरा मन इन कष्टों के प्रभाव से कमजोर न पड़े बल्कि मैं इन्हें सहन कर लूँ।

भाषा बोध

1. सीमित, तरंगीत, शापित, अंकुरित, पुष्पित, आनंदित।

2.

वरदान-शाप	दुख-सुख	विजय-पराजय
संकट-आनंद	हलका-भारी	विपत्ति-संपत्ति
सहायता-कष्ट	हीनता-महानता	

2 – मंत्र

पाठ बोध

मौखिक

(क) बूढ़ा व्यक्ति डॉक्टर के पास अपने लड़के को संध्या के समय लेकर गया था।

(ख) बूढ़े व्यक्ति ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी।

(ग) मृणालिनी कैलाश से साँप दिखाने की जिद कर रही थी।

(घ) मंत्र खत्म होते ही बीच-बीच में बूढ़ा जड़ी कैलाश को सुँघा देता था।

(ङ) बूढ़े व्यक्ति का बेटा सात वर्ष का था।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (द), (घ) (द), (ङ) (स)

2. (क) डॉक्टर चड्ढा ने बूढ़े के पुत्र को देखने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि संध्या के समय वे गोल्फ खेलने जाते थे, अत: उस समय में मरीजों को नहीं देखते थे।

(ख) कैलाश मृणालिनी से मना करने पर भी उसे साँप दिखाने के लिए इसलिए तैयार हो गया क्योंकि एक महाशय के साँप दिखाने को कहने पर उसे जोश आ गया था।

(ग) डॉक्टर चड्ढा के सामने भगत ने अपनी पगड़ी इसलिए उतारकर रख दी थी ताकि वे उसके बीमार पुत्र को एक बार देख लें।

(घ) 'चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया' यह सुनते ही भगत तेज-तेज कदमों से इसलिए चलने लगा कि कहीं उसे देर न हो जाए और फिर वह उनके पुत्र को न बचा पाए।

(ङ) साँप द्वारा काटे जाने पर डॉक्टर चड्ढा कैलाश की उँगली काट देना चाहते थे। कैलाश उनकी बात इसलिए नहीं मान रहा था क्योंकि उसे अपनी जड़ी पर पूरा विश्वास था।

(च) आज के सभ्य संसार के लोग अपने मजे के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते हैं। पुराने जमाने के व्यक्ति लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शांत करने के लिए सदा तैयार रहते थे।

3. (क) बूढ़े व्यक्ति ने डॉक्टर चड्ढा से।

(ख) डॉक्टर चड्ढा ने बूढ़े व्यक्ति से।

(ग) एक महाशय ने कैलाश से।

(घ) भगत ने डॉक्टर चड्ढा से।

(ङ) नौकरों ने डॉक्टर चड्ढा से।

4. (क) गोल्फ (ख) बूढ़ा (ग) कैलाश (घ) भगत (ङ) बुढ़िया

भाषा बोध

1. आकर, जोड़कर, टेककर, उतारकर, गिड़गिड़ाकर, निकलकर।

2.

निश्चल	= नि: + चल	सज्जन	= सत् + जन
निस्वार्थ	= नि: + स्वार्थ	नि:शब्द	= नि: + शब्द
औषधालय	= औषध + आलय		

3 – मित्रता

पाठ बोध

मौखिक

(क) जीवन की सफलता मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर निर्भर करती है।

(ख) कुछ लोगों का हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस आदि देखकर, लोग झटपट ऐसे लोगों को मित्र बना लेते हैं।

(ग) किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी।

(घ) हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि बुरी संगति से बचकर रहा जाए।

(ङ) प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य मित्रों के चुनाव में सहयोग करना है।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (द), (घ) (अ), (ङ) (ब)

2. (क) मैत्री का उद्देश्य एक-दूसरे का जीवनभर साथ निभाना होना चाहिए। ऐसी व्यावहारिक मैत्री आत्मशिक्षा में सहायक होती है।

(ख) विश्वासपात्र मित्र को खजाना इसलिए कहा गया है क्योंकि वह हर परिस्थिति में अपने मित्र के लिए एक रक्षक की भाँति उपस्थित रहता है।

(ग) कुसंग का ज्वर बड़ा भयानक होता है। यह नीति और सद्वृत्ति का नाश करता है और बुद्धि को नष्ट करता है। बुरी संगति अर्थात् कुसंग मनुष्य को पतन के गर्त में गिरा देता है।

(घ) मित्र बनाते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वह एक सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान हो, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। वह अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातें करने वाला न हो।

(ङ) भिन्न प्रकृति और स्वभाव के लोगों में भी मित्रता बनी रहती है; जैसे-राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यंत प्रगाढ़ स्नेह था। उन दोनों की मित्रता खूब निभी।

(च) लेखक इस बात पर आश्चर्य प्रकट करता है कि लोग किसी वस्तु को खरीदते समय पहले उसके विभिन्न गुण-दोष परखते हैं, तब उसे लेतें हैं; लेकिन किसी को मित्र बनाते समय उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि के बारे में कुछ भी जानकारी प्राप्त नहीं करते।

भाषा बोध

1. (क) नीति-विशारद (ख) हतोत्साहित
(ग) अशुद्ध (घ) महत्वाकांक्षी
(ङ) पतनशील (च) दृढ़निश्चयी
(छ) सत्यनिष्ठ (ज) सहपाठी
(झ) सहकर्मी (ञ) निर्विरोध

2.

शब्द		**उपसर्ग**		**मूल शब्द**
अनुसंधान	=	अनु	+	संधान
सहानुभूति	=	सह	+	अनुभूति
आचरण	=	आ	+	चरण
संकल्प	=	सम्	+	कल्प
प्रवृत्ति	=	प्र	+	वृत्ति
कुमार्ग	=	कु	+	मार्ग
कुसंग	=	कु	+	संग
उज्ज्वल	=	उत्	+	ज्वल

4 – मेरी माँ

पाठ बोध

मौखिक

(क) पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' की, 'लखनऊ कॉंग्रेस' में जाने की बड़ी इच्छा थी।

(ख) बिस्मिल की माताजी विवाह करके शाहजहाँपुर आई थीं।

(ग) बिस्मिल की माताजी को गृहकार्य की शिक्षा, बिस्मिल की दादीजी की छोटी बहन ने दी।

(घ) रामप्रसाद 'बिस्मिल' को सबसे अधिक सहायता परिवार में उनकी माताजी ने दी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (अ), (ङ) (ब)

2. (क) बिस्मिल जी की माँ ने उनके जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद हिंदी पढ़ना आरम्भ किया। मुहल्ले की सखी-सहेलियों में जो शिक्षित थीं उनसे वे अक्षर-ज्ञान प्राप्त करती थीं। घर के काम-काज से बचे समय में वे पढ़ना-लिखना करती थीं।

(ख) बिस्मिल जी की एकमात्र इच्छा यह थी कि वे अपनी माँ की श्रद्धापूर्वक सेवा करके अपना जीवन सफल बना लें, लेकिन वइ इच्छा इसलिए पूरी होती नहीं दिखाई दे रही थी क्योंकि अंग्रेजों द्वारा बिस्मिल जी को फाँसी की सजा सुना दी गई थी।

(ग) बिस्मिल जी दृढ़निश्चयी, सत्यनिष्ठ और संकटों में भी विचलित न होने वाले व्यक्ति थे। वे महान देशप्रेमी और देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले देशभक्त थे। धर्म के प्रति भी उनके हृदय में गहरी आस्था थी।

(घ) बिस्मिल जी कि धार्मिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति में उनकी माँ का विशेष योगदान था। उन्होंने अपने उपदेशों से बिस्मिल जी के हृदय में धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न की। उन्होंने दृढ़निश्चय, आत्मबलिदान तथा सत्यनिष्ठा के उपदेशों द्वारा बिस्मिल जी की आत्मिक उन्नति को प्रोत्साहन दिया तथा उन्हें शिक्षा दिलाकर उनकी सामाजिक उन्नति में योगदान दिया।

(ङ) हमें बिस्मिल जी की माताजी के - शिक्षा प्राप्त करने के प्रति लगन, बच्चों को शिक्षित करना, उन्हें धर्म तथा देश के प्रति निष्ठा रखने के लिए प्रोत्साहित करना आदि गुणों ने प्रभावित किया, क्योंकि ऐसे गुण ही मनुष्य जीवन में उन्नति करने के लिए सहायक होते हैं।

3. (क) बिस्मिल जी की माँ के पास मुहल्ले की अनेक सखी-सहेलियाँ आती थीं। उनमें जो शिक्षित थीं उनसे बिस्मिल जी की माँ हिंदी सीखने के लिए अक्षर-ज्ञान प्राप्त करती थीं।

(ख) जब बिस्मिल जी के पिता के वकील साहब ने उनसे उनके पिता के वकालतनामे पर पिता के हस्ताक्षर करने को कहा, तो बिस्मिल जी ने उत्तर दिया कि ऐसा करना धर्म के विरुद्ध होगा; अत: ऐसा पाप वे कदापि नहीं करेंगे।

(ग) बिस्मिल जी की माँ ने अपनी शिक्षाओं द्वारा उनकी धार्मिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में बहुत योगदान दिया। यदि उन्हें ऐसी माता न मिली होतीं, तो वे देश की सेवा करने की बजाय एक साधारण मनुष्य की भाँति ही सांसारिक जीवन बिताते।

(घ) बिस्मिल जी अपनी उन्नति में माता द्वारा दिए गए योगदान के प्रति इतने अधिक आभारी थे कि उनके विचार से वे इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी प्रयास करते तो भी माता के ऋण से उऋण नहीं हो सकते थे।

भाषा बोध

1. प्राकृतिक, सामाजिक, पारिवारिक, साप्ताहिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक।

2.

प्रोत्साहन	= प्र + उत्साहन	संकल्प	= सम् + कल्प
उत्पन्न	= उत् + पन्न	धृष्टतापूर्ण	= धृष्टता + पूर्ण
नितांत	= नित + अंत		

5 – उद्यमी नर

कविता बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत कविता में श्रम और पुरुषार्थ की महत्ता स्थापित की गई है।

(ख) इस जीवन में मनुष्य ने सुख-साधन अपने भुजबल अर्थात् श्रम के बल से प्राप्त किए हैं।

(ग) प्रकृति भाग्य के बल से डरकर नहीं झुकती हैं।

(घ) भाग्यवाद पाप का आवरण हैं।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (ब)

2. (क) प्रकृति के छिपे खजाने को उद्यमी मनुष्य प्राप्त कर सकता है।

(ख) कवि के अनुसार मानवी दुनिया का भाग्य उसके श्रम से बनता है।

(ग) भाग्यवाद को पाप का आवरण और शोषण का हथियार इसलिए कहा गया है क्योंकि भाग्यवाद का सहारा लेकर एक मनुष्य दूसरे का हिस्सा हड़पने का पाप करता है और इस प्रकार उसका शोषण भी करता है।

(घ) भाग्यवाद के विरोध में कवि ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं-
(1) यदि भाग्य ही प्रबल है, तो पृथ्वी अपने रत्न स्वयं ही क्यों नहीं प्रदान कर देती।
(2) संसार सींच-सींच कर, परिश्रम करके प्राकृतिक वस्तुएँ प्राप्त न करके; भाग्य के बल से संचित खजाने को प्राप्त क्यों नहीं कर लेता।
हम कवि के तर्कों से पूर्णतया सहमत हैं।
(ङ) श्रम के बल से धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

4. (क) ईश्वर ने सब तत्वों को आवरण के नीचे छिपा दिया ताकि बिना परिश्रम किए मनुष्य उन्हें प्राप्त न कर सके। इससे श्रम के महत्व का पता चलता है।
(ख) जो मनुष्य परिश्रम नहीं करना चाहते, वे ही ब्रह्मा के अभिलेख अर्थात् भाग्यवाद का सहारा लेते हैं।
(ग) प्रकृति सदा मनुष्य के उद्यम से ही हारती है, वह किसी के भाग्य के बल से डरकर नहीं झुकती।
(घ) कवि यह स्पष्ट कर देना चाहता है कि मानव-समाज का भाग्य बनाने वाला मात्र एक साधन है और वह है उसका परिश्रम।

भाषा बोध

1. अच्छा-बुरा — दिन-रात
स्वर्ग-नरक — प्रकाश-अंधकार
पाप-पुण्य — ऊपर-नीचे
पीछे-आगे — चढ़ना-उतरना

2. (1) मनुष्य अपना **श्रमजल** बहाकर ही अपना भाग्य बना सकता है।
(2) सम्राट अशोक ने पत्थरों पर अनेक **अभिलेख** खुदवाए।
(3) पाप से **संचित** संपत्ति शीघ्र नष्ट हो जाती है।
(4) कारगिल युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को **विजित** किया।
(5) **विधि-अंक** अर्थात् भाग्य का सहारा निकम्मे मनुष्य लेते हैं।
(6) गांधी जी ने अंग्रेजों के **शोषण** के विरुद्ध असहयोग आंदोलन चलाया।
(7) अपने परिश्रम से मनुय **कु-अंक** अर्थात् दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकता है।

6 – प्रायश्चित्त

पाठ बोध

मौखिक

(क) कबरी बिल्ली घर में रामू की बहू से प्रेम करती थी।
(ख) रामू की बहू ने तय कर लिया कि या तो घर में वह रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही।
(ग) पंडित परमसुख की लंबाई चार फीट दस इंच थी।
(घ) पंडित जी ने बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ करने के लिए कहा।
(ङ) महरी ने अंत में लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा कि- माँ जी, बिल्ली तो उठकर भाग गई।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (अ)
2. (क) पंडित जी ने प्रायश्चित्त का यह उपाय बताया कि एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए और उसके बाद इक्कीस दिन का पाठ करवाया जाए।
(ख) रामू की माँ को पंडित जी की बातें इसलिए माननी पड़ीं क्योंकि उसे बहू द्वारा हुई बिल्ली की हत्या से लगने वाले घोर पाप का डर था।
(ग) पंडित जी ने पूजा के सामान में दस मन गेहूँ, एक मन चावल, मन भर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन भर नमक बताया।
(घ) रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या करने की इसलिए सोची क्योंकि बिल्ली बार-बार उसकी रखी चीजों को खा जाती थी।
(ङ) जब पंडित जी ने रामू की माँ को बताया कि ब्राह्म मुहूर्त में बिल्ली की हत्या के लिए घोर कुंभीपाक नरक का विधान है, तो उसकी आँखों में आँसू आ गए।
(च) 'प्रायश्चित्त' कहानी में कहानीकार का उद्देश्य भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वासों तथा पोंगा पंडितों के पाखंड का पर्दाफाश करना और समाज में प्रचलित बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं की ओर संकेत करना है।

3. (क) महरी ने सास जी से।
(ख) महरी ने माँ जी से।
(ग) पंडित जी ने रामू की माँ से।
(घ) मिसरानी ने रामू की माँ से।
(ङ) महरी ने रामू की माँ से।

भाषा बोध

1. (क) "अरे हाँ, जल्दी दौड़ के पंडित जी को बुला ला," सास की जान में जान आई।
(ख) रामू की माँ ने कहा, "तो पंडित जी, कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाए?"
(ग) "अरे राम! बिल्ली तो मर गई, माँ जी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ।"— महरी बोली।
(घ) "यही कोई सात बजे सुबह।"— मिसरानी ने कहा।

2. ***कमर कसना*** — परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को कमर कस लेनी चाहिए।
जुट जाना — हमारा कर्त्तव्य है कि हम आपदाग्रस्त लोगों की सेवा में जुट जाएँ।
सरगर्मी दिखाना — जब शहर में कोई बड़ा नेता आता है तो शहर के अधिकारी बड़ी सरगर्मी दिखाते हैं।
चंपत होना — महिला के देखते-ही-देखते लुटेरा उसकी गले की सोने की चेन खींचकर चंपत हो गया।
खून सवार होना — कबरी बिल्ली की हरकतों से परेशान होकर रामू की बहू के सिर पर खून सवार हो गया।
मौका हाथ आना — 'कन्या विद्या धन' मिलने से होनहार छात्राओं को उन्नति करने का मौका हाथ आ गया।
ताँता बँध जाना — सेठ जी के पिता की मृत्यु का समाचार फैलते ही उनके घर लोगों का ताँता बँध गया।
हाथ का मैल होना — परिश्रमी व्यक्ति के लिए पैसा हाथ का मैल होता है।
मुँह मोड़ना — बुरे वक्त में सगे-संबंधी भी मुँह मोड़ लेते हैं।
माथे पर बल पड़ना — राहुल की गंदी ड्रेस देखते ही मैडम के माथे पर बल पड़ गए।

3. अपराधी-अपराधिन — पंडित-पंडिताइन
बिल्ली-बिलाऊ / बिल्ला — सास-ससुर
नौकर-नौकरानी — बाबू-बबुआइन

7 – नीलू

पाठ बोध

मौखिक

(क) नीलू की आँखों का रंग धूप में तरल सुनहला लगता था।
(ख) लूसी की एक भूटिया कुत्ते के साथ मित्रता हो गई थी।
(ग) नीलू की माँ अल्सेशियन जाति की कुतिया थी।
(घ) लेखिका के बँगले में रोशनदानों में गौरैया घोंसला बना लेती थीं।
(ङ) नीलू की माँ 'लूसी' नाम से जानी जाती थी।
(च) 'पगडंडी' का सामान्य अर्थ है'- 'संकरा पैदल रास्ता'।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (ब), (ग) (स), (घ) (ब), (ङ) (स), (च) (स)
2. (क) नीलू को उसकी प्रिय खाद्य-वस्तु फेंककर देने पर वह उसकी ओर देखता तक नहीं था।
   (ख) लोग लूसी को मोटर-स्टॉप वाली दुकान पर भेजते थे क्योंकि शीतकाल में वहाँ का रास्ता बर्फ से ढक जाता था जिसमें लूसी ही अपनी सहज चेतना के कारण मार्ग ढूँढ़कर वहाँ से खाद्य-सामग्री ला पाती थी।
   (ग) माँ के अभाव में लूसी के बच्चे के अधिक रोने पर लेखिका ने उसे कोमल ऊन और अधबुने स्वेटर की डलिया में रखकर, माँ की उष्णता का भ्रम दिया।
   (घ) हिंसक और क्रोधी भूटिए बाप और आखेटप्रिय अल्सेशियन माँ से जन्म पाकर भी नीलू में हिंसा प्रवृत्ति का कोई चिह्न नहीं था। यह उसके स्वभाव की ऐसी विशेषता थी जिसे देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे।
   (ङ) कुत्ते भाषा नहीं जानते, फिर भी वे ध्वनि के आधार पर अपने स्वामी या अन्य लोगों की बातें जान लेते हैं। जैसे बाहर या रास्ते में घूमते नीलू से यदि कोई कह देता कि ''गुरु जी तुम्हें ढूँढ़ रही थीं नीलू'', तो वह तुरंत चहारदीवारी कूदकर लेखिका के कमरे के सामने आकर खड़ा हो जाता था।
   (च) खरगोशों को बचाने के लिए रात-भर ओस में खड़ा रहने के कारण सर्दी लगने से नीलू को न्यूमोनिया हो गया। इसी रोग के चलते नीलू मृत्यु को प्राप्त हो गया।

भाषा बोध

शब्द		*उपसर्ग*		*मूल शब्द*
सकुशल	=	स	+	कुशल
अचानक	=	अ	+	चानक
असमर्थ	=	अ	+	समर्थ
अमृत	=	अ	+	मृत
असफल	=	अ	+	सफल
सदर्प	=	स	+	दर्प
शब्द		*मूल शब्द*		*प्रत्यय*
पर्वतीय	=	पर्वत	+	ईय
तत्परता	=	तत्पर	+	ता
विशेषता	=	विशेष	+	ता
पराजित	=	पराजय	+	इत
उष्णता	=	उष्ण	+	ता
कृतज्ञता	=	कृतज्ञ	+	ता

8 – सुनेली का कुआँ

पाठ बोध

मौखिक

(क) राजस्थान और गुजरात की सीमा पर बसे गाँव का नाम था- नरसी की ढाणी।
(ख) राजस्थान में सबसे कीमती और प्यारी वस्तु 'पानी' है।
(ग) ढाणी के लोगों ने सुनेली और उसके बेटे का मजाक उड़ाया।
(घ) किसी अज्ञात शक्ति की सहायता प्राप्त करने के लिए खेजड़े की जड़ में सिंदूर पोत दिया गया।
(ङ) कुएँ में लगभग दस हाथ पानी चढ़ गया।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (ब), (ङ) (द)
2. (क) सुनेली ने कुआँ खोदने का संकल्प इसलिए लिया क्योंकि उसे विश्वास था कि खेजड़े के नीचे पानी अवश्य निकलेगा।
   (ख) खेजड़े की जड़ में ऊँदरों द्वारा खोदी गई गीली मिट्टी पड़ी देखकर सुनेली को विश्वास हो गया कि खेजड़े की जड़ में पानी है।
   (ग) सुनेली ने सबसे पहले अपने दोनों बेटों से कुआँ खोदने के लिए कहा।
   (घ) जब सुनेली का पति भी कुआँ खुदवाने में मदद करने लगा तो सुनेली ने कहा कि जिसके दो-दो जवान बेटे हों और जिसका पति भी बुढापे में परिश्रम करने को तैयार हो, ऐसी स्त्री की ताकत का कोई ठिकाना नहीं।
   (ङ) जब कुआँ खुद गया तो दाणी के बूढ़े ठाकुर ने कहा कि - बींदणी सा! यह आपकी ही हिम्मत हैं। नहीं तो ऊँदरे कब बिल नहीं खोदते थे और खेजड़े कहाँ नहीं उगते? अस्सी बरस तो मैंने इस दाणी में काट दिए। अब तक किसी को सूझा ही नहीं कि यहाँ पानी भी निकल सकता है।
   (च) जबकि ढाणी के सभी लोगों ने कुआँ खोदने में मदद की थी फिर भी कुएँ का नाम 'सुनेली का कुआँ' इसलिए पड़ गया क्योंकि सुनेली के पहल करने, उसकी सूझ-बूझ तथा कुएँ की खुदाई की शुरुआत करने का सारा श्रेय सुनेली को जाता था।
   (छ) इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की ठान ले और उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने में जुट जाए, तो उसे सफलता अवश्य मिलती है।
3. (क) सुनेली के बेटे ने अपने पिता से।
   (ख) सुनेली ने अपने पति से।
   (ग) सुनेली के पति ने सुनेली से।
   (घ) बूढ़े ठाकुर ने गाँववासियों से।
   (ङ) सुनेली ने अपने छोटे बेटे से।

भाषा बोध

1. (क) मुझे किसी को कुछ नहीं बताना।
   (ख) उसे हमारे साथ भ्रमण के लिए जाना चाहिए।
   (ग) मुझे तुमसे कुछ प्रश्न पूछने हैं।
   (घ) तुम्हें गुरुजी ने जो प्रश्न समझाया था, उसे हमें भी समझा दो।
   (ङ) उसकी माताजी विद्यालय में आएँगी।
   (च) आप यहाँ फिर कब आओगे?
2. दुखद, सुखद, जलद, नीरद।

9 – मनभावन सावन

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (ब), (घ) (ब)
2. (क) प्रस्तुत कविता में कवि ने सावन की ऋतु (वर्षा ऋतु) का वर्णन किया है।
   (ख) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि एकता का संदेश देना चाहता है।
   (ग) सावन की वर्षा में ताड़ के बड़े-बड़े पत्तों पर वर्षा की बूँदें पड़कर उनसे झिलमिलाती हुई झरती हैं, नीम सुख प्राप्त होने के कारण झूम-झूमकर सिर हिला रहे हैं, हरसिंगार के फूल झरते हैं और बेला की कलियाँ प्रतिपल बढ़ती हैं।
   (घ) सावन की वर्षा होने पर पक्षी आनंदित होकर मंगल गीत गाते हैं।
   (ङ) वर्षा की बूँदें धरती पर धाराओं के रूप में पड़ रही हैं।
   (च) इस पंक्ति का अर्थ है कि वर्षा की आर्द्रता से सुखी सोन बलाक अपनी आवाज निकालते हुए उड़ रहे हैं।

भाषा बोध

1. थम-थम, फैले-फैले, लंबी-लंबी, टप-टप, दे-दे, चल-चल।
2. साम्य - साम्यवाद, साम्यवादी।

समाज - समाजवाद, समाजवादी।
भोग - भोगवाद, भोगवादी।
तत्व - तत्ववाद, तत्ववादी।

10 – धरती का स्वर्ग : कश्मीर

पाठ बोध

मौखिक

(क) जम्मू का रघुनाथजी का मंदिर देश-भर में मशहूर है।
(ख) जवाहर सुरंग की लंबाई डेढ़ मील है।
(ग) पहलगाम पहुँचने पर लेखक को स्वर्ग की अनुभूति हुई।
(घ) लेखक को लिद्दर नदी स्वर्ग की नदी जैसी लगी।
(ङ) जहाँगीर द्वारा लगवाया हुआ शालीमार बाग लगभग चार सौ वर्ष पुराना है।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (ब), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (ब)
2. (क) सुरंग आर-पार न होने पर इंजीनियर ने बारूद लगवाकर, आई हुई बाधा को उड़ा दिया और इस प्रकार सुरंग आर-पार हो गई।
   (ख) धसकीले पहाड़ बरसात में धसककर रास्ता जाम कर देते हैं।
   (ग) सेब के बाग, बादाम की बाड़ियाँ, केसर के खेत, महजूर के गीत, बर्फ से ढके हिमालय के पर्वत-खंड, शीशे की तरह साफ जल वाली झीलें, चश्मे और झरने तथा कश्मीर के भोले-भाले मेहमाननवाज लोग आदि के कारण कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहते हैं।
   (घ) गुलमर्ग के पास ही थोड़ा और ऊँचाई पर खिलनमर्ग पड़ता है।
   (ङ) गुलमर्ग की ऊँचाई साढ़े छब्बीस सौ मीटर हैं।
   (च) पहलगाम तक पहुँचने वाले मार्ग पर खूबसूरत हरियाली है। मार्ग के साथ-साथ लिद्दर नदी भी बहती हुई पहलगाम पहुँचती है, जो स्वर्ग की नदियों जैसी लगती है। पहलगाम का छोटा-सा बाजार, सड़क के दोनों ओर दुकानें, सड़क के नीचे बहती लिद्दर नदी - ये सब मिलकर पहलगाम को स्वर्ग जैसा खूबसूरत बना देते हैं।
3. (क) चरागाह (ख) शंकराचार्य (ग) चश्मेशाही
   (घ) अमरनाथ (ङ) खिलनमर्ग

भाषा बोध

1. (क) हम - पुरुषवाचक सर्वनाम।
   (ख) स्वयं - निजवाचक सर्वनाम।
   (ग) कुछ - अनिश्चयवाचक सर्वनाम।
   (घ) वे - पुरुषवाचक सर्वनाम।
   (ङ) वह - निश्चयवाचक सर्वनाम।
   (च) जो-सो - संबंधवाचक सर्वनाम।
   (छ) अपने-आप - निजवाचक सर्वनाम।
2. **स्वर्ग** = देवलोक - अच्छे कर्मों से ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
   मुश्किल = कठिन - इस प्रश्न को हल करना बहुत मुश्किल है।
   भरोसा = यकीन - मेरा मित्र वास्तव में भरोसा करने योग्य है।
   अकारथ = बेकार - कुपात्र के लिए किए गए कार्य अकारथ ही रहते हैं।
   मुग्ध = मोहित - कश्मीर की सुंदरता पर हर किसी का मन मुग्ध हो जाता है।
   दर्शन = देखने की क्रिया, दीदार - माता वैष्णो देवी के दर्शन करने लाखों लोग जम्मू जाते हैं।

11 – ताई

पाठ बोध

मौखिक

(क) मनोहर की उम्र पाँच वर्ष थी।
(ख) बाबू रामजीदास के छोटे भाई का नाम कृष्णदास है।
(ग) बालक मनोहर ने अपनी ताई से छत पर पतंग माँगी।
(घ) पतंग पकड़ने के लालच में छत से मनोहर गिर गया।
(ङ) रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में बेहोश पड़ी रहीं।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (द)
2. (क) बालक अपनी रेलगाड़ी में चुन्नी और बाबू रामजीदास को ले जाने को तैयार था।
   (ख) बालक को उसकी ताई प्यार करेगी, इसमें उसे संदेह था।
   (ग) जब रामजीदास ने मनोहर को उसकी ताई की गोद में बैठाने की चेष्टा की तो ताई ने मनोहर को अपनी गोद में से धकेल दिया।
   (घ) जब मनोहर ने रामेश्वरी से कहा कि - ताई, पतंग मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे, तो मनोहर की यह बात सुनकर रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया।
   (ङ) जब मनोहर ने रामेश्वरी से कहा कि तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी तो ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवाएँगे, तो मनोहर की यह बात सुनकर रामेश्वरी का मुख क्रोध के मारे लाल हो गया।
   (च) मनोहर को छत से गिरता देखकर भी रामेश्वरी उसे बचा न पाईं। इस सदमें से वे एक सप्ताह तक बेहोश पड़ी रहीं। फिर जब उन्हें होश आया तो उन्होंने मनोहर को ही याद किया। इस प्रकार उनका हृदय-परिवर्तन हुआ।
   (छ) 'ताई' कहानी, संतान के अभाव के कारण कुंठाग्रस्त नारी के चरित्र को स्पष्ट करती है। यद्यपि संतान के अभाव में रामेश्वरी अपने देवर के पुत्र मनोहर से द्वेष करती थीं, फिर भी उसका छत से गिरना वे सहन नहीं कर पाईं और इस सदमें से एक सप्ताह तक बेहोश पड़ी रहीं। होश आने पर मनोहर की कुशलता पूछना उनके हृदय-परिवर्तन की ओर संकेत करता है। इसके बाद मनोहर को असीम प्रेम करना उनके वात्सल्य को दर्शाता है। इस प्रकार कहानी के मूलभाव में यह तथ्य भी जुड़ा हैं कि नारी के मन की कुंठा पर उसके हृदय का वात्सल्य विजयी रहता है।
3. (क) बालक ने बाबू रामजीदास से।
   (ख) ताई ने बालक से।
   (ग) बाबू रामजीदास ने रामेश्वरी से।
   (घ) रामेश्वरी ने बाबू रामजीदास से।
   (ङ) मनोहर ने रामेश्वरी से।

भाषा बोध

1. (क) उनके इतना कहते-कहते बालक निकट आ गया।
   (ख) बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया।
   (ग) दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे।
   (घ) प्राय: बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा-सुनी हो जाती थी।
   (ङ) रामेश्वरी ने धड़कते हुए कलेजे से इस घटना को देखा।
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा - रामजीदास, कृणदास, मनोहर, रामेश्वरी, चुन्नी।
   जातिवाचक संज्ञा - बालक, रेलगाड़ी, पतंग, भतीजा, स्त्री।
   भाववाचक संज्ञा - चुहलबाजी, संतानहीनता, प्रसन्नता, प्रेम, स्नेह।

12 – वैद्यराज जीवक

पाठ बोध

मौखिक

(क) जीवक तक्षशिला विश्वविद्यालय का छात्र था।
(ख) आचार्य को सामने देखकर जीवक ने साष्टांग प्रणाम किया।
(ग) राजकुमार अभय ने जीवक को नवजात अवस्था में मिट्टी के एक ढेर पर पाया था।

(घ) अयोध्या नगरी सरयू नदी के तट पर बसी हुई थी।
(ङ) मगध के सम्राट बिंबसार थे।

लिखित

1. (क)-(स), (ख)-(अ), (ग)-(ब), (घ)-(द), (ङ)-(स)
2. (क) विदा करते समय आचार्य ने जीवक को यह सीख दी कि वास्तव में धरती पर ऐसी कोई वनस्पति है ही नहीं, जो औषधीय गुण से रहित हो अर्थात् हर वनस्पति में कोई-न-कोई औषधीय गुण अवश्य होता है।
   (ख) सेठ की शल्य-क्रिया करने से पहले जीवक ने उसके सामने यह शर्त रखी कि तुम्हें इक्कीस माह तक बिस्तर पर लेटना होगा - सात माह दाएँ, सात माह बाएँ और सात माह सीधे।
   (ग) जीवक भगवान बुद्ध के साथ रहना चाहते हुए भी उनके साथ इसलिए नहीं रह सके क्योंकि एक चिकित्सक होने के नाते उन्हें जन-जन की सेवा करनी थी।
   (घ) जीवक ने मगध के सम्राट बिंबसार का इलाज चुटकी बजाते ही कर दिया।
   (ङ) जब भगवान बुद्ध ने कहा कि जीवक, जब तुम पट्टी खोलने के लिए चिंतित हो रहें थे, तभी मैंने पट्टी खोल दी थी। इस पर जीवक ने सोचा कि भगवान बुद्ध ने उनके मन को अपने मन से जोड़ लिया है और इसीलिए उन्हें लगा कि वे भगवान बुद्ध के कृपापात्र बन गए हैं।
3. (क) प्रकृति ने हमें फल-फूल-वनस्पति तथा पशु-पक्षी और जीव-जंतुओं के रूप में अमूल्य जैव-संपदा प्रदान की है, परंतु मनुष्य इस संपदा के लिए प्रकृति का कृतज्ञ होने की बजाय उसे नष्ट करने में लगा रहता है, जबकि ऐसी अमूल्य संपदा को प्राप्त कर, उसे प्रकृति को धन्यवाद देना चाहिए।
   (ख) आयुर्वेद के ज्ञान और अभ्यास से धर्मशास्त्रों के अध्ययन करने से धर्म, लोगों का इलाज करने से अर्थ तथा अर्थ - की प्राप्ति से काम की प्राप्ति होती है। इस प्रकार इन तीनों पुरुषार्थों की प्राप्ति होने से मोक्ष की प्राप्ति भी हो जाती है। इस प्रकार आयुर्वेद के ज्ञान और अभ्यास से सब-कुछ मिल जाता है।
   (ग) जीवक ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में रहकर आयुर्वेद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था; अत: वे रोग-शोक को मिटाने वाले एक कुशल वैद्य बन चुके थे।
   (घ) जब मनुष्य किसी कार्य में अपने को असफल बताता है, तो उस कार्य में वह उत्तीर्ण नहीं हो सकता। यदि उसे उत्तीर्ण होना है तो उसे और परिश्रम करना होगा।

भाषा बोध

1. (क) उन्होंने गाय के पुराने घी से औषध तैयार की।
   (ख) उसने अनेक अज्ञात वनस्पतियों का परीक्षण किया।
   (ग) जीवक ने शल्य-क्रिया से असाध्य रोगियों को रोग-मुक्त किया।
   (घ) उसने तक्षशिला विश्वविद्यालय के विशाल परिसर के बाहर जाकर ढूँढ़ा।
2. औषधीय = औषध + ईय   परोपकारी = परोपकार + ई
   धारदार = धार + दार   भ्रमित = भ्रम + इत
   भारतीय = भारत + ईय   सिलाई = सिलना + आई

13 – दोहा एकादश

कविता बोध

मौखिक

(क) कबीर के दोहों की भाषा सधुक्कड़ी है।
(ख) कबीर भक्तिकाल के कवि माने जाते हैं।
(ग) दोहे के अनुसार वृक्ष को काटकर जहाज बनाया जाता है।
(घ) सज्जन की संगति कभी बेकार नहीं जाती है।
(ङ) हमें सदैव ऐसे वचन बोलने चाहिए जो हमें भी अच्छे लगें और अन्य लोगों को भी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (ब), (ग) (ब), (घ) (द)
2. (क) कबीर ने गुरु को कुम्हार तथा शिष्य को घड़ा इसलिए कहा है कि जैसे कुम्हार घड़े को घड़ते समय उसके दोष दूर करता जाता है उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को शिक्षित करते समय उसके दोष दूर करता रहता है।
   (ख) धन-संग्रह के संबंध में कबीर के विचार हैं कि मनुय चाहे गाय, हाथी, घोड़ों आदि के रूप में कितने ही प्रकार के धन संग्रह कर ले, लेकिन जब उसे संतोषरूपी धन की प्राप्ति हो जाती है तो अन्य सब धन धूल के समान हो जाते हैं। हम कबीर के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हैं।
   (ग) सबसे बड़ा धन संतोष को माना गया है क्योंकि जब तक मनुष्य असंतुष्ट बना रहेगा, वह और अधिक चाहता रहेगा और याचक बना रहेगा। लेकिन जब उसे संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाएगा तो उसकी याचना की आदत समाप्त हों जाएगी और वह वास्तविक धनी कहलाएगा।
   (घ) जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, उसी प्रकार संतों की संगति से मनुष्य ज्ञान प्राप्त करके श्रेष्ठ बन जाता है। अत: संतों की संगति कभी निष्फल नहीं जाती है।
   (ङ) सभी प्रकार के लोभ-लालच, संतोष प्राप्त होने पर व्यर्थ हो जाते हैं।

भाषा बोध

आज-बाज, मर्म-शर्म, कवि-हवि, अभी-तभी।

14 – जीता कौन?

पाठ बोध

मौखिक

(क) खरगोश को तालाब के किनारे अपनी इस भूल का एहसास हुआ कि वह 'प्रेस' को साथ नहीं लाया था।
(ख) तालाब की तलहटी में छुपी स्वर्ण मुद्राओं की थैली कछुओं का मुखिया निकाल लाया।
(ग) स्वर्ण मुद्राओं की थैली की खोज कछुओं के मुखिया के पूर्वजों ने की थी।
(घ) कछुए और खरगोश की रेस में रेफरी की भूमिका तिकड़मदास ने निभाई।
(ङ) प्रेस फोटोग्राफर कछुए के विभिन्न कोणों से फोटो खींच रहे थे।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (अ)
2. (क) चुनौती से बचने के लिए बुजुर्ग कछुए ने निम्नलिखित तर्क दिए -
   (i) भाई खरगोश, अब दौड़ की क्या जरूरत है, दौड़ जो होनी थी हो चुकी। सारे जमाने को उसके नतीजे का पता है। अब बार-बार तो दौड़ नहीं होती।
   (ii) देखो, तुम जवान खून हो। हम वृद्ध हो चुके हैं। अब तुमसे क्या दौड़ लगाएँगे! जवानी में कुछ कहते तो सोचते भी।
   (iii) भाई, हम झगड़े-फसाद में विश्वास नहीं करते। जैसे चल रहा है, वैसे ही चलने दो। हमें अब कोई दौड़ नहीं लगानी।
   (ख) दौड़ से पूर्व खरगोश ने निश्चित किया कि मैं कल फिर इसी

समय आऊँगा। इस बार मेरे साथ प्रेस और फोटोग्राफर भी होंगे। अगर कोई कछुआ दौड़ लगाने के लिए राजी नहीं हुआ तो समझ लो कहावत बदल जाएगी। देश-विदेश के अखबारों में छपेगा कि खरगोश कछुए से दौड़ जीत गया है। खुली चुनौती के बाद भी कछुआ दौड़ में खरगोश को नहीं हरा सका।

(ग) खरगोश ने प्रतियोगिता के लिए शर्तें रखीं कि इस दौड़ के विजेता के गले में फूलों की माला डालकर उसका फोटो खींचा जाना चाहिए और दूरदर्शन पर भी दिखाया जाना चाहिए।

(घ) कछुओं के मुखिया ने विजेता कछुए के जुड़वाँ भाई को तालाब से बाहर निकलने पर इसलिए फटकारा क्योंकि तिकड़मदास ने उसका इस्तेमाल करके खरगोश को हराने के लिए जो चाल चली थी, दोनों भाइयों को देखते ही उस चाल का भेद खुल जाता।

(ङ) वकील तिकड़मदास ने कछुए को जिताने के लिए यह तिकड़म भिड़ाई कि उसने प्रतियोगी कछुए के जुड़वाँ भाई को पहले ही निर्धारित स्थान पर पहुँचा दिया और उसे विजेता घोषित करा दिया। दोनों भाई एक जैसे होने के कारण उसे कोई नहीं पहचान सका और सबने उसे ही प्रतियोगी कछुआ समझा।

(च) खरगोश के सामने रखी गई तिकड़मदास की पहली शर्त के पीछे यह कारण था कि अधिक दूरी होने के कारण खरगोश को निर्धारित स्थान पर पहुँचने में अधिक समय लगे। दूसरी शर्त के पीछे यह कारण था ताकि वह निर्धारित स्थान पर कार द्वारा प्रतियोगी कछुए के जुड़वाँ भाई को खरगोश से पहले लेकर पहुँच सके। तीसरी शर्त के पीछे यह कारण था कि इस शर्त के अनुसार खरगोश को फिर कभी भविष्य में कछुओं को चुनौती देने का अधिकार नहीं रह जाएगा।

3. (क) बुजुर्ग कछुए ने खरगोश से।
   (ख) वकील तिकड़मदास ने कछुओं के मुखिया से।
   (ग) खरगोश ने तिकड़मदास से।
   (घ) तिकड़मदास ने खरगोश से।
   (ङ) एक बुजुर्ग कछुए ने कछुओं के मुखिया से।

4. (क) निर्बल मनुष्य को अपनी कमजोरी के कारण संतोष करके ही काम चलाना पड़ता है और उसकी निर्बलता के चलते उसके संतोष की मात्रा बढ़ती ही जाती है।
   (ख) युवा खरगोश अपने उस पूर्वज खरगोश के बारे में सोच रहा था, जो दौड़ में कछुए से हारा था। उसे शक था कि वह या तो नशा करके दौड़ा था या उसे अपनी टाँगों की उछाल और रफ्तार का घमंड हो गया था जिस कारण वह दौड़ हार गया होगा।
   (ग) आजकल रिश्वत देकर फौरन काम हो जाता है जबकि ईमानदारी से करवाने पर कोई काम नहीं हो पाता है। इसीलिए कछुओं का मुखिया कहता है कि अब के समय में मनुष्य में कहीं ईमानदारी बाकी है तो बस बेईमानी के कामों में ही।

भाषा बोध

1. असफलता, बेकारी, सुलभता, अज्ञानता, परिपूर्णता, बेचैनी, स्वचालित, स्वतंत्रता।

2. (क) खरगोश को फल मिलना था, मिल चुका।
   (ख) बाढ़ से गाँव डूबने थे, डूब चुके।
   (ग) भूकंप से हानि होनी थी, हो चुकी।
   (घ) मुझे बात करनी थी, कर चुका।

15 – हृदय परिवर्तन

पाठ बोध

मौखिक

(क) संवाददाता सम्राट अशोक के लिए समाचार लाया कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।
(ख) स्त्रियों की सेना की सेनापति कलिंग की राजकुमारी पद्मा थी।
(ग) सम्राट अशोक के अनुसार शास्त्र की आज्ञा है कि स्त्रियों पर शस्त्र न चलाया जाए।
(घ) पद्मा के पिता को अशोक की सेना ने मारा था।
(ङ) पाठ के अनुसार अशोक मगध के राजा थे।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (ब)

2. (क) अशोक के मुख पर चिंता की छाया इसलिए थी कि उन्हें कलिंग पर विजय प्राप्त नहीं हो पा रही थी।
   (ख) संवाददाता यह समाचार लाया था कि कलिंग के महाराज मारे जा चुके हैं।
   (ग) शस्त्र-सज्जित स्त्रियों को देखकर अशोक के सैनिक मंत्र-मुग्ध से हो गए और अशोक भी चकित रह गए।
   (घ) संवाददाता की बात सुनकर अशोक इसलिए उत्तेजित हो गए क्योंकि कलिंग के महाराज के मारे जाने के बावजूद कलिंग को अभी भी जीता नहीं गया था।
   (ङ) पद्मा के ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि शास्त्र स्त्रियों पर शस्त्र चलाने को मना करता है।
   (च) पद्मा की बात सुनकर अशोक का सिर इसलिए झुक गया क्योंकि कलिंग युद्ध में होनेवाले नरसंहार के लिए वे ही दोषी थे।
   (छ) बौद्ध भिक्षु ने अशोक से निम्नलिखित प्रतिज्ञाएँ कराईं –
      (i) जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।
      (ii) मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत सबको मिलेगा।
      (iii) मैं जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

3. (क) द्वारपाल ने अशोक से।
   (ख) अशोक ने संवाददाता से।
   (ग) अशोक ने अपने सैनिकों से।
   (घ) अशोक ने पद्मा से।
   (ङ) अशोक ने बौद्ध भिक्षु से।

भाषा बोध

1. (i) वह कक्षा में प्रथम आया है।
   वह कक्षा में प्रथम आया है?
   वह कक्षा में प्रथम आया है!
   (ii) लड़का छत से गिर गया।
   लड़का छत से गिर गया?
   लड़का छत से गिर गया!

2. *मंत्र-मुग्ध होना = मोहित हो जाना* – राजकुमारी का रूप देखकर राजकुमार मंत्र-मुग्ध हो गया।
   सिंदूर पोंछ देना = स्त्री को विधवा बना देना – कारगिल युद्ध ने न जाने कितनी स्त्रियों का सिंदूर पोंछ दिया।

सदा के लिए आँखें बंद कर लेना = मर जाना - अपने पुत्रों को हमेशा परिश्रम करने की सलाह देकर पिता ने सदा के लिए आँखें बंद कर लीं।

लोहा लेना = मुकाबला करना - हमारी सेना शत्रु से हमेशा लोहा लेने को तैयार रहती है।

गोद सूनी कर देना = संतान का मारा जाना - बाढ़ की विभीषिका हर वर्ष न जाने कितनी माँओं की गोद सूनी कर देती है।

मृत्यु की गोद में सो जाना = मर जाना - एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में न जाने कितने लोग मृत्यु की गोद में सो गए।

16 – महायज्ञ

पाठ बोध

मौखिक

(क) सेठ के यहाँ से पच्चीस-तीस किलोमीटर की दूरी पर कुंदनपुर नगर था।

(ख) सेठानी ने सेठ को रास्ते के लिए चार रोटियाँ बनाकर दीं।

(ग) सेठ ने अपनी सभी रोटियाँ रास्ते में कुत्ते को खिला दीं।

(घ) सेठ को खाली हाथ वापस आया देख सेठानी काँप उठी।

(ङ) दीया हाथ में लेकर सेठ-सेठानी तहखाने में उतरे।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (स), (ङ) (द)
2. (क) बहुत तंगी के कारण सेठ को अपना यज्ञ बेचने का फैसला करना पड़ा।

   (ख) धन्ना सेठ की पत्नी ने कुत्ते को रोटियाँ खिलाने को महायज्ञ कहा क्योंकि निस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ अर्थात् महायज्ञ होता है।

   (ग) सेठ ने एक-एक करके चारों रोटियाँ कुत्ते को इसलिए खिला दीं क्योंकि वह बहुत कमजोर और भूखा था।

   (घ) सेठ ने अपना महायज्ञ इसलिए नहीं बेचा क्योंकि भूखे को अन्न देना सभी का कर्तव्य है और उन्हें इस मानवोचित कर्तव्य का मूल्य लेना उचित न लगा।

   (ङ) जब सेठ ने घर लौटकर अपनी पत्नी को सारी कथा सुनाई, तो सेठानी की वेदना गायब हो गई, उसका हृदय उल्लासित हो उठा और उसने सेठ के चरणों की धूल माथे से लगाते हुए कहा कि धीरज रखो, भगवान सब भली करेंगे।

   (च) जब सेठानी दीया जलाने उठी तो रास्ते में उसे किसी चीज की ठोकर लगी। उसने दीया जलाकर देखा कि दहलीज के सहारे लगे फर्श के पत्थर का चौका ऊपर को हो गया है। उस पर लोहे का कुंदा लगा रहता था। ऊपर उठने के कारण उससे सेठानी को ठोकर लग गई थी। सेठ ने चौके को ठीक तरह जमाने के लिए उसमें लगे कुंदे को उठाया, तो उन्हें नीचे तहखाने की सीढ़ियाँ दिखाई दीं। इस प्रकार सेठ-सेठानी को तहखाने का पता चला।

   (छ) अंत में सेठ ने भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान! मेरी कर्त्तव्य-बुद्धि को जगाए रखना। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्ट कम कर सकूँ ऐसी बुद्धि और शक्ति मुझे देना।
3. (क) धनी सेठ का द्वार सबके लिए खुला था। उनसे जो कोई भी कुछ माँगता था, उसे वही प्राप्त हो जाता था।

   (ख) धन्ना सेठ की पत्नी ने जब सेठ द्वारा कुत्ते को रोटी खिलाए जाने को महायज्ञ कहा और उसे खरीदना चाहा तो सेठ मानो आसमान से गिरे। उनकी दृष्टि में भूखे को अन्न देना तो सभी का कर्तव्य था, उसमें यज्ञ जैसी कोई बात नहीं थी।

   (ग) मनुष्य को अपने जीवन में कभी सुख तो कभी दु:ख देखना पड़ता है क्योंकि सभी दिन एक समान नहीं गुजरते, मनुष्य को कभी अच्छे तो कभी बुरे दिन देखने ही पड़ते हैं।

   (घ) अपनी किसी इच्छा की पूर्ति के लिए धन खर्च करके किया जाने वाला यज्ञ सच्चा यज्ञ नहीं होता है। बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के हित के लिए किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ अर्थात् महायज्ञ कहलाता है।

भाषा बोध

1. महामूर्ख, महापुण्य, महासागर, महापंडित, महाशक्ति, महाविनाश।
2. **आसमान से गिरना** = बुरी तरह चौंकना – अपनी नवविवाहिता पुत्री की मृत्यु का समाचार सुनकर असलम मानो आसमान से गिरा।

   हालत पतली होना = गरीबी की अवस्था आ जाना – व्यापार में लगातार घाटे के चलते सेठ मनोहर की हालत पतली हो गई है।

   मुँह फेर लेना = साथ छोड़ देना – बुरे वक्त में मित्र और रिश्तेदार भी मुँह फेर लेते हैं।

   दिन बदलना = अच्छा समय आना – अशोक की नौकरी लगते ही उसके परिवार के दिन बदल गए हैं।

   पेट में चूहे कूदना = बहुत तेज भूख लगना – खेत में खूब परिश्रम करने के बाद किसान के पेट में चूहे कूदने लगते हैं।

   पेट कमर से लगना = बहुत भूखा होना – लगता है इस भिखारी ने कई दिनों से खाना नहीं खाया है क्योंकि इसका पेट कमर से लग रहा है।

17 – तोड़ती पत्थर

कविता बोध

मौखिक

(क) युवती पत्थर पर बड़े हथौड़े से प्रहार कर रही थी।

(ख) पत्थर तोड़ने वाली युवती को कवि ने इलाहाबाद के पथ पर देखा।

(ग) मजदूर युवती के माथे से पसीने की बूँदें ढुलककर गिर रही थीं।

(घ) कवि ने मजदूर युवती की आँखों में उस व्यक्ति के भाव देखें जो मार खाकर भी रो न पाया हो।

(ङ) प्रस्तुत कविता के रचयिता पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (ब), (ग) (द), (घ) (अ), (ङ) (ब)
2. (क) कवि ने मजदूर युवती को इलाहाबाद के पथ पर चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ते देखा।

   (ख) युवती जहाँ कार्य कर रही थी वहाँ कोई छायादार वृक्ष भी नहीं था जिसके तले वह बैठ सके। वे गर्मियों के दिन थे, सूर्य बहुत तेज चमक रहा था, सूर्य की गर्मी के कारण पृथ्वी रुई की तरह जल रही थी। झुलसाने वाली लू उठ रही थी और धूल उड़ रही थी और वह लगभग दोपहर का समय था।

   (ग) युवती ने कवि की ओर एक ऐसे व्यक्ति की दृष्टि से देखा जिसने मार तो खाई हो पर रो न पाया हो अर्थात् उसकी दृष्टि में बेबसी थी।

   (घ) आज की सामाजिक और आर्थिक विषमता के प्रति मानव-मन का विद्रोह तथा इस विषमता को न मिटा पाने की उसकी विवशता को दर्शाना इस कविता का प्रमुख उद्देश्य है। साथ ही, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसका निरंतर कार्यरत रहना परिवर्तन तथा प्रगति का रास्ता दिखाता है।

भाषा बोध

1. (i) नत नयन प्रिय, कर्मरत मन

   (ii) देखते देखा मुझे तो एक बार
2. आग की एक **चिनगी** भी भारी नुकसान का कारण बन सकती है।
   अपने खोए हुए बेटे की याद आते ही सुधीर की आँखों से आँसू **ढुलक** गए।

रामू की बहू बड़ी **सुघर** है।
जून के महीने में भयंकर **लू** चलती है।
सेठ जी ने नौकर से सोफे पर जमी **गर्द** को झाड़ने को कहा।
आजकल बड़े शहरों में एक-से-एक विशाल **अट्टालिका** बनाई जा रही हैं।

18 – मोर की कहानी

पाठ बोध

मौखिक

(क) मोर को राष्ट्रीय पक्षी का रुतबा मिला हुआ है।
(ख) मोर कटहल के पेड़ की मोटी शाखा पर बैठा था।
(ग) बच्चे इस दुनिया को बदलने की क्षमता रखते हैं।
(घ) जब लेखक ने मोर की बात बच्चों तक पहुँचाने का आश्वासन दोहराया तो मोर महाशय प्रसन्न हो गए।
(ङ) तोते खेतों को नुकसान भी पहुँचाते हैं।
(च) आधुनिक खेती के नाम पर हम चारों तरफ बरबादी को दावत दे रहे हैं।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (द)
2. (क) राष्ट्रीय पक्षी का ऊँचा ओहदा पाने पर मोर को अच्छा लगा।
(ख) मोर का शिकार किया जाना अब कम जरूर हुआ है, लेकिन रुका नहीं है।
(ग) लेखक की इच्छा मोर से मुलाकात करने की थी। उसने इस इच्छा को मौका मिलते ही पूरा किया।
(घ) शहर में आबादी बढ़ने से पक्षियों की संख्या घटती जा रही है। इसका कारण यह है कि नई बस्तियाँ बसाने के लिए जंगल और खेत मिटा दिए जाते हैं और पेड़ काटे जाते हैं, जिससे पक्षियों के आवास नष्ट हो जाते हैं।
(ङ) पक्षी हमारी अनेक प्रकार से सहायता करते हैं; जैसे- खेती को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़े और उनकी इल्लियों को नष्ट करके, टिड्डियों को नष्ट करके, चूहों का नाश करके और बीजों व फलों का विकिरण करके। इस प्रकार वे हमारे दोस्त हुए।
(च) मोर ने मानव के विकास की दिशा को इसलिए गलत बताया क्योंकि मनुष्य जो कीटनाशक दवाएँ फसलों पर छिड़कता है वे दवाएँ पक्षियों को अधिक मारती हैं और मनुष्यों के पेट में पहुँचकर उन्हें भी हानि पहुँचाती हैं। इस प्रकार विकास के नाम पर चारों तरफ बरबादी ही फैल रही है।

भाषा बोध

1. (क) एक लीटर (ख) चालीस (ग) दो लीटर
(घ) चार (ङ) एक मीटर (च) चालीस
(छ) दो किलो (ज) पाँच सौ वर्ग मीटर (झ) पाँच किलो
2. पर्यावरण प्रदूषण के कारण आज पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ **लुप्त** हो गई हैं।
अकबर एक **धर्मसहिणु** शहंशाह था।
हर इमारत की **बुनियाद** मजबूत होनी चाहिए।
बड़े लोग नौकरों के अच्छा काम करने पर उन्हें **इनाम-इकराम** भी देते हैं।
समुद्र की **अथाह** गहराई में सब-कुछ समा जाता है।
चाणक्य एक उच्चकोटि के **अर्थशास्त्री** भी थे।

19 – मीना

पाठ बोध

मौखिक

(क) मीना ने राकेश के कमरे में फूलदान तोड़ दिया।
(ख) मीना का कान पकड़कर राकेश ने मसल दिया।
(ग) मीना की उम्र दस वर्ष थी।
(घ) जेब से सिगरेट निकालकर राकेश ने जलाई।
(ङ) दोपहर को तीन बजे साइकिल उठाकर राकेश सिनेमा देखने चला गया।
(च) मीना के हाथ से खून बहने लगा।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (द), (ङ) (अ)
2. (क) राकेश मीना से इसलिए नाराज हो गया क्योंकि मीना ने उसका नया फूलदान तोड़ दिया था।
(ख) मीना ने माँ से राकेश की शिकायत इसलिए नहीं की क्योंकि उसे अपने भाई से बहुत प्रेम था।
(ग) राकेश ने सिगरेट पीने का गलत काम किया।
(घ) मीना राकेश के बिना खाना नहीं खाती थी और राकेश सिनेमा देखने चला गया था। इसलिए मीना ने खाना नहीं खाया था।
(ङ) अंत में राकेश ने मीना को कभी सिगरेट न पीने का वचन दिया।
3. (क) माँ ने राकेश से।
(ख) राकेश ने मीना से।
(ग) मीना ने राकेश से।
(घ) राकेश ने मीना से।
(ङ) माँ ने मीना से।
(च) पिताजी ने मीना से।

भाषा बोध

1. (क) मेरी ओर आँखें मत **तरेरो**, मैं तुमसे डरने वाला नहीं।
(ख) छोटी बच्ची का **सुबकना** उसकी माँ से न देखा गया।
(ग) राकेश का तृतीय श्रेणी पास का रिजल्ट देखते ही उसके पिताजी का **पारा** चढ़ गया।
(घ) जब से रहमत की पुलिस में नौकरी लगी है, उसका दिमाग **सातवें आसमान पर** पहुँच गया है।
2. (क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल (ग) वर्तमान काल
(घ) भूतकाल (ङ) भविष्यत् काल (च) वर्तमान काल।

20 – अनमोल भेंट

पाठ बोध

मौखिक

(क) नन्हा बच्चा रामचरण को 'चन्ना' कहकर पुकारता था।
(ख) अनुकूल बाबू की बदली पद्मा नदी के किनारे एक जिले में हो गई।
(ग) छोटे बच्चे के खोने पर प्रत्येक व्यक्ति की यही सम्मति थी कि उसे पद्मा नदी ने अपने आँचल में छिपा लिया है।
(घ) रायचरण अपनी जमीन बेचकर कोलकाता आ गया।
(ङ) रायचरण ने अपने बच्चे का नाम फलन रखा।
(च) रायचरण फलन को रविवार के दिन लेकर अपने मालिक के घर पहुँचा।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (द), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (ब)
2. (क) रायचरण अनुकूल बाबू का नौकर था।
(ख) नदी के किनारे खेलता बच्चा अचानक गायब हो गया।
(ग) बच्चे के गायब हो जाने पर लोगों को शंका हो रही थी कि कहीं रायचरण ने बच्चे को निर्वासितों के हाथों न बेच दिया हो।

(घ) रायचरण अपनी जमीन बेचकर कोलकाता इसलिए आ गया था क्योंकि उसे फलन को शिक्षा दिलवानी थी।

(ङ) रायचरण नौकरी छोड़कर इसलिए गाँव लौट गया क्योंकि उसे मालकिन ने घर से निकाल दिया था।

(च) रायचरण अपने पुत्र को अनुकूल बाबू का पुत्र बनाकर इसलिए सौंप आया क्योंकि वह फलन का खर्चा देने तथा उसे आगे पढ़ाने में असमर्थ था।

(छ) जब फलन ने अनुकूल बाबू से कहा कि पिताजी इसे (रायचरण को) क्षमा कर दीजिए। यदि आप इसे अपने साथ नहीं रखना चाहते तो इसकी थोड़ी-सी पेंशन निर्धारित कर दीजिए, तो इस बात को सुनकर रायचरण अनुकूल बाबू की कोठी से निकलकर चुपचाप कहीं चला गया; क्योंकि इस बात को सुनकर उसे यह विश्वास हो गया था कि फलन ने उसे नहीं बल्कि अनुकूल बाबू को अपना पिता मान लिया है।

3. (क) रायचरण यहाँ अनुकूल बाबू, से कहना चाहता था कि उनका बच्चा रायचरण ने नहीं चुराया बल्कि वह परमात्मा की इच्छा से गायब हुआ, जिस पर अनुकूल बाबू ने विश्वास नहीं किया। यही रायचरण चाहता था।

(ख) पद्मा नदी के तीव्र वेग से उसमें उठती लहरें उन चंचल और मुँहजोर जलपरियों के समान लग रही थीं जो पद्मा नदी के शोर के रूप में, किनारे पर गाड़ी में बैठे बच्चे को अपनी ओर खेलने के लिए बुला रही थीं।

(ग) अर्थात् छोटा बच्चा पद्मा नदी की वेगवान लहरों में बह गया है।

(घ) जब रायचरण फलन को लेकर अनुकूल बाबू के मकान पर पहुँचा तो फलन को देखकर अनुकूल बाबू के हृदय में पुत्र-प्रेम उमड़ आया। लेकिन पिता होने के साथ-साथ वे एक जज भी थे, इसलिए कुछ देर बाद ही उनके हृदय में यह कानूनी विचार आया कि फलन उनका पुत्र है भी या नहीं - इस बात का क्या प्रमाण है।

भाषा बोध

1. (क) लड़का शिक्षा योग्य हुआ तो रायचरण अपनी थोड़ी-सी जमीन बेचकर कोलकाता आ गया।

(ख) रायचरण ने बच्चे को बहलाना चाहा, किंतु वह न माना।

(ग) वह दोनों हाथ धरती पर टेककर घोड़ा बनता और बच्चा उसकी पीठ पर सवार हो जाता।

(घ) अनुकूल बाबू ने पत्नी को बहुत समझाया, परंतु माता के हृदय की शंकाएँ दूर नहीं हुईं।

2. जज = न्यायाधीश, लुप्त = गायब, आग्रह = जिद, क्रोध = गुस्सा, आभूषण = जेवर, आवेश = जोश।

हिंदी - 7

1 – मनुष्यता

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (ब), (घ) (ब)

2. (क) इस कविता में बताया गया है कि दूसरों के लिए जीने वाला व्यक्ति ही सच्चा मनुष्य है। केवल अपने लिए जीने वाला व्यक्ति पशु के समान होता है।

(ख) कवि ने मनुष्य को प्रेरणा दी है कि जब मनुष्य मरणशील प्राणी है ही तो उसे मृत्यु से नहीं डरना चाहिए और उसे दूसरों के लिए जीते हुए जीवन बिताकर मरना चाहिए ताकि मरने के बाद भी लोग उसे याद करें।

(ग) कवि के अनुसार जो व्यक्ति दूसरों के लिए जीते हुए मरता है उसे मरा हुआ नहीं समझना चाहिए।

(घ) कवि ने केवल अपने लिए जीने वाले पशु-प्रवृत्ति के व्यक्ति को भाग्यहीन बताया है।

(ङ) कवि ने भगवान से डरने की सलाह दी है।

(च) कवि की दृष्टि में सच्चा मनुष्य वही हे जो सभी की भलाई करता हुआ ही अपनी भलाई के बारे में सोचे।

3. (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि केवल अपना पेट भरने या अपने हित की बात सोचना तो पशुओं की आदत होती है, सच्चा मनुष्य वह होता है जो दूसरे लोगों का हित करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो।

(ख) मनुष्य को कभी भी अपने को अनाथ या निराश्रय नहीं समझना चाहिए क्योंकि धरती, आकाश और पाताल तीनों लोकों के स्वामी भगवान सबके साथ हैं। भगवान के हाथ इतने विशाल हैं कि वे सभी की सहायता करते हैं।

(ग) कवि मनुष्य को प्रेरणा देता है कि उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग पर प्रसन्नता से, और उस मार्ग में आने वाली हर मुसीबत और बाधा को दूर करके आगे बढ़ते रहना चाहिए।

(घ) जो मनुष्य दूसरों की भलाई करते हुए अपना भला करता है उसी की भावना सच्ची होती है क्योंकि सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों की भलाई के लिए प्राण भी दे देता है।

भाषा बोध

1. धीरे-धीरे, आगे-आगे, बार-बार, सच-सच, जन-जन

2. **वृथा** = बेकार — मूर्खों का समय कलह में वृथा हो जाता है।
मदांध = अहंकारी — अधिक धन मनुष्य को मदांध बना देता है।
अधीर = धैर्यहीन, बेचैन — श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियाँ अधीर रहती थीं।
सहर्ष = खुशी से — एकलव्य ने अपना दायाँ अँगूठा काटकर सहर्ष द्रोणाचार्य को अर्पित कर दिया।
पांथ = राही — देश-सेवा के लिए हम सभी को एक पथ का पांथ होना चाहिए।
सतर्क = सजग, सचेत — देश के दुश्मनों से हमेशा सतर्क रहना चाहिए।

3.

पशु — मनुष्य	मृत्यु — जीवन	समर्थ — असमर्थ
गर्व — विनय	अनिष्ट — हित	उचित — अनुचित

2 – फूल का मूल्य

पाठ बोध

मौखिक

(क) सुदास माली के सरोवर में कमल का फूल सरदी के मौसम में प्रफुल्लित हो रहा था।

(ख) सुदास माली एक माशा सोने की आशा रखकर, फूल लेकर निकला था।

(ग) कमल के फूल को निहारकर राजाजी हर्षित हुए।

(घ) सुदास माली ने वह फूल किसी को नहीं बेचा, वरन् भगवान बुद्ध को अर्पित कर दिया।

(ङ) बुद्धदेव नगर के बाहर वट वृक्ष की छाया में पद्मासन लगाए विराजमान थे।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (स)

2. (क) सुदास ने सोचा कि जिन बुद्धदेव के लिए राजा और

भक्तजन जैसे लोग अत्यधिक धन खर्च करने के लिए तैयार हैं, यदि मैं उन्हीं बुद्धदेव के चरणों में यह कमल अर्पित कर दूँ तो न जाने मुझे कितना धन मिल जाए। अत: उसने राजा और भक्तजन दोनों को फूल बेचने से इनकार कर दिया।

(ख) कमल के फूल को निहारकर राजाजी सोचने लगे कि प्रभु के पूजन के लिए आज पुष्प की कमी थी, वह पूरी हो जाएगी।

(ग) भगवान बुद्ध के भव्य, दिव्य और अलौकिक आनंदमय स्वरूप को देखकर सुदास स्तब्ध रह गया।

(घ) सुदास राजा के बुलावे का इंतजार इसलिए कर रहा था क्योंकि उसे आशा थी कि उसे बुलाकर राजाजी उसको उसके फूल का अच्छा मूल्य देंगे।

(ङ) लेखक के शब्दों में वट वृक्ष की छाया में पद्मासन लगाए बुद्धदेव विराजमान थे। उज्ज्वल ललाट, मुख पर आनंद की प्रभा, ओठों से सुधा झर रही थी और नयनों से अमृत टपक रहा था। मेघों की-सी धीर-गंभीर ध्वनि उस तपस्वी के मुख से निकल रही थी।

(च) जब सुदास ने भगवान गौतम बुद्ध के चरणों पर फूल चढ़ाया तो वट के सघन कुंज में पक्षी बोल उठे। पवन की लहर आई। कमल की पंखुड़ियाँ हिल-हिलकर मानों हँस उठीं।

3. (क) कमल (ख) राजमहल (ग) राजाजी (घ) प्रभु गौतम (ङ) वट
(च) सुदास ।

भाषा बोध

1. (क) बुद्धदेव (ख) सुदास (ग) कमल का फूल (घ) राजाजी
2. आज हर व्यक्ति सरकारी नौकरी का **अभिलाषी** है।
चाचाजी की मृत्यु का समाचार सुनकर मैं **स्तब्ध** रह गया।
दूसरों का हित चाहने वाले ही **महामना** होते हैं।
किसी का **द्रव्य** हड़पने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।
सुंदर बाग में सैर करने से मन **प्रफुल्लित** हो उठता है।

3 – घीसा

पाठ बोध

मौखिक

(क) घीसा को गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने देख लेखिका को द्रोणाचार्य और उनके भील शिष्य, एकलव्य की याद आ गई।

(ख) घीसा ने अपना कुरता बदले में देकर तरबूज का इंतजाम किया।

(ग) लेखिका ने बिना सोचे-समझे सफाई का महत्व समझाने की मूर्खता की थी।

(घ) लेखिका का सबसे प्रिय विद्यार्थी घीसा था।

(ङ) घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था।

(च) लेखिका ने विद्यार्थियों को आठ पृष्ठ की पुस्तक दी थी।

लिखित

1. (क) (द), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (स), (ङ) (स), (च) (अ)
2. (क) गंगा पार (ख) तरबूज (ग) शनिचर (घ) साबुन।
3. (क) घीसा लेखिका द्वारा पढ़ाए जाने वाले गरीब बच्चों में सबसे होशियार था। उसके पढ़ने, उसे समझने, व्यवहार में स्मरण रखने, पुस्तक स्वच्छ रखने, स्लेट साफ रखने और छोटे-मोटे काम समझदारी से करने जैसे गुण, उसे अन्य बच्चों से भिन्न बनाते थे।

(ख) घीसा ने गुरु साहब के वापस जाते समय उन्हें गुरु दक्षिणा में तरबूज दिया। सरल और सच्चे मन से एक शिष्य द्वारा गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा इसलिए अनूठी थी क्योंकि इसमें मोल का भाव न था, गुरु और शिष्य के मध्य सच्चे स्नेह का भाव था।

(ग) गुरु साहब ने सभी बच्चों को सफाई का महत्व समझाया, परंतु घीसा पर उसका असर अलग ही दिखाई पड़ा। घीसा को छोड़कर, अन्य बच्चे थोड़ा-बहुत मुँह धोकर जस-के-तस गुरु साहब के सामने आ खड़े हुए। दूसरी ओर, घीसा सफाई के महत्व को समझते हुए साबुन से नहा-धोकर आया।

(घ) घीसा की मृत्यु की चर्चा करने की हिम्मत लेखिका में इसलिए नहीं है क्योंकि उनके मन में घीसा के प्रति असीम स्नेह था। उसकी याद आते ही उनका मन भर आएगा और वे कुछ नहीं कह पाएँगी।

(ङ) लेखिका की पाठशाला पीपल के नीचे लगती थी क्योंकि गाँव में पाठशाला के लिए कोई निश्चित स्थान न था।

भाषा बोध

1. **घनी** छाया — विशेषण | हरे **कलम** — विशेष्य
क्षत-विक्षत **चरण** — विशेष्य | **लंबा** आदमी — विशेषण
इस **खंडहर** — विशेष्य | **निठल्ले** लड़के — विशेषण
दुर्बल हाथ — विशेषण | मलिन **शरीर** — विशेष्य
अंधी बुढ़िया — विशेषण | विचित्र **पाठशाला** — विशेष्य

2. **संभवत:** = शायद — हमें देर हो चुकी है, संभवत: हमें ट्रेन न मिले।
जिज्ञासु = जानने को इच्छुक — जिज्ञासु को ही ज्ञान प्राप्त होता है।
निठल्ले = बेरोजगार आवारा — रोजगार की कमी के कारण आजकल निठल्ले युवकों की कमी नहीं।
कोटर = पेड़ के तने में बना गहरा गड्ढा — बरगद के कोटर में चिड़िया का घोंसला था।
उद्विग्न = बेचैन — पाकिस्तान के हमले की खबर मिलते ही हमारी प्रधानमंत्री उद्विग्न हो उठी थीं।
अस्थिर = ढुलमुल — अस्थिर विचारों से जीवन नहीं चलता, विचारों में दृढ़ता लानी चाहिए।
अकारण = बेवजह — दूसरों पर अकारण आक्षेप नहीं लगाने चाहिए।

4 – पूस की रात

पाठ बोध

मौखिक

(क) हल्कू ने सहना को देने के लिए पैसे अपनी पत्नी से माँगे।

(ख) हल्कू की पत्नी का नाम मुन्नी था।

(ग) हल्कू ने तीन रुपए कंबल खरीदने के लिए जमा किए थे।

(घ) हल्कू की खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा कूँ-कूँ कर रहा था।

(ङ) हल्कू के खेत से कुछ दूर आमों का बाग था।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (स), (ङ) (ब), (च) (स)
2. (क) सहना एक साहूकार था। वह हल्कू के पास अपने उधार के रुपए लेने आया था।

(ख) खेत में ठंड को भगाने के लिए हल्कू ने निम्नलिखित उपाय किए —

(i) उसने चिलम पी-पीकर ठंड को भगाने की कोशिश की।

(ii) उसने जबरा को अपनी गोद में सुलाकर ठंड को भगाने की कोशिश की।
(iii) उसने अलाव जलाकर उसकी गर्मी से ठंड को भगाने की कोशिश की।

(ग) चिलम पीकर हल्कू यह निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ भी हो, इस बार सो जाऊँगा।

(घ) क्योंकि जानवरों का झुंड खेत में घुस आया था इसलिए जबरा जोर से भौंककर खेत की ओर भागा।

(ङ) हल्कू ने मुन्नी से यह झूठ कि उसके पेट में दर्द हो गया था इसलिए बोला क्योंकि उस भयानक सर्दी में वह जानवरों को भगाने जाने की बजाय सोना चाह रहा था।

(च) अलाव की गर्मी पाकर आलस्य आ जाने के कारण हल्कू जानवरों को भगाने खेत में नहीं गया।

(छ) फसल नष्ट हो जाने पर भी हल्कू इसलिए प्रसन्न था क्योंकि अब उसे फसल की रखवाली के लिए खेत पर ठिठुरने की आवश्यकता नहीं रह गई थी और वह अपने घर पर ही आराम कर सकता था।

3. (क) जबरा एक वफादार कुत्ता था। उसका सबसे बड़ा कर्तव्य अपने मालिक का हित करना था। अत: हल्कू के खेत में घुस आई नीलगायों को भगाने में वह जी-जान से जुट गया था। इसके पीछे अपने कर्तव्य को पूरा करने का अरमान ही उसके हृदय में था।

(ख) हल्कू ने जब मुन्नी से कहा कि सहना को यदि रुपए न दिए तो वह गाली देगा, तब मुन्नी ने यह तो कहा कि वह गाली क्यों देगा, लेकिन यह उसकी गलत धारणा थी। वास्तव में हल्कू की बात ही कटु सत्य थी, और वह सत्य मुन्नी के लिए एक भयंकर जीव के समान था जिससे डरकर उसे स्वीकार करना ही था।

(ग) हल्कू ने अपनी मजदूरी की कमाई में से एक-एक पैसा करके तीन रुपए कंबल खरीदने के लिए जमा किए थे। अत: जब मुन्नी से रुपए लेकर वह उन्हें सहना को देने के लिए बाहर को चला तो उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह अपना हृदय ही निकालकर देने जा रहा हो।

(घ) हल्कू अपने खेत से जानवरों को भगाने का इरादा करके उठा तो सही, लेकिन उसे हवा के एक ऐसे झोंके ने रुकने के लिए विवश कर दिया जो बहुत ही ठंडा, सुइयों की तरह चुभने वाला और बिच्छू के डंक की तरह भयंकर कष्ट देने वाला था।

(ङ) यह माना जाता है कि जब किसी व्यक्ति को पिशाच (भूत-प्रेत) लग जाता है तो वह उसका पीछा नहीं छोड़ता और उसकी छाती पर सवार रहता है। इसी प्रकार यद्यपि हल्कू चिलम पी-पीकर और करवट बदल-बदलकर जाड़े से पीछा छुड़ाने का प्रयास कर रहा था, परन्तु जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती पर सवार था अर्थात् वह जाड़े से नहीं बच पा रहा था।

भाषा बोध

1. (क) दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।

(ख) हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया! भला ऐसा भी कोई सोता है!

(ग) अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों ओर से जकड़ रखा था।

(घ) उसे अपनी जगह से हिलना भी जहर लग रहा था।

(ङ) हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में घुस आया है।

(च) रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे, तो समझे कोई भूत है।

(छ) इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

2. **आँखें तरेरना** – जब रजत ने बहुत शोर मचाना शुरू किया तो उसकी मम्मी उसकी ओर आँखें तरेरने लगीं।

ठंडा हो जाना – अपना झूठ छुपाने के लिए रहीम ने पहले तो गुस्सा दिखाया, परन्तु सारी सच्चाई सामने आते ही वह ठंडा हो गया।

सफाया करना – कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने शत्रुओं का सफाया कर दिया।

गला छूटना – बैंक से कर्ज लेने के बाद उसे चुकाने पर ही गला छूटता है।

बला सिर से टलना – पुलिस ने चोर समझकर रामू को पकड़ लिया, लेकिन जब असली चोर पकड़ा गया तब जाकर उसके सिर से बला टली।

चौपट हो जाना – जुए की लत लग जाने के कारण ही रफीक का व्यापार चौपट हो गया है।

नानी के नाम को रोना – चोरी करने पर नानी के नाम को रोने से कुछ नहीं होता, उसका दंड तो भुगतना ही पड़ता है।

5 – कृष्ण की चेतावनी

कविता बोध

मौखिक

(क) वर्षों तक वन में पांडव घूमे थे।

(ख) भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों के लिए दुर्योधन से पाँच गाँव माँगे।

(ग) अपने स्वरूप का विस्तार भगवान श्रीकृष्ण ने किया।

(घ) सभा में धृतराष्ट्र और विदुर प्रसन्न थे।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (ब)

2. (क) भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन को समझाने और भाइयों-भाइयों में होने वाले संघर्ष के बुरे परिणाम से उसके वंश को बचाने के लिए तथा पांडवों का संदेश लेकर हस्तिनापुर गए थे।

(ख) भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन से अपेक्षा रखते थे कि वह पांडवों के गुजारे के लिए उन्हें पाँच गाँव तो दे ही सकता है।

(ग) दुर्योधन की धृष्टता पर भगवान ने भीषण हुंकार करके अपने स्वरूप का विस्तार किया।

(घ) दुर्योधन, भगवान श्रीकृष्ण को बाँध लेने जैसे असाध्य कार्य को साधने चला था।

(ङ) युद्ध टालने के लिए पांडव आधे राज्य के स्थान पर केवल पाँच गाँव लेकर ही समझौता करने को तैयार थे।

(च) कृष्ण की चेतावनी सुनकर सारी सभा सन्न थी किंतु धृतराष्ट्र और विदुर प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें भगवान श्रीकृष्ण के विराट स्वरूप के साक्षात् दर्शन हो रहे थे।

3. (क) भगवान श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के सामने पांडवों का प्रस्ताव रखा और उसे मित्रता बनाए रखने के लिए काफी समझाया, परन्तु दुर्योधन ने उनकी बात नहीं मानी, उलटे उन्हें बंदी बनाने के लिए आदेश देने लगा। इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर उससे कहा कि अब तुझसे पांडव कुछ नहीं माँगेंगे वरन् अब युद्ध होगा। इस युद्ध में या तो पांडव विजय प्राप्त कर राज्य का सुख भोगेंगे या मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे।

(ख) जब मनुष्य के विनाश का समय आता है तो उसकी बुद्धि, सोचने-विचारने की क्षमता नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार जब भगवान श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को समझाया तो वह उनकी बात न मानकर उलटे उन्हें बाँधने के लिए कहने लगा, क्योंकि

उसके नाश का समय निकट आ चुका था। कहा भी गया है— ''विनाशकाले विपरीत बुद्धि:।''

(ग) श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को काफी समझाया परंतु जब वह उनकी बात न माना तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि— दुर्योधन, अब तेरा और पांडवों का ऐसा भयंकर युद्ध होगा कि आगे फिर ऐसा भयानक युद्ध कभी नहीं होगा।

(घ) जब दुर्योधन ने भगवान श्रीकृष्ण की बात नहीं मानी और उन्हें बाँध लेने का आदेश देने लगा, तब भगवान ने अपने स्वरूप का विस्तार किया और क्रोधित होकर उससे कहा कि— अरे दुर्योधन, अब मुझे अपने वश में करके दिखा। अपनी जंजीरों में मुझे बाँधकर दिखा।

भाषा बोध

1.	असाध्य	—	साध्य	याचना	—	दान
	प्रकाश	—	अंधकार	दिन	—	रात
	सुमार्ग	—	कुमार्ग	चढ़ना	—	उतरना
	निर्भय	—	भयभीत	मैत्री	—	शत्रुता

2. **कुपित** = क्रोधित — राहुल के झूठ बोलने पर उसके अध्यापक बहुत कुपित हुए।

प्रखर = तेज — सूर्य की प्रखर किरणें पर्वतों की चोटियों पर पड़ रही थीं।

भूशायी = मृत्यु को प्राप्त — महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े महारथी भूशायी हुए।

असाध्य = ऐसा कार्य जिसे पूरा न किया जा सके — साधारण वायुयान से चंद्रमा पर पहुँचना एक असाध्य कार्य है।

हुंकार = घोर गर्जना — नेताजी सुभाष चंद्र बोस की हुंकार से अंग्रेज काँप उठे।

प्रमुदित = प्रसन्न — बाग में खिले सुंदर फूलों को देखकर मेरा मन प्रमुदित हो उठा।

श्रृगाल = गीदड़ — भारत पाकिस्तान जैसे श्रृगालों से कभी नहीं डरा।

6 – आकांक्षी पुष्प

पाठ बोध

मौखिक

(क) लेखक के अनुसार, जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है— अल्प समय के लिए भी जीवन की महत्ता को प्राप्त करना।

(ख) एक दिन प्रात: ओस की बूँदों ने फूल की पंखुड़ियों को सँवारा था।

(ग) दुर्बल को परामर्श देते समय बलवान कठोर बन जाता है।

(घ) प्रकृति ने अपनी रहस्यपूर्ण जादू की उँगलियों से नीले फूल की जड़ों को छू दिया।

(ङ) बगीचे पर प्रचंड तूफान और मूसलाधार वर्षा ने धावा बोल दिया।

(च) गुलाब ने होंठों पर एक स्वर्गिक मुस्कान के साथ अंतिम साँस ली।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (अ), (ङ) (ब)

2. (क) नीले फूल ने प्रकृति से निवेदन किया कि मुझे एक दिन के लिए गुलाब का फूल बना दो।

(ख) छोटा-सा नीला फूल अपने आप को इसलिए हीन महसूस करता था क्योंकि वह सोचता था कि प्रकृति ने उसे छोटा और गरीब बनाया है। यहाँ तक कि वह अपना सिर आकाश की ओर नहीं उठा सकता था।

(ग) गुलाब के फूल ने नीले फूल से कहा कि तुम्हारी बातें बड़ी विचित्र हैं। तुम भाग्यवान हो, फिर भी अपने सौभाग्य को नहीं समझ पा रहे हो। प्रकृति ने तुम्हें सुगंध और सुंदरता दोनों प्रदान की हैं। संतोषी बनो और याद रखो कि जो छोटा बनकर रहता है, वह ऊपर उठता है और जो अपने को बड़ा समझकर रहता है, वह समाप्त हो जाता है।

(घ) गुलाब में परिवर्तित नीले फूल को तूफान द्वारा पृथ्वी पर अस्त-व्यस्त लुढ़का दिया गया था और युद्धस्थल में एक योद्धा कि भाँति भीगी घास पर छितरा दिया गया था।

(ङ) प्रकृति ने नीले फूल से कहा कि तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। इस अंधी लालसा के पीछे जो गुप्त विपत्ति है, उससे तुम अनभिज्ञ हो। यदि तुम गुलाब बन जाओगे तो तुम्हें अफसोस होगा और पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ न पा सकोगे।

(च) नीले फूल ने गुलाब के फूल को उत्तर दिया कि तुम मुझे इसलिए सांत्वना दे रहे हो क्योंकि तुम्हारे पास वह सब है, जिसके लिए मैं लालायित हूँ। तुम यह जताकर कि तुम बड़े हो, मुझे चिढ़ा रहे हो। तुम्हारी तरह जब कोई भाग्यवान किसी अभागे को नसीहत देता है तो मेरी तरह उसे बहुत कष्ट पहुँचता है। वास्तव में दुर्बल को परामर्श देते समय बलवान बहुत कठोर बन जाता है।

3. (क) गुलाब के फूल ने नीले फूल से।

(ख) नीले फूल ने गुलाब के फूल से।

(ग) प्रकृति ने नीले फूल से।

(घ) नीले फूल ने प्रकृति से।

(ङ) नीले फूल ने नीले फूलों की रानी से।

भाषा बोध

1. (क) कहाँ (ख) किस (ग) किस (घ) क्या

(i) इन सब फूलों में मैं कितना अभागा हूँ।

(ii) तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो।

(iii) देखो तो, तूफान ने अभिमानी पुष्पों की क्या गति बनाई है।

2. **हीन** = तुच्छ, निम्न कोटि का — हमें कभी भी स्वयं को हीन नहीं समझना चाहिए।

विपत्ति = मुसीबत — विपत्ति आने पर हिम्मत से उसका सामना करना चाहिए।

एकांत = निर्जन — कभी-कभी एकांत स्थान पर बैठकर अपने बारे में भी सोचना चाहिए।

अस्तित्व = सत्ता, होना — ट्रेन से गिरकर बेहोश हुए राहुल को होश आने पर अपने अस्तित्व का ज्ञान हुआ।

सौभाग्य = अच्छा भाग्य — बुरे कर्म सौभाग्य को भी दुर्भाग्य में बदल देते हैं।

कष्टदायक = दुख देने वाला — कभी भी कड़वे शब्द नहीं बोलने चाहिए क्योंकि वे दूसरों के लिए कष्टदायक होते हैं।

3.	सौभाग्य	—	दुर्भाग्य	अभागा	—	भाग्यवान
	सुगंध	—	दुर्गंध	दुर्बल	—	बलवान
	विद्रोही	—	देशभक्त	संतुष्ट	—	असंतुष्ट

7 – वीर शिवाजी

पाठ बोध

मौखिक

(क) शिवाजी और रामसिंह आगरा घूमने गए हुए थे।

(ख) नहीं; ताजमहल की नींव मामूली लेकिन मजबूत पत्थरों की बनी है।

(ग) रामसिंह के पिता का नाम मिर्जा राजा था।

(घ) यह बात शिवाजी कुँवर रामसिंह से कहते हैं।

(ङ) शिवाजी के अनुसार रेगिस्तानों में राणा प्रताप फाकाकशी कर रहे हैं।

(च) शिवाजी आलमगीर (औरंगजेब) से स्वयं मिलना नहीं चाहते थे।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (अ)

2. (क) मकबरा बनवाने के संबंध में शिवाजी का विचार था कि एक बादशाह अपना मकबरा इसलिए बनवाता है कि मरने के बाद लोग उसका नाम याद रखें। लेकिन इससे बेहतर यह है कि मनुष्य ऐसा काम करे कि अपना नाम याद रखने के लिए उसे मकबरा बनवाने की जरूरत ही न पड़े।

(ख) रामसिंह ने शिवाजी को कुछ दिन के लिए मान-सम्मान की बात दिल से निकाल देने के लिए कहा।

(ग) शिवाजी का औरंगजेब के प्रति विचार था कि औरंगजेब जब अपने पिता और भाइयों को मारते समय नहीं हिचकिचाया, वह उन्हें मारते समय कभी नहीं झिझकेगा, क्योंकि वह तो खून बहाना ही पसंद करता है।

(घ) औरंगजेब ने अपने पिता और भाइयों की हत्या की। उसने युद्धों में हजारों लोगों का खून बहाया। इसलिए शिवाजी ने औरंगजेब को खूँरेज बताया।

(ङ) शिवाजी का धरती के प्रति कहना था कि बीज डालने से पहले झाड़-झंखाड़ को उखाड़कर धरती को गोड़ना होता है। दुनिया में धरती से बढ़कर कोई दानी नहीं है। आवश्यकता है तो केवल उस पर परिश्रम करने की।

(च) ''क्या इसकी नींव भी संगमरमर की बनी है?'' इस वाक्य के द्वारा शिवाजी रामसिंह को समझाना चाहते थे कि हजारों लोगों कि कुर्बानी दिए जाने बाद किसी राजा का विजय का सपना साकार होता है, परंतु नाम केवल राजा का होता है। उन हजारों लोगों को कोई याद नहीं करता, जो उस सपने को पूरा करने के लिए अपनी कुर्बानी देते हैं। जैसे कि ताजमहल के ऊपर लगे संगमरमर की खूबसूरती की प्रशंसा तो सब करते हैं, परंतु उसकी नींव में दबे उन हजारों मामूली पत्थरों को कोई याद नहीं करता, जिनके बल पर यह ताजमहल खड़ा है।

(छ) रामसिंह ने शिवाजी को आश्वासन दिया कि — हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हमसे जो भी करते बनेगा, हम करेंगे और अगर कुछ भी न बन पड़ा तो आपकी खातिर जान तो दे ही सकेंगे।

3. (क) (अ), (ख) (ब), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (अ)

भाषा बोध

1. विवादित, परीक्षित, स्थापित, चालित, निर्मित, अपमानित, घोषित।

2. **आभारी** = एहसानमंद — आपने जो मेरी सहायता की है उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

गुस्ताखी = अशिष्टता — सुहेल की गुस्ताखी को देखकर उसकी अम्मी ने उसकी पिटाई की।

ताजिंदगी = पूरे जीवन-भर — देश को आजाद कराने के लिए कुर्बानी देने वाले शहीदों को हम ताजिंदगी नहीं भूलेंगे।

नखलिस्तान = मरूद्यान — रेगिस्तान में जहाँ कहीं पानी निकल आता है, वहाँ नखलिस्तान बन जाता है।

नसीहत = सदुपदेश, सीख — समाज में नसीहत देने वाले बहुत मिलते हैं लेकिन उसका पालन करने वाला कोई-कोई होता है।

फाकाकशी = भोजन न मिलने के कारण भूखों रहना — हमारे देश में आज भी लाखों लोग फाकाकशी का जीवन गुजार रहे हैं।

8 – छोटा जादूगर

पाठ बोध

मौखिक

(क) लेखक और छोटा जादूगर शरबत पीकर निशाना लगाने चले गए।

(ख) कार्निवाल के मैदान में लोगों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी गरम हो रही थी।

(ग) लेखक ने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

(घ) लेखक छुट्टियाँ मनाने के लिए कलकत्ता (कोलकाता) आया था।

(ङ) लेखक को कोलकाता से चलते-चलते एक बार उद्यान को देखने की इच्छा हुई।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (स), (ङ) (द)

2. (क) छोटा जादूगर लेखक से तब मिला जब वह कार्निवाल के मैदान में एक छोटे फुहारे के पास खड़ा था।

(ख) पिता के जेल जाने और माता की बीमारी जैसी परिस्थितियों ने छोटे जादूगर को अत्यधिक चतुर बना दिया।

(ग) छोटे जादूगर की परिस्थितियों और उसके विचित्र व्यवहार के कारण लेखक को उससे लगाव हो गया था; अत: वह उसे बार-बार देखना चाहता था।

(घ) छोटे जादूगर की वाचालता और अभिनय के कारण लेखक की पत्नी उसकी ओर आकर्षित हो गई थी।

(ङ) निर्मल धूप में सड़क के किनारे छोटे जादूगर का खेल इसलिए नहीं जम रहा था क्योंकि उसके मन में अपनी माँ की कही हुई यह बात कि— ''आज तुरंत चले आना, मेरी घड़ी समीप है''— उसे विचलित किए हुए थी।

(च) जब छोटे जादूगर ने अपनी माँ के ऊपर कंबल डालकर उसे ''माँ'' कहकर पुकारा, तो उसकी माँ की दयनीय दशा और अपनी माँ से छोटे जादूगर के प्रेम को देखकर लेखक की आँखों से आँसू निकल पड़े।

3. (क) छोटे जादूगर के चेहरे पर यद्दिप उसके अभाव के कारण दुख के भाव दिखाई दे रहे थे, किंतु उसका धैर्य भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इसलिए उसके अभाव में भी संपूर्णता थी।

(ख) लेखक ने निशाना लगाने के लिए छोटे जादूगर को बारह टिकट खरीदकर दिए। उसने निशाना लगा-लगाकर बारह खिलौने जीत लिए। इसके बाद उसे लेखक से कहा कि बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ। इतना कहकर वह बाहर जाकर चुपचाप भाग गया। इस पर लेखक ने कहा कि— ''इतनी जल्दी आँख बदल गई।''

(ग) जब लेखक को पता चला कि छोटे जादूगर के पिता जेल में हैं और माँ बीमार है, तो उसने छोटे जादूगर की गलती मानते हुए कहा कि तुम ऐसी स्थिति में भी तमाशा देख रहे हो। उस पर छोटे जादूगर के मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी अर्थात् उसने लेखक की बात को नकार दिया और कहा कि मैं तमाशा देखने नहीं आया बल्कि कुछ पैसे कमाकर ले जाऊँगा ताकि अपनी माँ को कुछ खिला सकूँ।

(घ) जब लेखक को छोटे जादूगर ने बताया कि उसकी माँ मृत्यु के निकट है, तो लेखक अपनी गाड़ी में बैठाकर फौरन उसे उसकी झोंपड़ी पर ले गया। छोटा जादूगर जैसे ही 'माँ-माँ' पुकारते हुए अपनी झोंपड़ी में घुसा, तभी उसकी माँ कि मृत्यु हो गई। इस पर छोटा जादूगर अपनी माँ से लिपटकर रोने लगा। यह दृश्य देखकर लेखक हक्का-बक्का रह गया और उसे ऐसा लगा कि उस उज्ज्वल धूप में जैसे सारा संसार किसी जादू की तरह चारों ओर नृत्य कर रहा है; अर्थात् माँ

के प्रति बेटे के उस असीम प्रेम के जादू से मानो सारा संसार नृत्य करने लगा।

4. (क) छोटे जादूगर ने लेखक से।
(ख) लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से।
(ग) छोटे जादूगर ने लेखक की पत्नी से।
(घ) लेखक ने छोटे जादूगर से।
(ङ) छोटे जादूगर ने लेखक से।

भाषा बोध

1. (क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल (ग) भविष्यत् काल
(घ) वर्तमान काल (ङ) भूतकाल (च) भविष्यत् काल
(छ) भविष्यत् काल (ज) वर्तमान काल।

2. विनोद — व्यंग्य विषाद — हर्ष
निकम्मा — परिश्रमी संध्या — प्रात:
दीर्घ — लघु रात — दिन

9 – पथिक से

कविता बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रत्येक स्थिति में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।
(ख) मनुष्य को कभी अपने कर्तव्य-पथ को नहीं भूलना चाहिए।
(ग) अपनी प्रथम विफलता में मनुष्य को अपना पथ (कर्तव्य) नहीं भूलना चाहिए।
(घ) देश के लिए हमें अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार रहना चाहिए।
(ङ) हमें पल-भर के लिए भी शंकित नहीं होना चाहिए अन्यथा हम अपने कर्तव्य-मार्ग से विचलित हो जाएँगे।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (स)

2. (क) सुंदरता को मृग-तृष्णा इसलिए कहा गया है कि जिस प्रकार मृग-तृष्णा में मृग भ्रमित होकर इधर-उधर भागा फिरता है और अपने पथ से विचलित हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य सुंदरता के मोहजाल में फँसकर अपने कर्तव्य-मार्ग से विचलित हो जाता है।
(ख) कवि ने मनुष्य के जीवन की पहली विफलता, कर्तव्य-पथ पर चलने वाले राही के स्वप्नों के मिट जाने को बताया है।
(ग) जब कर्तव्य-पथ का राही अपने मार्ग पर चलने को तैयार होता है तो उसकी प्रेयसी उसे तिलक लगाकर, भरे नयनों से विदा करती है। उस समय पथिक इस उलझन में फँस जाता है कि वह प्रेयसी के प्रेम की ओर ध्यान दे या अपने कर्तव्य का निर्वाह करे। यही कर्तव्य और प्रेम की उलझन है।
(घ) जब देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने की आवश्यकता पड़े तो ऐसी परिस्थिति में पथिक को असमंजस में नहीं पड़ना चाहिए वरन् अपना बलिदान देने को तुरंत तैयार हो जाना चाहिए।
(ङ) जब अपने ही पराए बन जाते हैं तब मनुष्य के मन पर घोर निराशा छा जाती है और वह अपने को बिलकुल अकेला महसूस करता है।
(च) जब अपने भी परायों जैसा व्यवहार करने लगते हैं तब राही एकाकीपन का अनुभव करता है।

3. (क) कवि राही को सचेत करता है कि उसे सुंदरता के झूठे मोहजाल में फँसकर अपने कर्तव्य-पथ को नहीं भूलना चाहिए।
(ख) कवि कहता है कि- हे पथिक! जब तेरे साथ अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे, तो कदम-कदम पर तुझे निराशा घेरेगी। लेकिन ऐसे समय में अपने को अकेला पाकर भी तुझे अपने कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं होना है।
(ग) देश को स्वतंत्रत कराने के लिए देशप्रेमियों को अपने प्राणों की बलि भी देनी पड़ती है। इसलिए जब मातृभूमि स्वतंत्रतारूपी यज्ञ में प्राणों की आहुति माँगे तो पथिक को इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

भाषा बोध

1. बचपन, दीवानापन, लड़कपन, सीधापन, सूनापन, दोहरापन।

2. **पथिक** — राही, राहगीर, बटोही।
आँख — नेत्र, नयन, चक्षु।
नदी — सरिता, आपगा, दरिया।
आकाश — नभ, गगन, आसमान।
बादल — मेघ, जलधर, वारिधर।

10 – अब्राहम लिंकन

पाठ बोध

मौखिक

(क) अमेरिका की खोज के लगभग सौ वर्ष बाद यूरोप के लोग यहाँ पर बसने लगे।
(ख) अमेरिका के दक्षिण-पूर्वी भाग में कपास की खेती की जाने लगी।
(ग) अमेरिका के दासों का जीवन पशुओं के जीवन की तरह था।
(घ) सन् 1833 में ब्रिटिश सरकार ने अपने सभी उपनिवेशों में दास व्यापार को अवैध घोषित कर दिया, जो कि एक ऐतिहासिक कार्य था।
(ङ) पहले ही वर्ष में हैरियट बीचर स्टोन द्वारा लिखित पुस्तक की तीन लाख प्रतियाँ बिक गईं।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (द), (ङ) (ब)

2. (क) अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में दासों से पशुओं की भाँति काम कराया जाता था और बहुत लाभ कमाया जाता था। इस प्रकार दक्षिणी राज्यों के लिए दास-प्रथा जीवनदायिनी थी। इसीलिए वे दास-प्रथा के समर्थक थे।
(ख) **अमेरिका में प्रचलित तत्कालीन दास प्रथा-** उन दिनों अमेरिका में खेतिहर मजदूरी का काम अफ्रीका से पकड़कर लाए गए व्यक्तियों से लिया जाता था। यूरोप के कुछ व्यापारी अफ्रीका महाद्वीप से अफ्रीकी लोगों को जबरदस्ती पकड़कर बंदी बना लेते थे। इन दासों को वे व्यापारी अमेरिका में लाकर, वहाँ के बाजारों में नीलाम करके बेच देते थे। अमेरिकी जमींदार इन अफ्रीकियों को खरीद लेते थे और हमेशा के लिए अपना दास बना लेते थे। इन दासों का पूरा परिवार तथा भावी संतानें भी दास ही रहती थीं। वे अपने मालिकों की उसी प्रकार संपत्ति समझे जाते थे, जैसे उनके पशु, मकान या अन्य सामान।
इन अफ्रीकी दासों का जीवन पशुओं के जीवन की तरह ही था। पशुओं की तरह ही उन्हें अफ्रीका से जंजीरों में बाँधकर अमेरिका लाया जाता था। पशुओं की भाँति ही बाजार में बोली बोलकर इनका क्रय-विक्रय होता था। इन्हें पशुओं की तरह हल या सामान ढोने की गाड़ी आदि में जोता जाता था तथा पशुओं की तरह ही इन्हें निर्ममता से पीटा जाता था।
(ग) अमेरिका का राष्ट्रपति बनने के बाद अब्राहम लिंकन ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि उन्होंने पूरे अमेरिका में दास-प्रथा की समाप्ति की घोषणा कर दी।

(घ) लिंकन की हत्या का कारण था— लिंकन का दास-प्रथा का विरोधी होना, इसीलिए दास-प्रथा के एक समर्थक ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

(ङ) लिंकन जब 22 वर्ष का था तो अपने परिवार को छोड़कर वह इलिनौयस राज्य की राजधानी स्प्रिंगफील्ड में आकर रहने लगा।

(च) लिंकन के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि सत्य और प्रेम के मार्ग पर चलकर गरीब-से-गरीब व्यक्ति भी उन्नति कर सकता है। साथ ही, सबके प्रति दया का भाव रखते हुए किसी के प्रति लेशमात्र भी द्वेष का भाव न रखते हुए हम सत्य में दृढ़विश्वास रखें और चाहे हमारे प्राण चले जाएँ परन्तु देश की एकता को टूटने न दें। इसके अतिरिक्त लिंकन के जीवन से हमें यह प्रेरणा भी मिलती है कि दृढ़संकल्प तथा परिश्रम के बल पर असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

3. (क) सन् 1492 में (ख) सन् 1833 में
(ग) सन् 1809 में (घ) सन् 1860 में
(ङ) सन् 1865 में (च) सन् 1854 में

भाषा बोध

1. (क) अब्राहम की माँ द्वारा उसे पढ़ना-लिखना सिखाया गया।
(ख) अब्राहम के पिता द्वारा अपना नया घर बनवाया गया।
(ग) अब्राहम के द्वारा कुश्तियों में कई पुरस्कार दिए गए।
(घ) अब्राहम लिंकन द्वारा रिपब्लिकन पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा गया।
(ङ) दक्षिणी राज्यों द्वारा युद्ध का बिगुल बजा दिया गया।

2. अमानवीय — प्रथा खेतिहर — मजदूरी
राजनीतिक — गतिविधियाँ विषम — समस्याएँ
दयनीय — दशा

3. **शोक में डूबना** — अपने चाचा की मृत्यु का समाचार सुनकर वहाब शोक में डूब गया।

आत्मा को झकझोरना — नशे में गाड़ी चला रहे ड्राइवर को होश आने पर जब यह पता चला कि उसकी गाड़ी के नीचे आकर एक आदमी मर गया है, तो इस बात ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया।

आँखों पर विश्वास न होना — जब जादूगर ने खाली टोपी में से जिंदा खरगोश निकालकर दिखाया तो हमें अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ।

बढ़-चढ़कर भाग लेना — हमें अपने विद्यालय की हर गतिविधि में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

विद्रोह का बिगुल बजा देना — अंग्रेजों के अत्याचार बढ़ जाने पर मंगल पांडे ने विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

आँख-मिचौनी चलना — बरसात के दिनों में सूरज और बादलों की आँख-मिचौनी चलती रहती है।

जादू का-सा प्रभाव होना — इंदिरा जी जब भाषण देती थीं तो उसका जादू का-सा प्रभाव होता था।

दिन-रात एक करना — अच्छे विद्यार्थियों को सफलता पाने के लिए दिन-रात एक कर देना चाहिए।

11 – सदाचार का तावीज़

पाठ बोध

मौखिक

(क) एक बार राज्य में हल्ला मच गया कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।

(ख) साधु ने भ्रष्टाचार से निपटने के लिए तावीज बनाया।

(ग) विशेषज्ञ जाति के लोग दो महीने बाद पुन: दरबार में हाजिर हुए।

(घ) एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया।

(ङ) साधु ने सदाचार के तावीज़ का प्रयोग कुत्ते पर किया था।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (स), (ङ) (स), (च) (ब)

2. (क) राजा ने अपने सभी दरबारियों को भ्रष्टाचार को ढूँढ़ने के लिए बुलाया।

(ख) राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से इसलिए की क्योंकि विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार को सूक्ष्म, अगोचर और सर्वव्यापी बताया, जो कि ईश्वर के गुण हैं।

(ग) दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का कारण, उसका बहुत बारीक होना बताया।

(घ) साधु ने बताया कि जिस आदमी की भुजा पर यह तावीज़ बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता है। इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं। इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर व्यक्ति सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही इस तावीज़ के गुण हैं।

(ङ) विशेषज्ञों ने बताया कि भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे; जैसे— ठेके देना बन्द करना होगा, जिससे अधिकारी ठेकेदारों से घूस न ले सकें। इसके अलावा किन कारणों से आदमी घूस लेता है, इस पर भी विचार करना होगा।

(च) इस पंक्ति में निहित भाव यह है कि सदाचार के तावीज़ से निकली आवाज के अनुसार तनख्वाह मिलने से पहले रिश्वत लेने में कोई बुराई नहीं है अर्थात् सदाचार का तावीज़ भी भ्रष्ट लोगों के साथ रहकर भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। इस प्रकार व्यंग्यकार ने स्पष्ट कर दिया कि भ्रष्टाचार को मिटाने का कोई उपाय नहीं है।

(छ) राजा ने सदाचार के तावीज़ बनवाने के लिए साधु को ठेका दे दिया और उसे तावीज़ बनाने का कारखाना खोलने के लिए पाँच करोड़ रुपए पेशगी दे दिए।

2. (क) दरबारियों ने राजा से।
(ख) राजा ने विशेषज्ञों से।
(ग) विशेषज्ञों ने राजा से।
(घ) साधु ने राजा से।
(ङ) कर्मचारी ने राजा से।

भाषा बोध

1. क्योंकि, कि, कुछ, पुनः, बिलकुल, भी।

2. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न, पूर्ण विराम
(ख) प्रश्नवाचक चिह्न
(ग) विवरण चिह्न, उद्धरण चिह्न, पूर्ण विराम
(घ) अल्प विराम, पूर्ण विराम, विस्मयादिबोधक चिह्न
(ङ) विस्मयादिबोधक चिह्न, पूर्ण विराम

3. भ्रष्टाचार — सदाचार विराटता — लघुता
सूक्ष्म — विशाल सर्वत्र — कहीं नहीं / एकत्र
खुश — नाखुश बेईमानी — ईमानदारी

12 – जब मैं यूरोप गया

पाठ बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत पाठ में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने अपनी प्रथम विदेश यात्रा के अनुभवों का वर्णन किया है।

(ख) एक पारसी दंपती और एक अंग्रेज, डॉ० राजेंद्र प्रसाद की ओर आकर्षित हुए।

(ग) लेखक सवेरे पाँच बजे जहाज से उतरकर मोटर पर कैरो चला गया।

(घ) लेखक अजायबघर से उदास होकर निकला।

(ङ) मिस्र में अरबी भाषा बोली जाती है।

(च) लेखक अपनी यात्रा के दौरान ऊँट पर पहली बार बैठा।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (अ), (ग) (ब), (घ) (ब), (ङ) (अ), (च) (द)

2. (क) लेखक ने कैरो के अजायबघर में पिरामिडों के अंदर से निकले शवों के साथ पहनने के कपड़े और गहने, बैठने के लिए चौकी, खाने के लिए अन्न, शृंगार के सामान, सवारी के लिए रथ और नाव आदि वस्तुएँ देखीं।

(ख) अजायबघर में राजाओं के शव आदि देखकर लेखक के हृदय पर जीवन की असारता का गहरा असर पड़ा। इसलिए वह अजायबघर से उदास निकला।

(ग) स्फिंक्स एक अजीब चीज है। इसका मुँह मनुष्य का और शरीर दानव का है। एक बहुत बड़ी मूर्ति मिस्र के रेगिस्तान में इसी शक्ल की बनी पड़ी है। यह भी कहा जाता है कि प्राचीनकाल में यह प्रश्नों के सही उत्तर देती थी। परंतु यह जो कुछ कहती थी, उसको समझना कठिन होता था। अब ये बातें तो नहीं हैं, पर यह मूर्ति उस काल का स्मरण अवश्य कराती है।

(घ) मिस्र के मुसलमान इसलिए पूरब की ओर मुँह करके नमाज पढ़ते हैं क्योंकि वहाँ से काबा पूरब की ओर पड़ता है।

(ङ) लेखक को इसलिए ऊँट की सवारी बिलकुल नई लगी क्योंकि वह पहले कभी ऊँट पर नहीं बैठा था।

(च) यूरोप की यात्रा में लेखक ने कैरो, इटली के निकटवर्ती सिसिली टापू का शहर, मार्सेल्स, लंदन, बर्नटेल न्यूटाटेल, लोसान, जेनेवा, बर्लिन, लिपजिग, म्यूनिख, वेनिस और रोम आदि शहर देखे।

3. स्वयं कीजिए।

भाषा बोध

1. सवारी – सवारियाँ | चीज – चीजें
वस्तु – वस्तुएँ | यात्री – यात्रियों
मूर्ति – मूर्तियाँ | पुस्तक – पुस्तकें

2. चीन – चीनी | दानव – दानवी
देश – देशी | प्रताप – प्रतापी
नाम – नामी | अंग्रेज – अंग्रेजी

13 – श्रीकृष्ण सौंदर्य

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (ब), (ग) (स), (घ) (ब)

2. (क) कृष्ण ने यह सिद्ध करने के लिए कि उन्होंने मक्खन नहीं खाया है, माता यशोदा से कहा कि सुबह तो तुमने मुझे गायों के पीछे मधुबन भेज दिया जहाँ से मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता था। ये ग्वाल-बाल मुझसे दुश्मनी रखते हैं, अत: इन्होंने जबरन मेरे मुँह पर मक्खन लपेट दिया है। हे माता! तू मन की बड़ी भोली है, जो इनके बहकावे में आ गई अथवा मुझे परायों से उत्पन्न समझकर तेरे मन में कुछ भेद-भाव आ गया है, जो तू मुझे माखनचोर कह रही है। पर सत्य तो यही है कि मैंने मक्खन नहीं खाया।

(ख) अंत में कृष्ण ने यशोदा को यह धमकी दी कि यह अपनी लाठी और कंबल लो, अब मैं गायें चराने नहीं जाऊँगा।

(ग) मीरा के अनुसार, श्रीकृष्ण ने पूर्वजन्म में उन्हें दर्शन देने का वचन दिया था। उसी वचन के आधार पर मीरा श्रीकृष्ण को दर्शन देने के लिए कहती हैं।

(घ) मीरा ने श्रीकृष्ण को मोल लिया है। क्योंकि वे स्वयं में अनमोल हैं; अत: यह फायदे का सौदा है।

(ङ) मीरा ने कृष्ण को कोई काला, कोई गोरा कहता है, लेकिन मीरा की दृष्टि में वे अनमोल हैं।

(च) मनुष्य के रूप में रसखान ब्रज और गोकुल गाँव में ग्वाले के रूप में जन्म लेना चाहते हैं।

(छ) रसखान पक्षी के रूप में यमुना किनारे के कदंब वृक्ष की डालों पर बसेरा करना चाहते हैं।

3. (क) श्रीकृष्ण माता यशोदा से कहते हैं कि– हे मैया! मैंने मक्खन नहीं खाया है। सुबह तो तूने मुझे गायों को चराने के लिए मधुबन भेज दिया, जहाँ दिन-भर इधर-उधर भटकने के बाद शाम होने पर मैं घर लौटा। मैं छोटी-छोटी बाँहों वाला बालक हूँ, तो बताओ मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ। ये तो इन ग्वाल-बालों ने दुश्मनी निकालने के लिए जबरदस्ती मेरे मुख पर मक्खन लपेट दिया है।

(ख) रसखान कहते हैं कि यदि मेरा अगला जन्म मनुष्य रूप में होता है तो मैं ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वाले के रूप में जन्म लेना चाहता हूँ। यदि मेरा जन्म पशु रूप में होता है तो इस पर मेरा कोई वश नहीं, परन्तु मैं पशु रूप में नंद बाबा की गायों के मध्य चरना चाहता हूँ।

भाषा बोध

1. गोविंदो – गोविंद | भोरी – भोली
कारो – काला | कछु – कुछ
जाणत – जानते | परायो – पराया
गोरो – गोरा | मँझारन – मध्य

2. पहर – प्रहर | साँझ – संध्या
घर – गृह | जसोदा – यशोदा
मूरति – मूर्ति | बिसाल – विशाल
सबद – शब्द

14 – शांति

पाठ बोध

मौखिक

(क) चील को सूरज के दर्शन होने पर उसे मुर्गी के छोटे, पिलपिले चूजों का स्मरण हो आया था।

(ख) चील अपने चकुले से सुंदर-सा सँपोला लाने का वादा करती है।

(ग) भील ने अपने बेटे को चकुला लाकर देने का वादा किया।

(घ) साँपिन भील को काटना चाहती थी।

(ङ) सँपोले पर चील टूट पड़ी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (द), (घ) (अ), (ङ) (स), (च) (ब)

2. (क) चील ने आखेट पर जाते समय चकुले को समझाया कि तुम अपने घोंसले से मत निकलना। मेरी बात का ध्यान रखना, भूलना नहीं।

(ख) कहानी के निम्नलिखित अंशों से संन्यासी का अपनी तपस्या पर अहंकार व्यक्त होता है—

(i) ''शांति के विधान के लिए मैं अपना तप, सुख, स्वर्ग सब न्योछावर करने के लिए तैयार हूँ।''

(ii) ''मेरी तपस्या की ही विजय है यह!''

(ग) संन्यासी की पल-भर की प्रसन्नता इसलिए विषाद में बदल गई क्योंकि उसकी आशा के विपरीत उसे एक आदमी, एक चील का चकुला और एक साँप का बच्चा तीनों के शव देखने को मिले जबकि वह उन्हें जीवित समझकर प्रसन्न हो रहा था।

(घ) कहानी में वर्णित प्राणियों के बच्चे अपने पारंपरिक भोज्य-पदार्थ को इसलिए छोड़ने के लिए तैयार थे क्योंकि वे किसी दूसरे की जान लेकर अपना पेट नहीं भरना चाहते थे।

(ङ) चील, भील और साँपिन ने अपने-अपने बच्चों से यह बात इसलिए कही क्योंकि वे अपनी शिकारी वृत्ति को छोड़कर एक संन्यासी की तरह अहिंसा की बात कर रहे थे।

(च) यह रूपक कथा हमें संदेश देती है कि विभिन्न प्राणियों के शिशुओं में जहाँ मन की निश्छलता, माँ के लिए अगाध प्रेम, उसके दुख की कल्पना-मात्र से ही अपने भोज्य-पदार्थों को त्यागने के लिए तत्पर हो जाना तथा संपूर्ण जीव-जगत के प्रति दया भाव है, वहीं उनके माता-पिता अपने संस्कारों के सहजात स्वभाव को न छोड़कर उसी के अनुरूप कार्य करते हैं।

3. (क) सन्यासी सूर्य को ईश्वर का प्रकाशमान स्वरूप मानकर प्रार्थना करता है कि हे भगवान! सूर्य रूप में आप इस धरती के अंधकार को दूर करते हो, परंतु इस धरती के लोगों के मन पर छाए लोभ, मोह, हिंसा आदि के अंधकार को आप कब दूर करोगे; अर्थात् इस धरती के लोगों के मन का यह अंधकार दूर होने पर ही यह संसार सुंदर बन पाएगा।

(ख) जब चील, भील और साँपिन से उनके बच्चों ने हिंसा और बदले की भावना का त्याग करने को कहा तब उन्होंने अपने बच्चों से कहा कि तुम्हें जंगल के उस संन्यासी की संतान होना चाहिए था। तुमने तो गलती से हमारे यहाँ जन्म लिया है।

(ग) यद्यपि सभी माता-पिता अपने बच्चों पर नियंत्रण रखते हैं और उन्हें स्वच्छंद होकर इधर-उधर घूमने से रोकने के लिए उपदेश देते हैं; परंतु माता-पिता के उपदेश का उल्लंघन कर आजादी से इधर-उधर घूमना बच्चे नहीं छोड़ते और यह परंपरा इस धरती के प्राणियों के जीवन में हमेशा से चलती आई है।

(घ) जब संन्यासी ने चकुले, भील और सँपोले को एक साथ पड़े देखा तो उसने सोचा कि वैर-भाव रखने वाले ये प्राणी एक साथ दिख रहे हैं तो उसे पल-भर के लिए यह भ्रम हुआ कि उसने जो सारे सजीवों में बंधुता निर्माण करने की माँग ईश्वर से की थी, वह शायद ईश्वर ने स्वीकार कर ली है। परंतु वे तीनों मृत अवस्था में एक-दूसरे के पास पड़े थे, बंधुता के भाव से एकत्र नहीं हुए थे।

भाषा बोध

1. **पुनरुक्त शब्द** — रो-रो, धीरे-धीरे, घट-घट, घर-घर, भाई-भाई।

शब्द युग्म — कूदता-फाँदता, धनुष-बाण, झाड़-झंखाड़, टेढ़े-मेढ़े, चोरी-छिपे।

2. पागल + पन = पागलपन — संहार + क = संहारक

दुश्मन + ई = दुश्मनी — संन्यास + ई = संन्यासी

चरमर + आहट = चरमराहट — बनावट + ई = बनावटी

विशेष + ता = विशेषता — असफल + ता = असफलता

15 — गिल्लू

पाठ बोध

मौखिक

(क) गिलहरी का बच्चा निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था।

(ख) लेखिका ने गिलहरी के बच्चे का उपचार किया।

(ग) उपचार के तीसरे दिन गिल्लू स्वस्थ हुआ।

(घ) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू लेखिका के पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और उसी तेजी से उतरता था।

(ङ) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू लेखिका के तकिए पर सिरहाने बैठकर एक परिचारिका की भाँति अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उनके सिर और बालों को हौले-हौले सहलाता रहता था।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (ब)

2. (क) लेखिका ने गमले में गिलहरी का बच्चा देखा। गिल्लू के उपचार के लिए लेखिका ने रुई से रक्त पोंछकर उसके घावों पर पेनिसिलिन का मरहम लगाया।

(ख) गिल्लू के निम्नलिखित व्यवहारों से पता चलता है कि वह एक समझदार प्राणी था —

(i) वह स्वयं हिलाकर अपने घर को झुलाता था।

(ii) भूख लगने पर वह 'चिक्-चिक्' करके सूचना देता था।

(iii) ठीक चार बजे पेड़ से उतरकर वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता था।

(iv) लेखिका को चौंकाने के लिए वह इधर-उधर छिप जाता था।

(v) वह लेखिका की थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता था।

(vi) लेखिका की अस्वस्थता में वह अपने पंजों से लेखिका के सिर और बालों को सहलाता था।

(ग) जब बाहर की गिलहरियाँ गिल्लू की खिड़की की जाली के पास आकर 'चिक्-चिक्' करने लगीं और लेखिका ने गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते हुए देखा तो उन्हें महसूस हुआ कि गिल्लू को अब मुक्त कर देना चाहिए।

(घ) लेखिका के निम्नलिखित व्यवहारों से ज्ञात होता है कि गिल्लू को उसके परिवार में एक सदस्य का स्थान प्राप्त था —

(i) गिल्लू को कौओं से बचाकर उसका उपचार करना। उसे दूध, पानी पिलाना।

(ii) उसे अपने निकट रखना। उसके भोजन की व्यवस्था करना।

(iii) चार मास का होने पर उसके रहने के लिए घर की व्यवस्था करना।

(iv) ऋतुकाल (प्रजनन काल) आने पर उसे स्वतंत्र करना।

(v) उसे अपने साथ अपनी थाली में खाने देना।

(vi) उसके झूले की सफाई स्वयं करना।

(vii) गिल्लू के अंतिम समय में उसके प्राण बचाने के लिए पूर्ण प्रयास करना।

(ङ) लेखिका को चौंकाने के लिए गिल्लू कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

(च) लेखिका गिल्लू को इस प्रकार लिफाफे में रख देती थी कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु भाग लिफाफे के भीतर बंद रहता था।

(छ) गिल्लू लेखिका के साथ उसकी थाली में से खाने के मामले में सब जानवरों में अपवाद था। लेखिका ने रुई की बत्ती से दूध पिला-पिलाकर गिल्लू को खाना सिखाया।

3. (क) जब एक परिचारिका किसी बीमार की सेवा करती है तो बीमार को राहत मिलती है। अत: जब वह उसके पास से हट जाती है तो बीमार को परेशानी होती है। इसी प्रकार जब लेखिका के अस्वस्थ होने पर गिल्लू उसके सिर और बालों को सहलाता-सहलाता हट जाता, तो लेखिका को उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता था।

(ख) यद्यपि लेखिका ने गिल्लू को हीटर आदि से गरमाई देकर उसे जीवित रखने का प्रयास किया, किंतु सुबह सूर्य के उदय होते ही गिल्लू मृत्यु को प्राप्त हो गया ताकि वह पुन: किसी अन्य योनि में जन्म ले सके।

(ग) 'गिलहरी का बच्चा' एक जातिवाचक संज्ञा है, परन्तु गिलहरी के बच्चे को जब लेखिका ने 'गिल्लू' नाम दे दिया तो उसका नाम जातिवाचक संज्ञा के स्थान पर व्यक्तिवाचक संज्ञा हो गया क्योंकि अब उसे उसके व्यक्तिगत नाम से पुकारा जा सकता था।

(घ) लेखिका ने कौओं का शोर सुनकर जब निकट जाकर देखा तो वहाँ गमले से एक गिलहरी का बच्चा चिपटा पड़ा था और वह बिलकुल हिल-डुल नहीं रहा था।

(ङ) गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया अर्थात् गिल्लू के जीवन में पहली बार बसंत ऋतु आई। यह ऋतु गिलहरियों का ऋतुकाल होती है जिसमें वे गर्भ धारण करती हैं। गिल्लू उसमें सहायक हो सकता था।

भाषा बोध

1. भी, ही, तक, भी, भर, भी, तक, मात्र।

2.

तीव्र	— मंद	अद्‌भुत	— सामान्य
उष्णता	— शीतलता	निश्चेष्ट	— सचेष्ट
सुलभ	— दुर्लभ	लघु	— दीर्घ
छोटे	— बड़े	निकट	— दूर

3. **सुलभ** = आसानी से प्राप्त — आजकल अधिकांश बड़े शहरों में वायु यातायात सुलभ है।

मरणासन्न = मृत्यु के निकट — गिल्लू को मरणासन्न जानकर लेखिका बहुत दुखी हुई।

उपचार = इलाज — एक अच्छा चिकित्सक ही गंभीर रोगी का उपचार कर सकता है।

आसक्त = लिप्त, मोहित — आजकल के अधिकांश नौजवान प्रेम-संबंधों में आसक्त हैं।

स्निग्ध = चिकना — स्नान के बाद हमारी त्वचा स्निग्ध हो जाती है।

निश्चेष्ट-सा = लगभग बेहोश — एक्सीडेंट में घायल हुआ युवक निश्चेष्ट-सा लग रहा था।

अपवाद = नियम के विपरीत नियम — व्याकरण के सभी नियम रूढ़ नहीं होते, उनके अपवाद भी मिलते हैं।

16 — बदलती हवा

पाठ बोध

मौखिक

(क) 'बदलती हवा' कहानी के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि समय कभी स्थिर नहीं रहता, वह निरंतर प्रगतिशील रहता है।

(ख) गाँव के सभी बुजुर्ग और नौजवान ब्यालू से निबटते ही अलाव के चारों तरफ बैठकर घरेलू बातें करते थे।

(ग) गाड़ी पर कलश रखकर किसान जमींदार के घर की ओर चल पड़ा।

(घ) किसान ने उन सातों कलशों को वापस वहीं रख दिया जहाँ से वे निकले थे।

(ङ) जमींदार का नौजवान दिलेर पोता नंगी तलवार लेकर किसान के घर पहुँचा।

(च) भाभी की चीत्कार सुनकर मझला और छोटा भाई बाड़े से दौड़े आए।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (ब), (ङ) (ब)

2. (क) अलाव के चारों तरफ बैठकर लोग घरेलू बातें करते थे। पुरानी बातों को सुनाते थे। हँसने की बात सुनकर हँसते थे, दुख की बात सुनकर दुखी होते थे।

(ख) गाड़ी में कलश रखकर किसान जमींदार के घर की ओर इसलिए चल पड़ा क्योंकि वह उन्हें जमींदार की सम्पत्ति समझकर, जमींदार को सौंपना चाहता था।

(ग) पुराने समय में गाँव के लोग सच्चे और सीधे-सादे थे। वे संतोषी थे और दूसरे की संपत्ति लेना पाप समझते थे। वे मिल-जुलकर रहते थे और समय पर एक-दूसरे की सहायता करते थे।

(घ) राजा का न्याय सुनकर किसान का मुँह इसलिए फीका पड़ गया क्योंकि राजा ने किसान से कलश लेने से इनकार कर दिया था। अत: उसे चिंता हो गई कि वह अब इन कलशों का क्या करेगा।

(ङ) राजा कलश लेने के लिए इसलिए तैयार नहीं हुआ क्योंकि राजा उन कलशों को किसान की मेहनत का फल मानता था, जिसे लेना राजा उचित नहीं समझता था।

(च) दूसरी पीढ़ी के किसान और जमींदार में यह अंतर आ गया कि जिस धन पर पहली पीढ़ी के किसान और जमींदार अपना-अपना अधिकार नहीं मानते थे, उसी धन को पाने के लिए दूसरी पीढ़ी के किसान और जमींदार आपस में लड़ने लगे, अर्थात् उनकी नीयत में खोट आ गई थी।

(छ) जमींदार का पोता किसान के घर इसलिए आया था ताकि वह अपना धन वापस ले सके।

(ज) राजा ने पंचों को इक्कीस-इक्कीस जूतों की सजा दी क्योंकि पंचों ने गड़े धन का भेद राजा से छुपाकर रखा था।

3. (क) किसान ने जमींदार से।

(ख) जमींदार ने किसान से।

(ग) पंचों ने किसान से।

(घ) जमींदार के बेटे ने किसान के बेटे से।

(ङ) जमींदार के बेटे ने किसान के बेटे से।

4. (क) पहले के समय के गाँव के समाज की स्थिति को स्पष्ट करते

हुए लेखक कहता है कि तब अग्नि का प्रयोग चूल्हे पर भोजन बनाने में किया जाता था, अन्यत्र कहीं भी क्रोधरूपी अग्नि नहीं दिखाई देती थी अर्थात् लोगों में आपस में लड़ाई-झगड़े नहीं होते थे।

(ख) सूर्योदय से पहले ही लोग जागकर अपने-अपने कार्यों में लग जाते थे। इस प्रकार सूर्योदय से पहले ही घरों में चहल-पहल हो जाती थी।

(ग) समय बीतने के साथ-साथ लोगों की सोच में बहुत बदलाव आया और यह बदलाव आता ही गया।

(घ) किसान के बेटे ने पंचों की बात नहीं मानी क्योंकि उसके पास उस धन की शक्ति थी जो उसे कलशों से प्राप्त हुआ था। उसी धन के बल पर उसने पंचों को अपने पक्ष में कर लिया।

(ङ) समय बदलने के साथ-साथ लोगों की सोच और भावनाओं में इतना अधिक अंतर आ गया कि स्वार्थ और लालच के वशीभूत लोगों में घर-घर में झगड़े-फसाद होने लगे। हर जगह अशांति और कलह का वातावरण छा गया।

भाषा बोध

1. (क) सारे इलाके की अकल के आप अकेले ही इजारेदार दिखते हैं।
   (ख) देखिए, आप फिर अन्याय की बात कर रहे हैं।
   (ग) आपके हाथ लगे हैं, तो आप रखिए।
   (घ) जमीन आपकी है, इसलिए लाया।
   (ङ) हाँ, आप नासमझ हैं, सो मैं जानता हूँ। तभी मेरे खेत में गड़े हुए कलश आप मुझसे बगैर पूछे, छुपाकर रात को धर ले आए।

2. **मुट्ठी गरम करना** = रिश्वत देना — आजकल सरकारी दफ्तरों में किसी भी काम को करवाने से पहले वहाँ के कर्मचारियों की मुट्ठी गरम करनी पड़ती है।

   मुँह फीका पड़ जाना = उदास हो जाना — रमेश ने जब अपने पिता से बाइक दिलवाने को कहा तो उनका इनकार सुनकर उसका मुँह फीका पड़ गया।

   नींद बेचकर जागरण मोल लेना = अकारण झगड़े में पड़कर अपनी शांति को भंग करके अशांत होना — सरकारी काम में बेवजह बाधा डालकर साइमन ने अपनी नींद बेचकर जागरण मोल ले लिया है।

   दाँताकसी होना = बहस होना — आजकल के नेताओं में जरा-जरा सी बात पर दाँताकसी होती है।

   आँखें दिखाना = धमकाना — रोहित बहुत देर से शैतानी कर रहा था, किंतु जब उसकी मम्मी ने आँखें दिखाईं तो वह चुपचाप बैठ गया।

   एड़ी से चोटी तक आग लगना = भयंकर रूप से क्रोधित हो जाना — एक विदेशी के मुँह से अपने देश के लिए अपमानजनक बात सुनकर नेताजी सुभाष के एड़ी से चोटी तक आग लग गई।

3.

चीत्कार	= ची: + कार	पंचायती	= पंचायत + ई
सूर्योदय	= सूर्य + उदय	नि:संकोच	= नि: + संकोच
निरंतर	= नि: + अंतर	नि:संदेह	= नि: + संदेह

17 — नींव की ईंट

पाठ बोध

मौखिक

(क) 'नींव की ईंट' पाठ की विधा 'निबंध' है।
(ख) सुंदर सृष्टि हमेशा बलिदान खोजती है।
(ग) ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया।
(घ) महर्षि दधीचि की हड्डियों के दान से वृत्रासुर का नाश हुआ।
(ङ) सत्य कठोर होता है।
(च) सुंदर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की-पक्की लाल ईंटों को नींव में जाना पड़ता है।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (स), (ङ) (द)

2. (क) इमारत की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है।
   (ख) समाज के कुछ व्यक्ति यह सोचकर कि एक सुंदर समाज बने, प्रसिद्धि के पीछे नहीं दौड़ते; बल्कि चुपचाप सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं।
   (ग) 'नींव की ईंट' पाठ में लेखक ने नौजवानों को देश के निर्माण में नींव की ईंट बनने की चुनौती दी है।
   (घ) 'नींव की ईंट' पाठ में इमारत, नींव, कंगूरा और कंगूरे के गीत गाने वाले क्रमश: देश, देश की उन्नति के लिए चुपचाप बलिदान देने वाले लोग, देश के लिए किए गए अपने कार्यों का बखान करके प्रसिद्धि पाने वाले बड़े लोग तथा बड़े लोगों के चापलूसों के प्रतीक होकर आए हैं।
   (ङ) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी बहुत-से व्यक्तियों के मौन बलिदान की आवश्यकता इसलिए बनी हुई है क्योंकि अभी हमारा देश पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं हुआ है। अत: देश को पूर्ण रूप से उन्नत बनाने के लिए नि:स्वार्थी लोगों के चुपचाप देश की सेवा में लगे रहने और अपना मौन बलिदान देने की आवश्यकता है।
   (च) नींव की ईंट पर ही किसी इमारत की मजबूती निर्भर करती है। अत: किसी इमारत के निर्माण में नींव की ईंट का सर्वाधिक महत्व होता है।

3. (क) सामान्य रूप से दुनिया के लोग किसी भी वस्तु की ऊपरी चमक-दमक और आकर्षक आवरण को ही देखते हैं, परन्तु उसे इस रूप में लाने के पीछे जिन लोगों का परिश्रम और त्याग होता है उस पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है।
   (ख) सभी जानते हैं कि सत्य कठोर होता है क्योंकि उसमें दृढ़ता होती है। साथ ही कठोर वस्तु में भद्दापन भी होता है। अत: जहाँ कठोरता होगी वहाँ भद्दापन भी होगा। इस प्रकार कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्म लेते हैं और साथ-साथ ही जीते हैं।
   (ग) जब किसी सुंदर वस्तु का निर्माण किया जाता है तो उसके लिए सदैव कठोर परिश्रम और बलिदान की आवश्यकता होती है। जैसे कि किसी सुंदर इमारत के निर्माण के लिए नींव की ईंट का और उन्नत देश के निर्माण के लिए उस देश के व्यक्तियों का बलिदान आवश्यक होता है।
   (घ) लेखक के अनुसार, यह विचार मूर्खतापूर्ण है कि जिसे हम देख नहीं सकते, वह सत्य नहीं है। किसी वस्तु के विषय में निरंतर खोज में लगे रहने पर ही उस वस्तु की सत्यता का पता चलता है। उसे देखने-मात्र से उसकी सत्यता या न देख पाने से ही उसकी असत्यता सिद्ध नहीं होती है।

भाषा बोध

1. आधारशिला = आधार की शिला — तत्पुरुष
   लोकलोचन = लोक का लोचन — तत्पुरुष
   भूख-प्यास = भूख और प्यास — द्वंद्व
   नव-जवान = नया जवान — कर्मधारय
   पुण्य-प्रताप = पुण्य का प्रताप — तत्पुरुष
   त्रिकोण = तीन कोणों का समूह — द्विगु

प्रतिदिन = दिन-दिन — अव्ययीभाव
शरणागत = शरण में आया हुआ — तत्पुरुष

2. स्वामी जी ने यज्ञ-मंडप में पधारकर उसकी शोभा सौ गुनी कर दी। एक भयानक धमाके ने कई दुकानों का अस्तित्व विलीन कर दिया। आज भी लोग रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य और साहस के गीत गाते हैं।

18 — जीवन नहीं मरा करता है

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (ब), (ङ) (द)
2. (क) कवि ने आशावान तथा सकारात्मक सोच अपनाने के लिए निम्नलिखित उदाहरण दिए हैं —
   (i) कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।
   (ii) कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
   (iii) कुछ दीयों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।
   (iv) चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।
   (v) लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।
   (vi) कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पण नहीं मरा करता है।

   (ख) सपने से कवि का आशय नयनरूपी सेज पर सोए हुए आँख के पानी से है।

   (ग) कवि ने कुछ सपनों के पूरा न होने पर निराश न होने की सलाह इसलिए दी है क्योंकि मात्र कुछ सपनों के पूरा न होने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता है। जीवन में सपने पूरे करने के लिए और भी अवसर मिलते रहते हैं, अत: निराश नहीं होना चाहिए।

   (घ) 'केवल जिल्द बदलती पोथी' से कवि का आशय है कि संसार में केवल शरीर बदलते हैं, आत्मा वही रहती है।

   (ङ) इस कविता के माध्यम से कवि हमें यह शिक्षा देना चाहता है कि हमें कुछ कठिनाइयों या अभावों के कारण जीवन में निराश नहीं होना चाहिए।
3. (क) कवि के अनुसार सपना केवल नयनरूपी सेज पर सोया हुआ आँख का पानी है; अर्थात् सपना एक कल्पना-मात्र है।

   (ख) कवि के अनुसार इस संसार में कुछ भी नष्ट नहीं होता है। जिस प्रकार पुस्तक की केवल जिल्द बदली जाती है, पुस्तक वही रहती है; उसी प्रकार मनुष्य का केवल शरीर बदलता है, आत्मा वही रहती है।

   (ग) कवि के अनुसार जिस प्रकार समुद्र में यदा-कदा किश्तियाँ डूबती रहती हैं परंतु तट पर हमेशा चहल-पहल बनी रहती है अर्थात समुद्री यातायात चलता रहता है, उसी प्रकार अनेक दु:खद घटनाएँ होने पर भी मानव-जीवन चलता रहता है।

   (घ) कवि के अनुसार जिस प्रकार माली उपवन को तो लूट सकता है परंतु फूल की गंध को नहीं लूट सकता, उसी प्रकार दुर्भाग्य मनुष्य के जीवन में उथल-पुथल तो कर सकता है, परंतु उसके गुणों को नष्ट नहीं कर सकता।
4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

भाषा बोध

1. **व्यर्थ** = बेकार — हमें अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए।
   नयन-सेज = नेत्ररूपी सेज — हमारे सपने नयन-सेज पर सोते हैं।
   उमर = आयु — हमें उमर के अनुरूप ही दूसरों से व्यवहार करना चाहिए।
   समस्या = कठिन प्रसंग, कठिनाई — हमें अपनी समस्या स्वयं हल करने का प्रयास करना चाहिए।
   वस्त्र = परिधान, कपड़े — हमें सदैव साफ-सुथरे वस्त्र पहनने चाहिए।

2.

दिवस	— रात्रि	सपना	— यथार्थ, साक्षात्
टूटना	— जुड़ना	गीली	— सूखी
खोना	— पाना	सुबह	— शाम
नफरत	— मुहब्बत	मरना	— जीना

3.

पनघट	— घाट, गाँव का कुआँ	किश्ती	— नाव
उपवन	— वाटिका	दर्पण	— शीशा
वस्त्र	— कपड़े, परिधान	मुखड़ा	— चेहरा
गगरिया	— मटकी	सूरज	— सूर्य

19 — ईदगाह

पाठ बोध

मौखिक

(क) रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद का त्योहार मनाया जाता है।

(ख) हामिद के साथ बड़ों के अलावा महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी जा रहे हैं।

(ग) 'ईदगाह' कहानी का प्रमुख पात्र हामिद है।

(घ) सम्मी दुकान से खंजरी खरीदता है।

(ङ) हामिद ने चिमटा तीन पैसे में खरीदा।

लिखित

1. (क) (द), (ख) (अ), (ग) (द), (घ) (ब), (ङ) (स), (च) (स)
2. (क) हामिद को ईदगाह भेजते समय उसकी दादी सोच रही थी कि- हामिद को कैसे अकेले मेले में जाने दूँ, कहीं भीड़-भाड़ में वह खो गया तो क्या होगा? यह छोटा बच्चा तीन कोस चलेगा कैसे? मेरे पास पैसे भी अधिक नहीं हैं, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए।

   (ख) ईदगाह में हामिद ने देखा कि ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछी हुई है। रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक दूर तक चली गई हैं।

   (ग) हामिद के साथियों ने मेले में खिलौने और मिठाइयाँ खरीदीं।

   (घ) हामिद ने अपने साथियों से कहा कि— चिमटे को कंधे पर रख लो तो यह बंदूक की तरह लगे। जमीन पर पटक दो तो इसका कुछ न बिगड़े। इसे हाथ में ले लो तो फकीरों का चिमटा बन जाए, और उनके सारे खिलौने मिलकर भी चिमटे का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इस प्रकार उसने अपने साथियों पर चिमटे का रौब जमाया।

   (ङ) चिमटा देखकर अमीना को क्रोध इसलिए आया कि मेले में हामिद ने अपने लिए कुछ भी नहीं खरीदा, बल्कि अपने पास के कुल तीन पैसों का वह चिमटा ही खरीदा।

   (च) हामिद की बात सुनकर अमीना इसलिए गद्‌गद हो गई क्योंकि हामिद ने अपनी सब इच्छाएँ रोककर अपनी दादी की सुविधा के लिए चिमटा खरीदा था।

   (छ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करना चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार कार्य करने पर ही व्यक्ति प्रशंसा का पात्र बनता है।
3. (क) हामिद ने अपनी दादी से।

   (ख) दुकानदार ने हामिद से।

   (ग) सम्मी ने हामिद से।

   (घ) महमूद ने हामिद से।

भाषा बोध

1. शानदार, देनदार, खरीदार, चौकीदार, पहरेदार, नातेदार, रिश्तेदार, हिस्सेदार।

2.

बधाई	—	बधाइयाँ	मिठाइयाँ	—	मिठाई
रेवड़ियाँ	—	रेवड़ी	पंक्ति	—	पंक्तियाँ
टोपियाँ	—	टोपी	घोड़ा	—	घोड़े
छाला	—	छाले	कंघे	—	कंघा
रोटियाँ	—	रोटी	घुड़की	—	घुड़कियाँ
चिमटा	—	चिमटे	पसलियाँ	—	पसली

3. **दिल बैठ जाना** — अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर रामकुमार का दिल बैठ गया।

छक्के टूट जाना — भारतीय सेना का शौर्य देखकर पाकिस्तानी सेना के छक्के छूट गए।

रंग जमाना — विद्वान व्यक्ति हर जगह अपना रंग जमा लेता है।

परलोक सिधारना — महात्मा गांधी 30 जनवरी 1948 को परलोक सिधारे थे।

माटी का चोला माटी में मिलना — मानव शरीर नश्वर है। एक दिन यह माटी का चोला माटी में मिल जाता है।

क्रोध काफ़ूर होना — छोटे बच्चे की मधुर बातें सुनकर हर किसी का क्रोध काफ़ूर हो जाता है।

गद्‌गद होना — रमेश का अपने प्रति प्रेम देखकर उसकी माता गद्‌गद हो उठी।

20 — ममता

पाठ बोध

मौखिक

(क) ममता के पिता का नाम चूड़ामणि था।

(ख) चूड़ामणि ने चुपचाप ममता के प्रकोष्ठ में प्रवेश किया।

(ग) पठान सैनिकों ने डोलियों में बैठकर दुर्ग-भर में प्रवेश किया।

(घ) ममता ने अपनी झोंपड़ी में हुमायूँ को आश्रय दिया।

(ङ) ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (ब), (ङ) (ब)

2. (क) ममता रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री थी। सब तरह के सुख होते हुए भी उसे यह दुख था कि वह विधवा थी।

(ख) उपहार के संबंध में ममता और चूड़ामणि की सोच में यह अंतर था कि ममता उसे अनर्थ मानती थी जबकि चूड़ामणि उसे बुरे समय के लिए सहारा मानते थे।

(ग) चूड़ामणि की दुश्चिंता का मुख्य कारण विधवा ममता के भविष्य का प्रश्न था। अपनी दुश्चिंता मिटाने के लिए उसने शेरशाह से घूस स्वीकार की।

(घ) ममता ने अपने धर्म— अतिथि सेवा की भावना से प्रेरित होकर हुमायूँ को आश्रय दिया।

(ङ) खंडहरों में छिपी ममता और अधिक भयभीत इसलिए हो उठी क्योंकि उसकी झोंपड़ी में विश्राम कर रहे हुमायूँ के सैकड़ों अश्वारोही वहाँ घूम रहे थे और झोंपड़ी से निकलकर हुमायूँ ने उनसे ममता को खोज निकालने के लिए कहा था।

(च) झोंपड़ी के स्थान पर एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर यह शिलालेख लगवाया गया— ''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनवाया।''

(छ) स्वर्ण लाने को चूड़ामणि का यह तर्क था कि— ''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत वंश का अंत समीप है, बेटी। किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए, बेटी।''

3. (क) हिंदू-विधवा का पति का आश्रय समाप्त हो जाता है, उसे समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है और उस पर तरह-तरह के बंधन लगा दिए जाते हैं। इसलिए हिंदू-विधवा को संसार में सबसे तुच्छ और निराश्रित प्राणी कहा जाता है।

(ख) ममता एक नव-यौवना विधवा थी। जिस प्रकार शोण नदी का पानी उफन रहा था, उसी प्रकार ममता का भरपूर यौवन भी उमड़ रहा था।

(ग) जिस समय स्वर्ण लेकर चूड़ामणि ममता के पास पहुँचे उस समय संध्या का सुनहला प्रकाश फैला हुआ था। उस प्रकाश में स्वर्ण का पीलापन भी फैलने लगा।

(घ) ममता जहाँ रह रही थी वह एक अनुपम स्तूप का खंडहर था। उसके टूटे-फूटे अंशों के रूप में भारतीय शिल्प की विभूति बिखरी पड़ी थी, जिसे ग्रीष्म ऋतु की चाँदनी शीतलता प्रदान कर रही थी।

भाषा बोध

1. (क) परंतु (ख) और (ग) तो (घ) क्योंकि (ङ) और (च) पर

2.

दुर्भावना	= दुः + भावना
निराश्रय	= निः + आश्रय
भग्नावशेष	= भग्न + अवशेष
अश्वारोही	= अश्व + आरोही
दीपालोक	= दीप + आलोक
पतनोन्मुख	= पतन + उन्मुख
निष्ठुर	= निः + ठुर

21 — लड़की

पाठ बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत पाठ में लेखक ने भारतीय परिवारों में लड़की की दयनीय स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

(ख) लेखक गाँव में अपने भतीजे के घर आया हुआ था।

(ग) माँ ने लड़की की पीठ पर तीन-चार लात जमा दीं।

(घ) अचानक लड़के के पेट में दर्द होने लगा।

(ङ) लड़की कटोरे में दाल-भात खा रही थी।

(च) लड़की की बात सुनकर लेखक भीतर तक चरमरा गया।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (क), (घ) (ब), (ङ) (स)

2. (क) लड़के और लड़की की वेशभूषा में यह अंतर था कि लड़का स्वेटर पहने था तथा उसके पैरों में जूते थे जबकि लड़की के पाँव नंगे थे और वह केवल सूती फ्रॉक पहने थी।

(ख) लेखक को लड़के पर गुस्सा आ रहा था, फिर भी वह चुप रहा, क्योंकि उसे अपनी हैसियत का पता था कि वह केवल दो दिन के मेहमान की तरह शहर से आया था।

(ग) क्योंकि माँ लड़की को एक अभिशाप समझती थी, इसलिए उसकी दृष्टि में लड़की का कोई महत्व नहीं था। इसीलिए उसने ऐसा कहा।

(घ) लेखक के यह पूछने पर कि ''तुम्हें बुरा नहीं लगता'', लड़की ने इनकार में सिर हिलाया और जवाब दिया— ''लड़की हूँ न!''

(ङ) लड़के के पेट में दर्द होने पर उसके माँ-बाप की प्रतिक्रिया इस प्रकार थी— बाप ने कहा कि लड़के ने गड़बड़-सड़बड़ कुछ नहीं खाया होगा बल्कि जो हम खा रहे हैं, वह ही यह खा रहा है। फिर लड़की को वैद्यजी को बुला लाने के लिए भेजकर वह स्वयं बनिए की दुकान से सोड़ा लाने चला गया। उधर माँ ने कहा कि यह लड़का खाता नहीं है, सिर्फ टूँगता है। फिर वैद्यजी के न मिलने पर वह लड़की को ही बुरा-भला कहने लगी।

3. (क) लड़के ने अपने पिता से।
(ख) लेखक ने स्वयं से।
(ग) लड़की ने अपनी माँ से।
(घ) बाप ने स्वयं से।
(ङ) लेखक ने सावित्री से।

भाषा बोध

1. (क) आप भी कुछ खाइए न।
(ख) आज मैं दिन-भर व्यस्त रहा।
(ग) मैं वहाँ गया तो था।
(घ) अब यह सामान मुझे ही पहुँचाना पड़ेगा।
(ङ) उसने अपने भाई तक को भी निमंत्रित नहीं किया।

2. (क) सवेरे-सवेरे पोथी-पत्रा लेकर बैठ गई।
(ख) आप लोग खाइए।
(ग) तब तक धूल-धूसरित सा लड़का कहीं से आ गया।
(घ) तब तक मैं बनिए के यहाँ सोड़ा लेने जा रहा हूँ।

हिंदी - 8

1 – फिर भी ऊपर चढ़ना है

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (अ)

2. (क) हमें चट्टानों से टक्कर लेकर आगे बढ़ना चाहिए।
(ख) पहाड़ों, सिद्धियों तथा देह का अंत है और अभियानों, संघर्षों, संधानों तथा प्राणों का अंत नहीं है।
(ग) हमारा बलिदान जीवन के अरमानों से ऊँचा है।
(घ) हमारा हौसला विंध्याचल हिमवानों से ऊँचा है।
(ङ) इससे कवि का अभिप्राय यह है कि पहाड़रूपी समस्याओं का अंत तो है परंतु उनके अभियानरूपी समाधानों का अंत नहीं है अर्थात् समस्याएँ तो समाप्त हो जाती हैं परंतु उनके समाधान कभी भी समाप्त नहीं होते।

3. (क) कवि चाहता है कि मानव अपने विभिन्न अभियानों और निर्माणों को दृढ़निश्चय से जारी रखे ताकि मानव-समाज के सामने विश्व के रहस्य उजागर हो सकें और उनका अपने अज्ञेय स्वप्नों को पूरा करने का हौसला बुलंद रहे।
(ख) कवि हमें प्रेरणा देते हुए कहता है कि हमें हर सीमा को पार करना है और अपने मार्ग में आने वाली रुकावट का मुकाबला करना है। हम हिमालय की चोटी पर तो पहुँच चुके हैं लेकिन हमें उससे भी अधिक ऊँचाई तक उन्नति करनी है।
(ग) कवि कहता है कि शरीर तो नश्वर है, इसका अंत तो हो सकता है परंतु प्राण (आत्मा) कभी नष्ट नहीं होते और इस प्रकार जीवन की धारा निरंतर चलती रहती है।

भाषा बोध

1. (क)

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
उपजाति	=	उप	+	जाति
प्रबल	=	प्र	+	बल
प्रशाखाएँ	=	प्र	+	शाखाएँ
आभूषण	=	आ	+	भूषण
प्रदेश	=	प्र	+	देश
असम	=	अ	+	सम

(ख)

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
अधिकतर	=	अधिक	+	तर
पहाड़ी	=	पहाड़	+	ई
पूर्वज	=	पूर्व	+	ज
खेती	=	खेत	+	ई

2. **हिमवान** = बर्फ को धारण करने वाला — हिमालय पर्वत को हिमवान भी कहते हैं।

संघर्ष = विषम परिस्थिति का मुकाबला करना — मनुष्य को अपनी उन्नति के लिए संघर्ष करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

सिद्धि = किसी कार्य या उद्देश्य की प्राप्ति — हमें अपनी कार्य की सिद्धि के लिए सजग होकर निरंतर प्रयास करना चाहिए।

तरुणाई = नौजवानी — भारत की तरुणाई में किसी भी शत्रु का मुकाबला करने का दम-खम है।

अज्ञेय = जिसे जाना नहीं जा सका है — आज भी हमारी पृथ्वी के अनेक रहस्य अज्ञेय हैं।

2 — जीवन का रहस्य

पाठ बोध

मौखिक

(क) शर-शय्या पर भीष्म पितामह लेटे थे।
(ख) संन्यास लेने पर युधिष्ठिर उतारू थे।
(ग) राज्याभिषेक के कुछ समय बाद श्रीकृष्ण युधिष्ठिर का कुशल-क्षेम पूछने आए।
(घ) श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर रथ पर आरूढ़ होकर कुरुक्षेत्र की ओर चल पड़े।
(ङ) समस्त आगमों में कर्म अर्थात् पुरुषार्थ को श्रेष्ठ बताया गया है।
(च) ऋषियों ने दीर्घायु, सदाचार अर्थात् नियमों के पालन और संध्या-उपासना के द्वारा प्राप्त की थी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (स)

2. (क) 'इच्छा-मृत्यु' से अभिप्राय है कि मनुष्य अपनी इच्छानुसार मृत्यु को प्राप्त हो। यह वरदान भीष्म पितामह को प्राप्त था।
(ख) भीष्म के अनुसार नास्तिक, क्रियाहीन, गुरु तथा शास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन करने वाले, धर्म को न जानने वाले और दुराचारी व्यक्तियों की आयु क्षीण हो जाती है।
(ग) 'भाग्य और पुरुषार्थ' के संबंध में भीष्म पितामह ने कहा कि भाग्य पुरुषार्थ को ही आगे करके स्वयं उसके पीछे चलता है। संचित किया हुआ पुरुषार्थ ही भाग्य को जहाँ-जहाँ चाहता है, वहाँ-वहाँ ले जाता है।
(घ) 'भीष्म के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियों में व्यक्ति पाप का भागी नहीं होता है जो निरपराध व्यक्ति अपनी रक्षा के

लिए शस्त्र उठाकर, मारने के लिए आए हुए शत्रु को रोके तथा उस पर प्रहार करके उसे मार डाले, तो वह पाप का भागी नहीं होता। इसी प्रकार जो व्यक्ति ग्राम-रक्षा के लिए अथवा दीन-दुखियों पर अनुग्रह करके किसी शत्रु का वध करता है या उसे बंधन में डालकर कष्ट पहुँचाता है, वह भी पाप का भागी नहीं होता। हम भीष्म पितामह की बात से सहमत हैं।

(ङ) हम भाग्य तथा पुरुषार्थ में से पुरुषार्थ को अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि पुरुषार्थ से ही भाग्य का निर्माण होता है।

(च) युधिष्ठिर महर्षि व्यास के आग्रह पर राज्याभिषेक के लिए तैयार हो गए।

(छ) महाभारत के युद्ध में हुए अपार जनसंहार से दुखी होने के कारण युधिष्ठिर संन्यास लेना चाहते थे।

3. (क) मनुष्य जब पुरुषार्थ करता है तो उसके भाग्य को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार पुरुषार्थ का सहारा पाकर भाग्य प्रबल हो जाता है।

(ख) मनुष्य कर्म करके ही अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। कर्म करके ही वह सब-कुछ प्राप्त कर सकता है। दूसरी ओर जो व्यक्ति केवल भाग्य के भरोसे रहते हैं और कर्महीन बने रहते हैं, उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

(ग) सदाचार से मनुष्य को आयु प्राप्त होती है। सदाचार से ही वह संपत्ति पाता है तथा सदाचार से ही उसे इस लोक में तथा परलोक में कीर्ति की प्राप्ति होती है। अत: सदाचार ही धर्म का लक्षण है।

(घ) मनुष्य को कभी भी किसी से बुरे वचन नहीं बोलने चाहिए, क्योंकि शस्त्रों से शरीर पर हुआ बड़े-से-बड़ा घाव तो भर सकता है, परंतु बुरे वचनों से मन पर हुआ घाव कभी नहीं भरता।

4. (क) युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से।

(ख) भीष्म ने युधिष्ठिर से।

(ग) युधिष्ठिर ने भीम से।

(घ) श्रीकृष्ण ने भीम से।

(ङ) भीम ने युधिष्ठिर से।

भाषा बोध

1. (क) कर्ता (ख) करण (ग) अधिकरण (घ) अपादान
(ङ) संप्रदान (च) कर्म (छ) संबंध (ज) कर्ता (झ) संबोधन

2. सन्मार्ग = सम् + मार्ग　　संचित = सम् + चित
राज्याभिषेक = राज्य + अभिषेक　　दीर्घायु = दीर्घ + आयु
राज्यारोहण = राज्य + आरोहण　　संपूर्ण = सम् + पूर्ण

3 – बाढ़ का बेटा

पाठ बोध

मौखिक

(क) सुकिया, बिसेसर की पत्नी थी।

(ख) प्रयाग सहनी, बिसेसर के दादा थे।

(ग) चौरे में नाव पहुँचते ही प्रयाग सहनी पतवार चलाना छोड़ देते थे।

(घ) बिसेसर धान रोपने के लिए पत्नी की हँसुली बंधक रखकर, पैसे लेकर आया।

(ङ) बिसेसर के घर से बीस मील की दूरी पर बीज मिलता था।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (द), (ग) (ब), (घ) (अ), (ङ) (स)

2. (क) प्रयाग सहनी बाढ़ आने को भगवान की खुशी इसलिए कहते थे क्योंकि बाढ़ आती थी तो मछलियाँ भी लाती थी, जो उनकी आय का साधन थीं।

(ख) बाढ़ का नाम सुनकर बिसेसर पर कोई असर इसलिए नहीं हुआ क्योंकि बाढ़ उसके लिए कोई नई चीज नहीं थी। बचपन से ही वह बाढ़ देखता आया था।

(ग) इस वर्ष गाँव में बाढ़ बड़ी गरज-तरज के साथ आई। लोग अपना सामान और ढोर-डंगर लेकर भागने लगे। पहले पानी गाँव में घुसा, फिर घरों में घुस गया। गाँव का हर घर पानी से घिर चुका था।

(घ) बाढ़ के कारण बिसेसर अपने कपड़े और अनाज न बचा सका। फिर बाढ़ के कारण उसकी फसल बेकार हो गई। उसे अपने घर की सारी व्यवस्था फिर से ठीक करनी पड़ी और खेत को ठीक-ठाक करना पड़ा। इसके अलावा बोने के लिए बीज खरीदने को उसे अपनी पत्नी की हँसुली बंधक रखकर पैसे लाने पड़े।

(ङ) बाढ़ के बाद बिसेसर ने अपना घर व्यवस्थित किया, खेत ठीक-ठाक किया और फिर से धान बोने के लिए उधार के पैसे से बीज लाया।

(च) धान रोपते हुए बिसेसर के मन में उस समय की कल्पनाएँ उठ रही थीं जब ये बीज लहलहा उठेंगे, बढ़ने लगेंगे, फैलने लगेंगे। कार्तिक में छाती-भर धान आएगा और माघ आते ही इन खेतों में सरसों फूलने लगेंगी।

(छ) किसान का काम ऊपर देखने से नहीं चलता, उसका काम भूमि पर परिश्रम करने से चलता है। इसीलिए बिसेसर अपनी पत्नी को ऊपर उड़ते विमानों को न देखने और अपनी जमीन पर ध्यान देने को कहता है।

भाषा बोध

(क) एक　　(ख) एक किलो
(ग) आधा किलो　　(घ) तीस
(ङ) सवा मीटर　　(च) बीस
(छ) चार।

4 – सोना

पाठ बोध

मौखिक

(क) सोना एक हिरनी थी।

(ख) एक दिन सोना रस्सी से बँधी थी। अचानक न जाने किस कारण से वह जोर से उछली, लेकिन रस्सी के झटके के कारण वह मुँह के बल जमीन पर आ गिरी और मृत्यु को प्राप्त हो गई।

(ग) 'सोना' पाठ की विधा 'रेखाचित्र' है।

(घ) हिरन की आँखों में मुख्य रूप से स्नेह और अहिंसा का भाव देखने को मिलता है।

(ङ) हिरन के सौंदर्य को गतिमय व सजीव कहा गया है।

(च) कुत्ता; स्वामी और सेवक का अंतर जानता है।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (द), (ग) (ब), (घ) (द), (ङ) (ब)

2. (क) लेखिका यह नहीं समझ पाती कि, जब मानव-समाज में मृत्यु को असुंदर और अपवित्र माना जाता है तो उन लोगों के कार्य को असुंदर और अपवित्र क्यों नहीं माना जाता जो जीवों को मारते हैं, उनकी हत्या करते हैं।

(ख) सोना का दिन-भर का कार्यकलाप इस प्रकार था- दूध पीकर और भीगे चने खाकर वह कंपाउंड में चौकड़ी भरती, फिर छात्रावास में घूमती। फिर मैस में जाकर कुछ खाती। फिर

वह घास के मैदान में दूब चरती और लोटती। भोजन के समय वह लेखिका के साथ कुछ-न-कुछ खाती थी।

(ग) लेखिका महादेवी वर्मा ने यह निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी। उन्हें अपना निश्चय इसलिए बदलना पड़ा क्योंकि उनके एक परिचित की पौत्री सुस्मिता ने उन्हें एक हिरन स्वीकार करने का आग्रह किया था, जिसे अपने पास रखने में वह असमर्थ थी।

(घ) सोना को छोटे बच्चे इसलिए अच्छे लगते थे क्योंकि वह उनके साथ अधिक समय तक खेल सकती थी।

(ङ) एक दिन सोना रस्सी से बँधी थी। अचानक न जाने किस कारण से वह जोर से उछली, लेकिन रस्सी के झटके के कारण वह मुँह के बल जमीन पर आ गिरी और उसका अंत हो गया।

(च) 'सोना' रेखाचित्र के माध्यम से हमें जानवरों की निम्नलिखित विशेषताएँ पता चलीं —

(i) जानवर शिशु रूप में कोमल, आकर्षक और सुंदर लगते हैं।

(ii) जानवर केवल अपने लिए उचित वस्तुएँ ही खाते हैं, हर वस्तु को नहीं खाते।

(iii) जानवर सेवक और स्वामी के अंतर को जानते हैं।

(iv) जानवर मनुष्य से स्नेह की अपेक्षा रखते हैं और स्नेह के बदले उससे स्नेह करते हैं।

(v) जानवर अपने ही नहीं वरन् दूसरे जानवरों के शिशुओं से भी प्रेम करते हैं।

(vi) वे अपने मालिक या पालनकर्ता से विशेष प्रेम करते हैं और उसकी अनुपस्थिति से बेचैन हो जाते हैं।

भाषा बोध

ग्रीष्म	+ अवकाश	= ग्रीष्मावकाश
परि	+ आवरण	= पर्यावरण
सत्य	+ आग्रह	= सत्याग्रह
अति	+ आचार	= अत्याचार
वार्ता	+ आलाप	= वार्तालाप
सूर्य	+ उदय	= सूर्योदय
वार्षिक	+ उत्सव	= वार्षिकोत्सव
सूर्य	+ अस्त	= सूर्यास्त

5 – खूनी हस्ताक्षर

कविता बोध

मौखिक

(क) इस कविता में बताई गई घटना सन् 1944 में घटित हुई थी।

(ख) सुभाष के अनुसार आजादी का इतिहास लिखने के लिए खून की नदियाँ बहाई जाती हैं।

(ग) सभा में लोग इंकलाब के नारे लगा रहे थे।

(घ) आजादी के परवाने पर युवकों ने रक्त की स्याही से हस्ताक्षर किए।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (अ), (ङ) (द)

2. (क) सुभाष ने देश की स्वतंत्रता की खातिर लोगों से कुर्बानी माँगी थी।

(ख) सुभाष के द्वारा आजादी के लिए प्राणों की माँग करने पर जनता इंकलाब के नारे लगाने लगी और लोग आजादी के लिए अपना रक्त बहाने के लिए तैयार रहने का आश्वासन देने लगे।

(ग) अपनी बाँह ऊँची करके सुभाष ने जनता से कहा कि तुम मुझे अपना खून देना और उसके बदले में भारत की आजादी मुझसे ले लेना।

(घ) सुभाष के द्वारा खून माँगने पर युवक ''हम देंगे खून'' कहते हुए युद्ध में जाने को तत्पर दिखाई देने लगे।

(ङ) सुभाष ने आगे आने के लिए ऐसे लोगों का आह्वान किया जो उनके आह्वान-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर कर सकें और हँसकर अपने सिर पर कफन बँधवा सकें।

(च) सुभाष की सभा में इंकलाब के नारे गूँज रहे थे।

(छ) इस कविता का शीर्षक 'खूनी हस्ताक्षर' इसलिए दिया गया है क्योंकि बिना रक्त बहाए, बिना कुर्बानी दिए आजादी प्राप्त नहीं हो सकती।

3. (क) नेताजी सुभाष नौजवानों से स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हमें जो आजादी प्राप्त होगी वह आप लोगों के प्राणों के बलिदान से ही प्राप्त होगी।

(ख) नेताजी के कहने पर जब वीर नौजवानों ने उनके अह्वान-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर किए तो समस्त बह्मांड ने भारतीयों के आजादी प्राप्त करने के लिए नए विश्वास को देखा और इस प्रकार भारतीय महावीरों ने अपने खून से नए इतिहास की रचना की।

भाषा बोध

1. (क) रक्तवर्ण (ख) जयमाला (ग) आजानुभुज (घ) नीतिज्ञ
(ङ) अशुद्ध

2.

खून - पानी,	आजादी - गुलामी
जीवन - मृत्यु	स्वतंत्रता - परतंत्रता
विश्वास - अविश्वास	देशभक्त - देशद्रोही

6 – तीर्थयात्रा

पाठ बोध

मौखिक

(क) लाजवंती को अपना पुत्र अनोखा इसलिए लगता था क्योंकि उसके पहले प्राप्त हुए पुत्र मर चुके थे, केवल यही एक पुत्र जीवित था।

(ख) लाजवंती के जीवन का सहारा उसका आखिरी पुत्र हेमराज था।

(ग) लाजवंती के पहले पुत्र का नाम मदन था।

(घ) लाजवंती का पति रामलाल मुलतान में नौकर था।

(ङ) लाजवंती को हरों की सिसकी मरने की आवाज सुनाई दी।

(च) हरों के जेठ ने हरो की दो सौ रुपए की मदद की।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (स), (घ) (अ), (ङ) (द)

2. (क) लाजवंती को अपने बेटे की इतनी चिंता इसलिए रहती थी क्योंकि उसके पहले उत्पन्न हुए पुत्र मर चुके थे और केवल यही एक जीवित पुत्र था।

(ख) जब वैद्यजी ने हेमराज के पिता को बुलवाने को कहा, तो लाजवंती इसलिए सहम गई क्योंकि उसके मन में यह डर बैठ गया कि हेमराज की तबियत ज्यादा खराब है और वह जल्दी ठीक होने वाला नहीं है।

(ग) लाजवंती अपनी मानता को पूरा नहीं कर पाई, फिर भी वह इसलिए खुश थी क्योंकि उसने मानता पूरी करने के लिए एकत्र किया दो सौ रुपया हरो की सहायता के लिए दे दिया। इस त्याग का सुख पाकर ही वह खुश थी।

(घ) वैद्यजी के शब्द सुनकर लाजवंती और रामलाल दोनों के

प्राण इसलिए सूख गए क्योंकि वैद्यजी ने उनसे यह कह दिया था कि आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना — बुखार एकाएक उतरेगा।

(ङ) हरो की बात सुनकर लाजवंती ने यह निर्णय लिया कि वह तीर्थयात्रा पर नहीं जाएगी वरन् तीर्थयात्रा के लिए एकत्र किए गए अपने रुपए हरो को दे देगी ताकि उसकी लड़की की शादी हो सके।

(च) इस कहानी का नाम 'तीर्थयात्रा' इसलिए रखा गया है क्योंकि इसमें दर्शाया गया है कि किसी दुखी व गरीब की सेवा करना ही तीर्थयात्रा करने के समान है।

3. (क) मरुस्थलों में रेत की चमक के भ्रम से हरिण उसे जल से भरी नदी समझकर उसके पास अपनी प्यास बुझाने पहुँचता है तो उसे वहाँ मात्र रेत मिलती है और कुछ दूरी पर, फिर उसे उसी तरह भ्रामक जलधारा दिखाई देने लगती है और अपनी मंजिल फिर दूर लगने लगती है। इसे मृग-मरीचिका कहते हैं। इसी प्रकार की दशा लाजवंती की हुई। वह तो समझ रही थी कि उसका पुत्र जल्दी ही ठीक हो जाएगा, परंतु जब वैद्यजी ने कहा कि बुखार हानिकारक भी हो सकता है अत: इसके पिता को बुलवा लो, तो लाजवंती सहम गई और सोचने लगी कि उसकी मंजिल अब भी दूर ही है।

(ख) जब संध्या के समय गायों को दुहने का समय होता है तो अपने खाद्य से संतुष्ट होने के कारण उनके थनों में उतरा दूध बूँद-बूँद करके टपकने लगता है। इसी प्रकार पुत्र का बुखार उतरा जानकर उसकी कुशलता से संतुट लाजवंती के चेहरे से प्रसन्नता टपक रही थी।

(ग) जैसे बागों में फूलों पर बुलबुल प्रसन्न होकर चहकती फिरती है, उसी प्रकार बुखार से मुक्त होकर हेमराज अपने आँगन में शोर मचाता हुआ फिरता रहता था।

(घ) मनुष्य जब किसी से कुछ पाता है या लेता है तो उसे कुछ खुशी मिलती है; लेकिन वह खुशी उस सुख के मुकाबले कुछ भी नहीं होती, जो किसी के लिए त्याग करने, उसकी सेवा-सहायता करने से प्राप्त होता है।

भाषा बोध

1. (क) यहाँ (ख) प्राय: (ग) प्यार से (घ) डरी-डरी सी (ङ) एकाएक
   (च) डबडबा
2. (क) विद्यार्थी = विद्या + अर्थी
   (ख) परमेश्वर = परम + ईश्वर
   (ग) सहानुभूति = सह + अनुभूति
   (घ) यद्यपि = यदि + अपि
   (ङ) महौषधि = महा + औषधि
3.

नजर = दृष्टि (यहाँ कुदृष्टि)	सख्त = कठोर
बुखार = ज्वर	तरफ = ओर
आखिरी = अंतिम	जरूर = अवश्य
मियाद = अवधि	आवाज = ध्वनि

7 – तेरह तारीख और शुक्रवार का दिन

पाठ बोध

मौखिक

(क) ब्राउन के परिवार में उसकी बूढ़ी माँ, पत्नी और दो बच्चे थे।

(ख) ब्राउन को तार बिंस्टन चर्चिल ने भेजा था।

(ग) ब्राउन को 13 दिसंबर, शुक्रवार के दिन कूच करना था।

(घ) जर्मनी के साथ युद्ध में तुर्की भी शामिल था।

(ङ) परमात्मा का रचा कोई भी दिन पराक्रमी के लिए मनहूस नहीं होता।

(च) ब्राउन अंगरेजी जहाजी सेना में एक पनडुब्बी 'सबमेरीन' का नायक रह चुका था।

लिखित

1. (क) (द), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (अ),
   (च) (i) (स); (ii) (ब); (iii) (अ)
2. (क) प्रथम विश्व युद्ध में, सन् 1918 में जर्मनी में घोर युद्ध हो रहा था। तुर्की भी जर्मनी के साथ युद्ध में शामिल था। अमेरिका अंगरेजों के साथ था, परंतु भूमध्य सागर में जर्मनी की पनडुब्बियों और तुर्की के एक 'ड्रेडनाट' भारी-भरकम फौजी जहाज ने जो उपद्रव मचा रखा था, उसके कारण स्वेज नहर का मार्ग बंद हो गया था। न अमेरिका कुछ कर पा रहा था और न इंग्लैंड। इस प्रकार युद्ध ने भयानक रूप धारण कर रखा था।

(ख) सबमेरीन को देखकर ब्राउन के चेहरे पर हवाइयाँ इसलिए उड़ने लगीं क्योंकि वह सबमेरीन जहाजी बेड़े से निकाली जा चुकी थी, बहुत जर्जर अवस्था में थी और किसी अभियान के लिए प्रयोग में लाने योग्य बिलकुल नहीं थी।

(ग) ब्राउन के कूच करने की तिथि और दिन सुनकर ब्राउन की माँ और पत्नी इसलिए घबरा गईं क्योंकि इंग्लैंड में 'तेरह तारीख और शुक्रवार का दिन' मनहूस माना जाता था।

(घ) 'ड्रेडनाट' को नष्ट करने के उपरांत भी ब्राउन और उसके साथी जलमग्न इसलिए रहे क्योंकि ब्राउन का विचार था कि तुर्की का बेड़ा हमारी खोज इधर-उधर तो करेगा, परंतु इस स्थान पर नहीं करेगा, क्योंकि उसे विश्वास होगा कि हम बचने के लिए भाग निकले होंगे। इस प्रकार वे भागे नहीं और वहीं जलमग्न रहे।

(ङ) तार पढ़कर ब्राउन इसलिए स्तब्ध रह गया था क्योंकि वह तो सेना से रिटायर हो चुका था, फिर उसे क्यों बुलाया गया है जबकि उसे ऐसे किसी बुलावे की आशा न थी।

(च) ब्राउन एक वीर सेनानायक, साहसी, देशप्रेमी, स्वस्थ, बुद्धिमान तथा अंधविश्वासहीन व्यक्ति था। ब्राउन के चरित्र की इन विशेषताओं को हम अवश्य ही अपनाना चाहेंगे क्योंकि ऐसे गुणों से ही व्यक्ति के उत्तम चरित्र का निर्माण होता है।

भाषा बोध

(क) भूतकाल	(ख) सार्वकालिक सत्य
(ग) भूतकाल	(घ) वर्तमान काल
(ङ) भूतकाल	(च) भविष्यत् काल
(छ) भूतकाल।	

8 – भिखारिन

पाठ बोध

मौखिक

(क) अंधी अपनी लाठी के सहारे अपनी झोंपड़ी की राह पकड़ती थी।

(ख) अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हाँड़ी गाड़ रखी थी।

(ग) सेठ बनारसीदास दिन के ग्यारह बजे तक धर्म-स्थान में संलग्न रहते थे।

(घ) अंधी ने सेठ से अपनी जमा-पूँजी में से दस-पाँच रुपए माँगे।

(ङ) मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने सेठ जी से विदा माँगी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (ब), (घ) (अ), (ङ) (ब), (च) (स)
2. (क) वृद्धा भिखारिन सुबह मंदिर के दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती थी और शाम तक आने-जाने वालों से भीख माँगती थी। फिर वह अपनी लाठी के सहारे अपनी झोंपड़ी की ओर चल पड़ती, जो कि नगर के बाहर थी। अत: मार्ग में भी वह भीख माँगती जाती। फिर झोंपड़ी पर पहुँचकर जो कुछ माँगकर लाती उसे अपनी गाड़ी हुई हाँडी में डाल देती। फिर अपने बालक को प्यार करती, खिलाती-पिलाती और सुलाती। इस प्रकार अंधी का दिन गुजरता था।
   (ख) अंधी भिखारिन को सेठजी से इसलिए घृणा हुई क्योंकि सेठजी ने उस के साथ धोखा किया था और अपने पास जमा अंधी के रुपयो में से, उसके बालक के बीमार होने पर भी, उसे कुछ नहीं दिया।
   (ग) वृद्धा के इस कथन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि पवित्र और निस्वार्थ प्रेम का मिलन इस संसार के स्वार्थी लोग नहीं होने देते, अत: पवित्र प्रेम करने वाले स्वर्ग-लोक में ही मिल पाते हैं।
   (घ) सेठ जी के कहने पर भी अंधी भिखारिन उनकी कोठी पर इसलिए नहीं रुकी क्योंकि मोहन के रूप में अपना सब-कुछ सेठ को दे देने के कारण वह सेठ से भी महान थी, इसलिए वह उसकी कोई भी सेवा स्वीकार करना नहीं चाहती थी।
   (ङ) वृद्धा भिखारिन के इस कथन से प्रकट होता है कि मानव-समाज में धनी व्यक्तियों के पास अपनों के इलाज के लिए तो धन होता है, परंतु गरीबों के लिए उनके पास धन नहीं होता, भले ही गरीब मर भी जाएँ।
   (च) यह विश्वास होने पर कि मोहन उन्हीं का बेटा है, सेठजी ने तुरंत उसको अंधी से छीना और अपने कलेजे से चिपटा लिया।
3. (क) अंधी ने सेठजी से।
   (ख) सेठजी ने मुनीम जी से।
   (ग) सेठजी ने अंधी से।
   (घ) अंधी भिखारिन ने सेठजी से।
   (ङ) मुनीम जी ने सेठजी से।
   (च) सेठजी ने अंधी भिखारिन से।

भाषा बोध

1. (क) सरल (ख) संयुक्त (ग) मिश्रित (घ) संयुक्त (ङ) सरल (च) संयुक्त
2. याचना-दान, साधारण-विशेष, असाधारण; परिचित-अपरिचित, निराश - आशावान, उपस्थित - अनुपस्थित।

9 - चींटी

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (ब), (ग) (स), (घ) (स), (ङ) (द)
2. (क) पंत जी ने चींटी को 'अक्षय चिनगी' इसलिए कहा है क्योंकि वह हर समय सजग रहकर कार्यरत रहती है और इस प्रकार उसमें कभी समाप्त (क्षय) न होने वाली ऊर्जा विद्यमान रहती है।
   (ख) चींटी एक अच्छे नागरिक की भाँति अपनी बाँबी में सभी कर्तव्य पूरे करती है। वह गाय चराती है, बच्चों की निगरानी करती है, सेना के दल बनाकर शत्रु से लड़ती है, वह अपना घर-आँगन और मार्ग साफ-सुथरे रखती है, आदि। चींटी के इन्हीं गुणों के कारण कवि उसे सुनागरिक कहता है।
   (ग) चींटी गाय चराने, बच्चों की निगरानी करने, शत्रु का मुकाबला करने कण-कण चुनकर अपना भोजन एकत्र करने, एक नगर के लिए आवश्यक सभी भवनों और रास्तों का अपनी बस्ती के लिए निर्माण करने, घर और अपनी बस्ती के मार्गों को साफ-सुथरा रखने, भविष्य के लिए भोजन एकत्र करने आदि अनेक काम करती है।
   (घ) चींटी को सामाजिक प्राणी इसलिए कहा गया है क्योंकि वह एक श्रमजीवी जीव है और एक सुनागरिक की भाँति अपने सामाजिक कर्तव्य निभाती है।
   (ङ) चींटी के गुणों का वर्णन करते हुए कवि जिन आदर्शों की ओर संकेत करता है वे इस प्रकार हैं — सामाजिकता, श्रमजीविता, दूरदर्शिता, सजगता आदि।
3. (क) कवि चींटी के व्यक्तित्व की गरिमा को स्पष्ट करते हुए कहता है कि चींटी जीवन की एक कभी नष्ट न होने वाली चिंगारी या ऊर्जा का अक्षय भंडार है, जो सदा परिश्रम में लगी रहती है और समस्त पृथ्वी पर निडर होकर घूमती है।
   (ख) कवि कहता है कि चींटी का शरीर तिल के समान बहुत ही छोटा है और वह घूमती हुई ऐसी लगती है मानो कोई छोटी-सी रेखा प्राण धारण करके झिलमिलाती घूम रही हो।
   (ग) कवि कहता है कि चींटी अपने कार्य से कभी नहीं हटती और बिना थके वह दिन-भर में मीलों चलती है।

भाषा बोध

1. अंधकार	- अंधेरा, तम, तिमिर।	शत्रु	- बैरी, दुश्मन, अरि।
किला	- दुर्ग, गढ़।	चींटी	- पिपीलिका।
सेना	- फौज, चमू।		
2. विरल	- सघन	तम	- प्रकाश
लघु	- दीर्घ	आदि	- अंत
सदृश्य	- अदृश्य	शत्रु	- मित्र

10 - भेड़ें और भेड़िए

पाठ बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत पाठ में लेखक ने धनी व समृद्ध लोगों पर व्यंग्य किया है।
(ख) चुनाव के समीप आते ही भेड़ों का उल्लास बढ़ता जाता था।
(ग) भेड़िए के आस-पास सियार रहते हैं।
(घ) मुसीबत में फँसे भेड़िए ने बूढ़े सियार को अपना गुरु माना।
(ङ) नीले सियार के बारे में बूढ़े सियार ने कहा कि ये नेता हैं और स्वर्ग के पत्रकार हैं।
(च) बूढ़े सियार ने धर्मगुरु हरे रंग के सियार को बताया।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (द)
2. (क) अच्छी शासन व्यवस्था के लिए पशुओं ने एक मत से यह तय किया कि वन-प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना की जाए।
   (ख) बूढ़े सियार ने ध्यानमग्न होकर भेड़िए से कहा कि यदि पंचायत में भेड़िया जाति का बहुमत हो जाए तो भेड़ियों की समस्या हल हो सकती है।
   (ग) बूढ़े सियार ने भेड़िए का रूप इसलिए बदला जिससे कि भेड़ें भ्रमित होकर उसे बहुत भला समझें और उसे अपना मत दें।

(घ) सियार और भेड़िए के माध्यम से लेखक समाज के धूर्त और चालाक तथा धनी व्यक्तियों पर व्यंग्य कर रहा है।

(ङ) बूढ़े सियार ने भेड़िए से तीन बातें ध्यान में रखने को कहा— अपनी हिंसक आँखों को ऊपर मत उठाना, हमेशा जमीन की ओर देखना और कुछ बोलना मत।

(च) पंचायत में भेड़ियों ने भेड़ों की भलाई के लिए पहला कानून यह बनाया कि हर भेड़िए को सवेरे नाश्ते के लिए भेड़ का मुलायम बच्चा दिया जाए, दोपहर के भोजन में एक पूरी भेड़ तथा शाम को आधी भेड़ दी जाए।

3. (क) भेड़िए को चिंतामग्न देखकर बूढ़ा सियार उससे पूछता है कि उसकी चिंता का क्या कारण है।

(ख) यहाँ लेखक समाज के सम्पन्न माने जाने वाले लोगों पर व्यंग्य कर रहा कि बलवान इस अहंकार में रहते हैं कि हम ही कमजोरों की रक्षा कर सकते हैं, जैसा कि नीले सियार ने भी भेड़ों को समझाने का प्रयास किया।

(ग) जब किसी के मन में भाव उमड़ते हैं तो उसका मन गद्‌गद हो जाता है जिससे गला रुँध जाने के कारण वह कुछ बोल नहीं पाता। इसी प्रकार बूढ़े सियार ने भेड़ों को समझाया कि उनके प्रति प्रेमभाव के कारण भेड़िया संत का गला भर आया है, अतः वह कुछ बोल नहीं पाएँगे।

(घ) बूढ़े सियार ने भेड़िए से कहा कि यदि पंचायत में भेड़िया जाति का बहुमत हो जाए तो सब समस्या समाप्त हो जाए। लेकिन भेड़िए तो भेड़ों के जन्मजात शत्रु होते हैं, अतः भेड़िए ने शंका व्यक्त की कि भेड़ों का मत उन्हें क्यों मिलेगा, क्योंकि कोई भी अपनी जिंदगी को मौत के हाथों नहीं सौंपेगा।

4. (क) भेड़िए ने बूढ़े सियार से।

(ख) बूढ़े सियार ने भेड़िए से।

(ग) बूढ़े सियार ने भेड़िए से।

(घ) नीले रंग के सियार ने भेड़ों से।

(ङ) हरे रंग के धर्मगुरु ने भेड़ों से।

भाषा बोध

1.	पशु – पशुता	बाल – बालपन
	जंगली – जंगलीपन	शत्रु – शत्रुता
	रंग – रंगीन	प्रभु – प्रभुता
2.	सुरक्षा – भय, असुरक्षा	क्षुद्र – महान
	बहुमत – अल्पमत	उल्लास – विषाद
	प्रजातंत्र – राजतंत्र	लज्जा – निर्लज्जता

11– अपना-अपना भाग्य

पाठ बोध

मौखिक

(क) नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी।

(ख) अंधकार में टप-टप घना कुहरा टपक रहा था।

(ग) लेखक रात को ठीक एक बजे तालाब के किनारे की भीगी बेंच पर बैठ गया।

(घ) लेखक के वकील दोस्त चार रुपए रोज के किराए वाले कमरे में सोने चले गए।

(ङ) लेखक के मित्र के पास दस-दस रुपए के नोट थे।

(च) लेखक के मित्र ने अगले दिन लड़के को होटल डी-पब में आने को कहा।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (अ), (ङ) (ब), (च) (अ)

2. (क) नैनीताल में लेखक और उसके मित्र ने देखा कि नैनीताल में संध्या का समय हो रहा था। ताल में किश्तियाँ अपने सफेद पाल उड़ाती हुई अपने अंग्रेज यात्रियों को लेकर, इधर-से-उधर खेल रही थीं। कहीं किनारे पर कुछ साहब अपनी बंसी पानी में डाले मछली पकड़ने में लगे थे। हजारों लोग इधर-से-उधर घूम रहे थे।

(ख) 'आदमियों की दुनिया' ने लड़के के पास बस यही उपहार छोड़ा था— मरने के लिए उसे वही जगह, वही दस बरस की उम्र और वही काले चीथड़ों की कमीज।

(ग) वकील साहब ने लेखक द्वारा पहाड़ी लड़के को नौकरी देने के लिए कहे जाने पर तर्क दिए कि —

(i) अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में गुन छिपे रहते हैं।

(ii) ऐरे-गैरे को नौकर बना लिया जाए और अगले दिन वह न जाने क्या-क्या लेकर चंपत हो जाए।

इससे उनकी दंभी और संकीर्ण मानसिकता का परिचय मिलता है।

(घ) होटल लौटकर लेखक की अपने मित्र से इस प्रकार बात हुई — मित्र ने कहा कि बहुत ठंड है और उस लड़के के पास बहुत कम कपड़े हैं। इस पर लेखक ने कहा कि यह तो संसार है, पहले हमें अपने आराम की सोचनी चाहिए। तब लेखक के मित्र ने कहा कि यह तो मात्र स्वार्थ है। इसे लाचारी, कठोरता या बेशर्मी भी कह सकते हैं।

(ङ) लड़का अपने गाँव से भागकर नैनीताल इसलिए आया था क्योंकि वहाँ कोई काम नहीं था। रोटी नहीं मिलती थी और भूखा बाप उसे मारता था।

(च) लड़का, अगले दिन निश्चित समय पर लेखक के होटल इसलिए नहीं आया क्योंकि वह रात में ही मर चुका था।

3. (क) लड़के ने लेखक के मित्र से।

(ख) लेखक ने वकील साहब से।

(ग) लेखक के मित्र ने लेखक से।

(घ) वकील साहब ने लेखक से।

(ङ) लेखक के मित्र ने लड़के को।

भाषा बोध

1. (क) ही, (ख) भी, (ग) तक, (घ) तो, (ङ) भी, (च) भी, (छ) भी, (ज) मात्र

2. धीरे-धीरे, छू-छू, चुप-चुप, दस-दस, अपना-अपना

12 – गणितज्ञ-ज्योतिषी आर्यभट

पाठ बोध

मौखिक

(क) आर्यभट द्वारा लिखित 'आर्यभटीय' ग्रंथ; गणित व ज्योतिष विषयों पर प्रकाश डालता है।

(ख) ग्रहण के दिन चारों ओर ''दे दान तो छूटे गिरान'' की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

(ग) चंद्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आता है और वह सूर्य को ढक लेता है तब सूर्यग्रहण होता है।

(घ) आर्यभट का जन्म गोदावरी तटक्षेत्र के अश्मक नामक जनपद में हुआ था।

(ङ) आर्यभट की पुस्तक के चार भाग इस प्रकार हैं— दशगीतिका, गणित, कालक्रिया और गोल।

(च) 'आर्यभटीय' के 'गोल' नामक चौथे भाग में गोल रचना से संबंधित गणित का विवेचन है।

लिखित

1. (क) (द), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (स), (ङ) (ब), (च) (द)
2. (क) भारत में प्राचीन काल के लोगों में सूर्यग्रहण के बारे में यह धारणा थी कि राहु नाम का राक्षस सूर्य को निगल जाता है, तब ग्रहण लगता है।
   (ख) आर्यभट ने पृथ्वी के बारे में कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है, वह अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है।
   (ग) आर्यभट को नीचा दिखाने और उनके सिद्धांत को गलत सिद्ध करने के लिए आलोचकों ने आर्यभट की पृथ्वी के परिभ्रमण जैसी नई मान्यताओं की कटु आलोचना की और उन्हें हेय करार दिया। उन्होंने लोकभय के कारण उनके ग्रंथ के 'भू:' (पृथ्वी) शब्द को 'भं' (तारागण) में बदल दिया। यह आर्यभट के पृथ्वी के परिभ्रमण के मत को नभ-भ्रमण में बदलने का प्रयास था।
   (घ) आर्यभट ने कहा कि पृथ्वी की बड़ी छाया जब चंद्रमा पर पड़ती है तो चंद्रग्रहण होता है। इसी प्रकार, चंद्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आ जाता है और वह सूर्य को ढक लेता है तब सूर्यग्रहण होता है।
   (ङ) आर्यभट की पुस्तक 'आर्यभटीय' चार भागों में विभक्त है— दशगीतिका, गणित, कालक्रिया और गोल। प्रत्येक भाग के विषय इस प्रकार हैं —
      (i) **दशगीतिका** - इसमें सूत्रों की तरह गणित-ज्योतिष की कुछ मूलभूत बातें दी गई हैं।
      (ii) **गणित** - इसमें वर्ग-वर्गमूल, घन-घनमूल, त्रैराशिक श्रेणियाँ, क्षेत्रफलों आदि से संबंधित नियम दिए गए हैं।
      (iii) **कालक्रिया** - इसमें काल-विभाजन, युग-पद्धति आदि की चर्चा की गई है।
      (iv) **गोल** - इसमें गोल रचना से संबंधित गणित का विवेचन है।
   (च) लेखक ने आर्यभट को प्राचीन भारतीय विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा इसलिए कहा है क्योंकि आर्यभट के साथ हमारे देश में गणित-ज्योतिष के अध्ययन की एक नई स्वस्थ परंपरा शुरू हुई थी।
3. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (ब)

भाषा बोध

1. (क) आर्यभट अपने ग्रंथ को बहुत छोटा बनाना चाहते थे।
   (ख) प्राचीन भारत में गणित-ज्योतिष के ग्रंथ भी पद्य में लिखे जाते थे।
   (ग) आर्यभट की पुस्तक का नाम है— आर्यभटीय।
   (घ) किसकी बात मानी जाए; ग्रंथों की या आर्यभट की।
   (ङ) एक दिन सवेरे से ही नगर में काफी चहल-पहल थी।
2. (क) अक्षरांक = अक्षर + अंक
   (ख) कुशाग्र = कुशा + अग्र
   (ग) न्यूनाधिक = न्यून + अधिक
   (घ) अधिकांश = अधिक + अंश

13 - मारीच-वध

कविता बोध

मौखिक

(क) कविता में 'सत्यसंध' शब्द 'श्रीराम' के लिए प्रयोग किया गया है।
(ख) 'श्रीरामचरितमानस' महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित है।
(ग) श्रीराम सोने के हिरन (मारीच) के पीछे भागे।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (अ), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (अ)
2. (क) सीता ने राम के सामने इच्छा प्रकट की कि— हे स्वामी, उस सोने के सुंदर हिरन का चर्म लाकर दीजिए।
   (ख) मारीच, रावण का मामा था। रावण उसके पास इस उद्देश्य से गया था कि वह सोने का मृग बनकर सीता के सामने चला जाए और वह षड्यंत्र रचकर सीता का हरण कर सके।
   (ग) श्रीराम ने मारीच को मोक्ष इसलिए दिया क्योंकि वह भगवान राम का सच्चा भक्त था।
   (घ) मारीच ने मरते समय भगवान राम को पुकारा क्योंकि उसके हृदय में भगवान राम के प्रति सच्चा प्रेम था।
   (ङ) देवताओं ने आकाश से श्रीराम पर पुष्प-वर्षा इसलिए की क्योंकि श्रीराम दीनों के बंधु हैं, इसीलिए उन्होंने असुर मारीच को भी मोक्ष प्रदान कर दिया।
   (च) श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि इस वन में बहुत-से राक्षस घूमते रहते हैं; अत: तुम समयानुसार बुद्धि-बल-विवेक से सीता की रक्षा करना।

भाषा बोध

मृग	= हिरन	असुर	= राक्षस
सुमन	= पुष्प	बिलोकि	= देखकर
सुर	= देवता	रुचिर	= सुंदर
पद	= पैर	सर	= बाण

14 – शाप से मुक्ति

पाठ बोध

मौखिक

(क) डॉ० प्रभात इलाहाबाद के निवासी थे।
(ख) बाग की मेड़ के पास आक के पौधे उगे हुए थे।
(ग) तीनों पिल्लों की आँखें आक के गाढ़े चिपचिपे दूध से बंद हो गईं।
(घ) सड़क पर किसी वाहन से तीसरा पिल्ला कुचलकर मर गया।
(ङ) डॉ० प्रभात की बातें सुनकर दादी की आँखें भर आईं।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (द), (ङ) (स)
2. (क) अध्यापक ने बच्चों को इसलिए डाँट लगाई क्योंकि वे आक के पत्ते तोड़ रहे थे जिनसे निकला दूध उनकी आँखों को हानि पहुँचा सकता था।
   (ख) लेखक ने मंटू के कुकृत्य के बारे में घरवालों को इसलिए नहीं बताया क्योंकि मंटू ने उसे किसी को न बताने के लिए कहा था, और वह मंटू को अपना मित्र मानता था।
   (ग) बचपन में बिछड़े हुए मित्रों मंटू और बब्बू की मुलाकात दिल्ली में हुई।
   (घ) जब डॉक्टर प्रभात दादी की आँखों की जाँच कर रहे थे, तब लेखक सोच रहा था कि उसे डॉक्टर प्रभात का चेहरा कुछ परिचित-सा मालूम होता है।
   (ङ) मंटू और बब्बू के लिए यह जानकारी कि आक के पत्ते तोड़ने से निकला दूध यदि आँखों में चला जाए तो आदमी अंधा हो सकता है, एकदम नई और विस्मयकारी थी।
   (च) मंटू ने पिल्लों की आँखों में आक के पत्तों का दूध इसलिए डाल दिया क्योंकि वह यह देखना चाहता था कि वे इससे वास्तव में अंधे होते हैं या नहीं।

(छ) डॉ० प्रभात को दिए गए दादी के इस आशीर्वाद कि- ''जीते रहो, मेरे लाल! तुम्हारी आँखों की ज्योति हमेशा बनी रहे''- से पता चलता है कि उन्होंने प्रभात को क्षमा कर दिया।

3. (क) डॉ० प्रभात ने लेखक से।
(ख) डॉ० प्रभात ने दादी से।
(ग) लेखक ने दादी से।
(घ) लेखक ने मंटू से।
(ङ) दादी ने लेखक से।

भाषा बोध

1. (क) आरुणि जैसे गुरुभक्त अब कहाँ?
(ख) आज के व्यस्त जीवन में व्यक्ति को फ़ुरसत के क्षण कहाँ?
(ग) श्रवण कुमार जैसे मातृ-पितृ भक्त अब कहाँ?
(घ) राजा हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी लोग अब कहाँ?
(ङ) वैसा अच्छा अवसर अब कहाँ?

2. **बुरा-भला कहना** = डाँटना - जब मुझे पता चला कि मेरे मित्र ने एक बुजुर्ग का अपमान किया है तो मैंने उसे बहुत बुरा-भला कहा।

टस से मस न होना = अपनी बात पर अड़े रहना - मैंने उस बच्चे को बहुत समझाया कि वह खिलौना लेने की जिद न करे, परंतु वह टस से मस न हुआ।

हृदय से लगाना = बहुत प्रेम जताना - जब रमेश ने कहा कि वह मुझे अपना सच्चा मित्र मानता है तो मैंने उसे हृदय से लगा लिया।

आँखें भर आना = दुखी होना - अपने पुराने दिनों के दुखों को याद करके उसकी आँखें भर आईं।

मुस्कान लुप्त होना = प्रसन्नता का भाव न रहना - जब कालू को पता चला कि पुलिस उसे ढूँढ़ रही है तो उसकी मुस्कान लुप्त हो गई।

15 – अँधेर नगरी

पाठ बोध

मौखिक

(क) प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने अंधी न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।
(ख) महंत ने नारायण दास से पूर्व दिशा की ओर जाने के लिए कहा।
(ग) गोवर्धन दास ने भिक्षा के पैसे मिलने पर सबसे पहले साढ़े तीन सेर मिठाई खरीदी।
(घ) अँधेर नगरी में महंत का चेला गोवर्धन दास रुक जाता है।
(ङ) बकरी कल्लू बनिए की दीवार गिरने से दब गई।

लिखित

1. (क) (द), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (स), (ङ) (ब), (च) (स)

2. (क) महंत अँधेर नगरी को छोड़कर इसलिए चले गए क्योंकि वे समझ गए थे कि जिस नगरी में हर चीज टके सेर बिकती हो, वहाँ न्याय व्यवस्था ठीक नहीं हो सकती, अत: उनके साथ कभी भी कोई अनहोनी हो सकती है।
(ख) सिपाही गोवर्धन दास को इसलिए पकड़कर ले गए क्योंकि वह मोटा था और उसके गले में फाँसी का फंदा डाला जा सकता था।
(ग) महंत ने यह कहकर कि इस शुभ घड़ी में जो मरेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा, राजा को उकसा दिया। यह सुनते ही राजा खुद फाँसी पर चढ़ गया और इस प्रकार महंत ने गोवर्धन दास को फाँसी पर चढ़ने से बचाया।
(घ) राजा स्वयं फाँसी पर इसलिए लटक गया क्योंकि महंत ने उसे यह बताया कि इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा।
(ङ) बकरी वाला फरियादी था। वह राजा के पास यह फरियाद लेकर आया था कि कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी और उसके नीचे दबकर मेरी बकरी मर गई। मुझे न्याय मिले।
(च) बकरी के मरने के अपराध में कोतवाल को फाँसी की सजा का हुक्म हुआ।
(छ) महंत ने अपने शिष्य के कान में कहा होगा— ''तुम भी फाँसी चढ़ने को कहना, मैं भी कहूँगा। बाकी मामला मैं सँभाल लूँगा।''

3. (क) गोवर्धन दास ने हलवाई से।
(ख) महंत ने गोवर्धन दास से।
(ग) सिपाही ने गोवर्धन दास से।
(घ) राजा ने कल्लू बनिए से।
(ङ) कसाई ने राजा से।

भाषा बोध

1. बेअसर, बेकाबू, बेचैन, बेपरवाह, बेहिसाब, बेहोश।

2.	अच्छा	-	अच्छाई	खराब	-	खराबी
	अधिक	-	अधिकता	मोटा	-	मोटाई
	सच्चा	-	सच्चाई	बूढ़ा	-	बुढ़ापा
	बुरा	-	बुराई	आजाद	-	आजादी
3.	भाजी	=	सब्जी	फरयादी	=	प्रार्थी
	ज्यादा	=	अधिक	खयाल	=	विचार
	कसूर	=	दोष, अपराध	नाटक	=	अभिनय
	बेकसूर	=	निरपराध	सबब	=	कारण, वजह

16 – कामचोर

पाठ बोध

मौखिक

(क) तनख्वाह के सपने देखते हुए सब बच्चे काम पर तुल गए।
(ख) दो-चार बच्चों ने लकड़ियाँ लेकर दरी की पिटाई शुरू कर दी।
(ग) बच्चों ने आँगन में झाड़ू लगाने का फैसला किया।
(घ) कीचड़ में लथपथ होने पर बच्चे चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।
(ङ) बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिया।
(च) दीदी चौखट पर बैठकर रोने लगी।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (ब), (घ) (स), (ङ) (द)

2. (क) बच्चों को अब्बा द्वारा बताए गए कार्य इस प्रकार थे— दरी साफ करना, आँगन से कूड़ा हटाना, पेड़ों को पानी देना आदि।
(ख) झाड़ू का हश्र यह हुआ कि एक ही झाड़ू होने के कारण बच्चों की छीना-झपटी में, क्षण-भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए।
(ग) कीचड़ में सने बच्चों को नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए पास के बँगलों से नौकर बुलवाए गए।
(घ) पेड़ों को पानी देने के लिए पानी लेने पर बच्चों में घमासान मच गया। पहले तो वे लात-घूँसों से लड़े, फिर अपने-अपने बरतन से वार करने लगे और एक-दूसरे का बुरा हाल कर दिया।

(ङ) दिन-भर की भूखी भेड़ों ने दाने का सूप देखकर भगदड़ मचा दी, जिससे सूप बिखर गया। सूप के पीछे दौड़ती भेड़ों के रास्ते में जो कुछ भी आया, उन्होंने उसे तहस-नहस कर डाला।

(च) घर के सब सामान को तहस-नहस हुआ देखकर अम्मा ने अपना सिर पीट लिया।

(छ) अम्मा बच्चों को काम करने के लिए इसलिए मना करती थीं, क्योंकि बच्चे बहुत शैतान थे और वे कोई भी काम ठीक से नहीं कर सकते थे।

3. (क) अम्मा ने अब्बा से। (ख) अम्मा ने अब्बा से।
(ग) अब्बा ने बच्चों से। (घ) अब्बा ने बच्चों से।
(ङ) अब्बा ने बच्चों से।

भाषा बोध

1. खयाल - विचार फरमान - आदेश
मिसाल - उदाहरण काबू - अधिकार, वश में करना
प्रलय - विनाश तनख्वाह - वेतन

2. **याचना** = माँगने हेतु प्रार्थना — भिखारी ने सेठ से सहायता के लिए याचना की।

कामचोर = काम से जी चुराने वाला — इस लड़के से किसी भी काम को कहो, यह कुछ करता ही नहीं। लगता है कि यह पक्का कामजोर है।

फरमान = आदेश — बादशाह ने अपराधी को पकड़ लाने का फरमान सुनाया।

कतार = पंक्ति — प्रार्थना के लिए सब बच्चे कतार में खड़े होते हैं।

तूफान = बहुत तेज आँधी, बवंडर — कल आए तूफान ने सैकड़ों लोगों को बरबाद कर दिया।

17 - कर्मवीर

कविता बोध

मौखिक

स्वयं कीजिए।

लिखित

1. (क) (अ), (ख) (स), (ग) (द), (घ) (ब)

2. (क) कर्मवीर लोग अपना समय बेकार नहीं करते, किसी काम को करने में आनाकानी नहीं करते और कुछ भी करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं; अत: वे दूसरों के लिए नमूना बन जाते हैं।

(ख) कवि ने कर्मवीर के लक्षण इस प्रकार बताए हैं —

(i) वे सामने आए विघ्नों, बाधाओं को देखकर नहीं घबराते।

(ii) वे केवल भाग्य के भरोसे रहकर, दुख भोगकर नहीं पछताते।

(iii) किसी भी कठिन काम को करने से वे उकताते नहीं हैं।

(iv) मुसीबत में वे विचलित नहीं होते।

(ग) इससे कवि का तात्पर्य है कि कर्मवीर लोग भयानक और अस्त-व्यस्त वातावरण को भी अपने प्रयासों से मंगलमय और सुंदर बना देते हैं।

(घ) जब कर्मवीरों को उलझने आकर पड़ती हैं तो वे और अधिक उत्साह से उनका सामना करते हैं।

(ङ) इस कविता का उद्देश्य बच्चों को कर्मशील बनने के लिए प्रेरित करना है।

2. (क) जो कर्मवीर होते हैं, उनके बुरे दिन भी एक क्षण में अच्छे दिनों में बदल जाते हैं और हर जगह, हर काल में कर्मवीर ही उन्नति और समृद्धि प्राप्त करते हैं।

(ख) कवि कर्मवीर लोगों की प्रशंसा करते हुए कहता है कि ऐसे लोगों ने ही आकाश के अनेक रहस्यों का भेद बताया है और आजकल जो हम तारों पर आधारित विभिन्न वैज्ञानिक यंत्र और क्रियाकलाप देखते हैं वह सब ऐसे ही कर्मवीरों के परिश्रम का परिणाम हैं।

(ग) यद्यपि कर्मवीरों के विरोधी उनके कार्य में सैकड़ों अड़चने डालते हैं, लेकिन वे अपना काम पूरा करके ही रहते हैं।

भाषा बोध

1. विरोधी - विरोधियों सड़क - सड़कें
बाधा - बाधाएँ जंगल - जंगलों
पर्वत - पर्वतों नमूना - नमूने
राशि - राशियाँ नदी - नदियाँ

2. दुर्भावना = दु: + भावना
सदाचार = सत् + आचार
सद्भाव = सत् + भाव
पुनरावृत्ति = पुन: + आवृत्ति
विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

18 - कुटीर

पाठ बोध

मौखिक

(क) गोकुल पैसों की जरूरत पड़ने पर भी ईमानदारी का मार्ग नहीं छोड़ता।

(ख) नीचे वृक्ष की छाया में बुद्धन लेटा हुआ था।

(ग) गोकुल की उम्र 15-16 वर्ष थी।

(घ) गोकुल सवेरे थोड़े-से चने खाकर काम पर गया था।

(ङ) सवेरे घर से निकलते ही गोकुल को सामने खाली घड़ा मिला।

(च) गोकुल ने बटवा खोलकर रुपए गिने।

लिखित

1. (क) (स), (ख) (ब), (ग) (अ), (घ) (द), (ङ) (स), (च) (ब)

2. (क) सवेरे घर से निकलते समय गोकुल के पैर इसलिए ढीले पड़ गए क्योंकि उसके सामने खाली घड़ा आ गया था, जो कि एक अपशकुन होता है।

(ख) बुद्धन पहले स्वस्थ व्यक्ति था परंतु पक्षाघात ने उसे निष्क्रिय बना दिया था। वह सच्चाई और ईमानदारी पर विश्वास करता है और यही शिक्षा अपने पुत्र को भी देता है। वह उधार माँगने को भीख माँगने के समान समझता है। वह किसी भी विपत्ति के समय अपनी नीयत खराब न करने का दृढ़निश्चय रखता है। इस प्रकार बुद्धन एक ईमानदार, सच्चा, स्वाभिमानी, मुसीबत में भी विचलित न होने वाला दृढ़निश्चयी व्यक्ति है।

(ग) गोकुल को रास्ते में पड़े मिले बटुए में बयालीस रुपए, एक अठन्नी, एक घिसी हुई बेकाम दुअन्नी, दस या बारह आने पैसे, एक कागज तथा एक चाँदी का छल्ला मिला।

(घ) बुद्धन ने अपने बेटे गोकुल को सीख दी कि— जिस तरह चातक अपने प्राण देकर भी मेघ के सिवा किसी दूसरे का जल न लेने का व्रत नहीं तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेक न छोड़ना और चाहे जितनी बड़ी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।

(ङ) भूखे बुद्धन को तृप्ति का अनुभव इसलिए हुआ क्योंकि गोकुल की महतो को ईमानदारी से बटुआ लौटाने की बात सुनकर, अपने बेटे के इस काम से उसकी आत्मा तृप्त हो गई थी।

(च) महतो को अपना बटुआ मिलने पर उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके शरीर से निकले हुए प्राण फिर वापस आ गए हैं।

3. (क) बुद्धन का आधा शरीर पक्षाघात के कारण निष्क्रिय, निर्जीव था और आधा शरीर सक्रिय था, जिसे देखकर ऐसा लगता था मानो जीवन और मृत्यु ने उसके शरीर को आपस में आधा-आधा बाँट लिया हो।

(ख) मनुष्य के सुख के दिन बहुत जल्दी बीत जाते हैं, लेकिन दुख के समय वही दिन भयंकर गर्मियों के लम्बे दिनों की भाँति काटे नहीं कटते।

(ग) बुद्धन के घर की दीवारें जर्जर अवस्था में थीं, परंतु उनमें रोशनदान न थे; लेकिन उनमें पड़ी दरारों को देखकर लगता था कि वे अपनी रोशनदान की कमी को इन दरारों से पूरा करना चाह रही हैं अर्थात् उनमें बहुत बड़ी-बड़ी दरारें पड़ी हुई थीं।

(घ) महतो ने जब अपना बटुआ टटोलने के लिए अपनी जेब पर हाथ रखा तो बटुआ वहाँ नहीं था। यह महसूस करते ही वह ऐसे जड़वत् हो गए मानो उनके हृदय ने ही धड़कना बंद कर दिया हो।

(ङ) जब गोकुल से महतो को बटुआ दिखाकर उनसे पूछा कि यह तुम्हारा है, तो महतो ने जीवन का अनुभव किया, लेकिन जब उन्हें अपनी जेब में बटुआ नहीं मिला था तो वे मृत्यु का अनुभव कर रहे थे। इस प्रकार उनके मन को जीवन और मृत्यु की लड़ाई महसूस हो रही थी।

4. (क) -5 (ख) -3 (ग) -2 (घ) -1
(ङ) -4

भाषा बोध

गुणवाचक विशेषण	-	काला, सुंदर
परिमाणवाचक विशेषण	-	एक किलो, दो लीटर
संख्यावाचक विशेषण	-	चार, एक दर्जन
सार्वनामिक विशेषण	-	कौन, किसने
व्यक्तिवाचक विशेषण	-	बनारसी, लखनवी

19 - गंगा की महिमा

पाठ बोध

मौखिक

(क) भारत की सर्वप्रमुख नदी गंगा है।

(ख) सगर अपने को चक्रवर्ती राजा घोषित करना चाहते थे।

(ग) इंद्र ने घोड़े को कपिल ऋषि के आश्रम में ले जाकर बाँध दिया।

(घ) कपिल ऋषि से अपने पूर्वजों को शापमुक्त करने तथा जीवनदान देने की प्रार्थना राजा अंशुमान ने की।

(ङ) गंगा की तीसरी धारा का नाम हुगली है।

(च) मैगस्थनीज ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी में भारत आया था।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (स), (ग) (अ), (घ) (स), (ङ) (द)

2. (क) इंद्र को भय हुआ कि पृथ्वी पर एकछत्र राज्य स्थापित करने के पश्चात् कदाचित् राजा सगर स्वर्ग पर भी अपना अधिकार जमाना चाहें। उसे अपना राज्य खोने का भय होने लगा, इसलिए उसने यज्ञ के अश्व को चुराया। इससे उसके चरित्र की धोखा देने की दुर्बलता का आभास होता है।

(ख) अंशुमान, राजा सगर के पौत्र (पोते) थे। कपिल ऋषि ने अंशुमान के पूर्वजों की मुक्ति का उपाय इस प्रकार बताया— यदि तुम गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाकर यहाँ तक (कपिल ऋषि के आश्रम तक) ला सको तो तुम्हारे पूर्वज शापमुक्त हो जाएँगे।

(ग) भगीरथ जब गंगा को कैलाश पर्वत से सुंदरवन की ओर ले जाने लगे तो मार्ग में जह्नु ऋषि का आश्रम आ गया। उन्होंने गंगा का प्रवाह रोक दिया। जब भगीरथ ने उन्हें अपना उद्देश्य और सब बात बताई तथा प्रार्थना की कि वे गंगा को मुक्त कर दें, तो जह्नु ऋषि ने गंगा को पुन: प्रवाहमान कर दिया। इसीलिए गंगा का एक नाम 'जाह्नवी' पड़ गया।

(घ) सगर अपने को चक्रवर्ती राजा घोषित करना चाहते थे। उसके लिए अश्वमेध यज्ञ करना आवश्यक था। अत: सगर ने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया।

(ङ) गंगा भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है, इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) यह विश्वास किया जाता है कि गंगा मुक्तिदायिनी है, गंगा का जल पवित्र है तथा मृत व्यक्ति की भस्म गंगा में प्रवाहित करने से उस व्यक्ति की मुक्ति हो जाती है।

(ii) गंगा के किनारे अनेक तीर्थ स्थान बन गए हैं, जो महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल भी हैं।

(iii) गंगा के किनारे बड़े-बड़े मेले और कुंभ जैसे महाविशाल मेले लगते हैं, जो ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना के प्रसार में सहायक होते हैं।

(iv) गंगा देश में परिवहन सुविधा भी प्रदान करती है।

अपने उपर्युक्त महान गुणों के कारण ही गंगा भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है।

(च) गोमुख, गंगोत्री, उत्तरकाशी, रुद्र प्रयाग, देव प्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, कानपुर, प्रयाग, वाराणसी, पटना, राजशाही, मुर्शिदाबाद, कोलकाता, गंगासागर, बंगाल की खाड़ी।

भाषा बोध

1. (क) राजा ने अपने सभी पुत्रों को बुलाया।

(ख) अंशुमान में गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने की सामर्थ्य नहीं थी।

(ग) वहाँ एक महाप्रतापी राजा राज्य करता था।

(घ) कपिल ऋषि ने सगर-पुत्रों को भस्म होने का शाप दे दिया।

(ङ) हमने अनेक बार गंगा-स्नान किया है।

2. **गंगा** - सुरसरि, भागीरथी, जाह्नवी।

राजा - शासक, सम्राट, बादशाह।

भारत - भारतवर्ष, हिंदुस्तान, आर्यावर्त।

घोड़ा - अश्व, घोटक, हय।

3. (क) प्राचीन काल में प्रत्येक राजा अन्य राजाओं पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था।

(ख) यमुना का उद्गम यमुनोत्री से होता है।

(ग) पहाड़ी क्षेत्रों में प्रपातों के दृश्य बड़े सुहावने होते हैं।

(घ) अचानक बस्ती में कोलाहल सुनकर लोग घरों से निकल पड़े।

(ङ) गाँवों में चौपाल पर बैठकर लोग अपना-अपना वृत्तांत सुनाया करते हैं।

20 - बैताल की कथा

पाठ बोध

मौखिक

(क) कपड़े के व्यापारी का नाम धरमचंद था।

(ख) नए साहब कपड़ा खरीदने के लिए धरमचंद की दुकान में घुस गए।

(ग) साहब को कुर्सी पर बैठाकर धरमचंद ने पान की तश्तरी आगे की।

(घ) साहब धरमचंद को रास्ते से हटाकर दुकान से बाहर निकल गए।

(ङ) धरमचंद ने साहब को देने के लिए चार कमीजों का कपड़ा फाड़ा।

(च) अंत में धरमचंद के जीतने की खबर फैल गई।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (द), (ङ) (अ), (च) (द)

2. (क) सेठ धरमचंद अपने को सच्चा और ईमानदार दिखाने के लिए सुबह-शाम मंदिर जाता था और वहाँ एक घंटा प्रार्थना किया करता था। ग्राहक से बात करते हुए भी वह 'ईमान' कहता जाता था।

(ख) लेखक यहाँ व्यापारी धरमचंद और सरकारी अधिकारी की बात कर रहा है।

(ग) कपड़े का दाम सुनकर साहब इसलिए परेशान हो गए क्योंकि उन्हें कपड़ा महँगा लग रहा था और उसे खरीदने की सामर्थ्य उनमें नहीं थी।

(घ) धरमचंद ने प्रतिज्ञा की कि एक महीने के भीतर साहब को उस कपड़े की कमीज पहनाकर रहूँगा।

(ङ) धरमचंद के मुकदमा जीतने पर लोगों को इसलिए आश्चर्य हुआ क्योंकि धरमचंद बिना बेईमानी किए वह मुकदमा नहीं जीत सकता था जबकि उसकी कोई बेईमानी सामने नहीं आई थी।

(च) परसाई जी एक महान व्यंग्यकार थे। कहानी के अंत में विक्रम के इस कथन के रूप में उन्होंने गहन व्यंग्य किया है। यह जानकर भी कि बेईमानी हो रही है, की जा रही है— लोग अनजान और मूक बने रहते हैं और बेईमानी में सम्मिलित होते हुए भी सब एक-दूसरे को ईमानदार बनकर दिखाते हैं। इस प्रकार ईमान किसी का नहीं जाता। अत: व्यंग्य की दृष्टि से विक्रम का यह उत्तर ठीक है।

भाषा बोध

1. परम + आत्मा = परमात्मा — पाप + आत्मा = पापात्मा
देव + आत्मा = देवात्मा — दीन + आत्मा = दीनात्मा
विश्व + आत्मा = विश्वात्मा — जीव + आत्मा = जीवात्मा
प्रेत + आत्मा = प्रेतात्मा — पुण्य + आत्मा = पुण्यात्मा

2. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (ब)

21 -राम और सुग्रीव की मित्रता

पाठ बोध

मौखिक

(क) बालि के भय से सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था।

(ख) श्रीराम चौदह वर्ष के वनवास के लिए निकले थे।

(ग) श्रीराम ने एक दिव्य बाण द्वारा सातों वृक्षों को काट गिराया।

(घ) श्रीराम ने सुग्रीव के गले में नागपुष्पी की लता, माला की तरह पहना दी।

(ङ) श्रीराम ने लंका-युद्ध में अपनी विजय का श्रेय सुग्रीव को दिया।

लिखित

1. (क) (ब), (ख) (अ), (ग) (स), (घ) (अ), (ङ) (द)

2. (क) मतंग ऋषि के शाप के कारण बालि ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जाता था।

(ख) श्रीराम को बालि की बातों पर इसलिए रोष आ गया क्योंकि वह धर्म की बातें कर रहा था जबकि स्वयं अधर्म की राह पर चल रहा था।

(ग) जब श्रीराम ने एक दिव्य बाण द्वारा सातों वृक्षों को काट गिराया तो सुग्रीव को भरोसा हो गया कि वे बालि का वध कर सकते हैं।

(घ) सुग्रीव तथा बालि के प्रथम मल्लयुद्ध पर श्रीराम ने बालि पर इसलिए बाण नहीं चलाया क्योंकि उन्हें दोनों भाई एक-सी शक्त-सूरत के दिखाई दे रहे थे। यदि गलती से सुग्रीव को बाण लग जाता तो अनर्थ हो जाता।

(ङ) वर्षा ऋतु बीत जाने पर श्रीराम सुग्रीव से इसलिए अप्रसन्न हो गए थे क्योंकि वर्षाकाल बीत जाने पर उसने सीता जी की खोज कराने को कहा था परंतु उस ओर उसका कोई ध्यान नहीं था और वह श्रीराम से मिलने तक नहीं आया था।

(च) तारा ने बालि को सुग्रीव से लड़ने के लिए इसलिए मना किया क्योंकि उसने अनुमान लगा लिया कि अभी-अभी हारकर भागा सुग्रीव दोबारा लड़ने के लिए अवश्य किसी महान योद्धा का सहारा पाकर आया है। अत: उसने बालि को सुग्रीव से लड़ने से रोका।

(छ) सुग्रीव ने अपने मित्र श्रीराम की इस प्रकार सहायता की— उसने सीता जी की खोज कराई। अपने मित्र के लिए उसने रावण जैसे महाबली शत्रु के विरुद्ध अपनी सेना को युद्ध में उतार दिया। उसने समुद्र के ऊपर पुल का निर्माण कराया, जिसके माध्यम से सेना सहित समुद्र पार करके उसने लंका पर आक्रमण कर दिया और लंका युद्ध में श्रीराम को विजय दिलवाई।

3. (क) हनुमान ने राम-लक्ष्मण से। (ख) सुग्रीव ने श्रीराम से।
(ग) श्रीराम ने सुग्रीव से। (घ) बालि ने तारा से।
(ङ) बालि ने सुग्रीव से।

भाषा बोध

1. **राम** - राजीवलोचन, कमलनयन, दशरथनंदन।
समुद्र - सागर, रत्नाकर, नदीश।
पर्वत - पहाड़, नग, गिरि।
वानर - कपि, शाखामृग, बंदर।
हनुमान - अंजनि-पुत्र, वायुपुत्र, मारुति।
राक्षस - दैत्य, दानव, निशाचर।

2. बलवान - बलहीन — अपराधी - निरपराध
मित्रता - शत्रुता — शिष्टता - अशिष्टता
शत्रु - मित्र — उपकार - अपकार
शाप - वरदान — समाप्त - प्रारंभ
अनर्थ - अर्थ — आकाश - पाताल

3. (क) महिला दिवस के अवसर पर साहसी महिलाओं को सम्मानित किया गया।

(ख) कभी भी किसी को अपमानित नहीं करना चाहिए।
(ग) हमेशा बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
(घ) अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को कर्तव्य-पालन का भी ध्यान रखना चाहिए।
(ङ) अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।